मौलवी मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्दशहरी (रह)

ख़ुदा की जन्नत

मौलवी मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

ख़ुदा की जन्नत

मौलवी मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

प्रकाशनः 2010

ISBN 81-7101-481-X

TP-054-09

Published by
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT (P) LTD.
168/2, Jha House, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110 013 (India)
Tel.: 2695 6832-34 Fax: +91-11-2694 2787
Email: **sales@idara.in info@idara.com**
Visit us at: **www.idara.com**

Typesetted at: **DTP Division**
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT (P) LTD.
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

अपनी बात

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम।

जन्नत, मरने के बाद की तमाम मंज़िलों में से आख़िरी मंज़िल है। जो इसमें दाख़िल हो जाएगा, फिर उसी में रहेगा और हमेशा जन्नत की नित (रोज़ाना) नयी नेमतों से मालामाल होता रहेगा। आप ने बर्ज़ख़ के हालात भी पढ़े और जहन्नम के भी और क़ियामत के भयानक मंज़र भी आप के मुताले (अध्ययन) में आए। अब अगले सफ़्हों में जन्नत की सैर कीजिए जो मुत्तक़ियों और मोमिनों के लिए तैयार की गयी है।

सच यह है कि लेखक ने ख़ुदा के इंकार के इस फ़ित्ने भरे दौर में हज़ारों भटके हुए लोगों को हिदायत व सच्चाई का सबक़ दिया है। अब चूंकि हिंदी का ज़ोर बराबर बढ़ता जा रहा है, इसलिए हिन्दी जानने वालों तक भी यह सीधी और सच्ची बात पहुंचे। इस ज़रूरत को पूरा करने के लिए इसे हिंदी में छापा जा रहा है।

अल्लाह तआला इस कोशिश को कामयाब फ़रमाये और दुनिया व आख़िरत की सुर्ख़रूई का इस किताब को ज़रिया बनाये। (आमीन)

ख़ुदा की जन्नत

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जन्नत किस चीज़ से बनी है?

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ का ब्यान है कि मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के (रसूल)! जन्नत किस चीज़ से बनी है? इसके जवाब में आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि एक ईंट सोने की है और एक ईंट चांदी की है और उसका मसाला (जिस से ईंटें जोड़ी गयी है) तेज़ ख़ुश्बूदार मुश्क है; उसकी कंकरियां मोती और याक़ूत हैं और उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान है। जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा; हमेशा नेमत में रहेगा और (कभी किसी चीज़ का) मोहताज न होगा; हमेशा (ज़िंदा) रहेगा; और मौत न आएगी; न जन्नतियों के कपड़े बोसीदा (फटे-पुराने) होंगे; न उनकी जवानी ख़त्म होगी।

—अहमद व तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नत का फैलाव

सूरः हदीद में इर्शाद है :

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ

साबिक़ू इला मग़्फ़िरतिम मिर्रब्बिकुम व जन्नतिन अर्ज़ुहा क

अर्ज़ुस्समाइ वल अर्ज़ि उइद्दत लिल्लज़ी न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिह। *(अलहदीद)*

'अपने परवरदिगार की मग़्फ़िरत की तरफ़ और जन्नत की तरफ़ दौड़ो जिसका फैलाव आसमान व ज़मीन के फैलाव के बराबर है, उन लोगों के लिए तैयार की गयी है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं'।

जन्नत बहुत बड़ी जगह है। इसके फैलाव का अन्दाज़ा छोटे दर्जे के जन्नती को जो कुछ मिलेगा; उसके फैलाव को सामने रखकर लगाया जा सकता है। कुछ रिवायतों में है कि छोटे दर्जे के जन्नती को जो जगह मिलेगी; पूरी दुनिया और दुनिया जैसी दस गुनी जगह के बराबर होगी। यह सब सामने के लोगों के समझाने के लिए है।

सूरः हदीद में है : आम इंसानों के ज़ेहन और समझ के क़रीब लाने के लिए जन्नत के फैलाव को आसमान व ज़मीन के फैलाव के बराबर बताया गया है। और सूरः आले इमरान में **'अर्ज़ुहस्समावातु वल अर्ज़'**, फ़रमाया है जिसमें समा (आसमान की जमा इस्तेमाल की गयी है यानी जन्नत का फैलाव तमाम आसमानों और ज़मीन के बराबर है)।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूल अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं। सारी दुनिया अगर उनमें से एक में जमा हो जाए तो सब समा जाएं।[1]

जन्नत के दरवाज़े

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि रसुलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से जो कोई भी मुसलमान वुज़ू करे और अच्छी तरह पानी पहुंचाये (और) फिर (वुज़ू के बाद) यह कहे :

---

1. इसकी और ज़्यदा तश्रीह और इसके बारे में सवाल व जवाब कम दर्जे के जन्नती के ज़िक्र में देखें।

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

अश्हदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी क लहू व अश्हदु अन्न न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह।

तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएंगे, जिससे चाहे दाख़िल हो जाए। —मुस्लिम शरीफ़

इस हदीस से जन्नत के आठ दरवाज़े मालूम हुए।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने अल्लाह के रास्ते में (यानी अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए) एक क़िस्म की दो चीज़ें (जैसे दो दिरहम, दो दीनार, दो रूपये, दो कपड़े) ख़र्च किए तो जन्नत में उसको बुलाया जाएगा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! यह बेहतर है। जो शख़्स नमाज़ वाला[1] था, उसे नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो शख़्स जिहाद वाला था, उसे जिहाद के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो शख़्स रोज़े वाला था, वह बाबुर्रैयान से बुलाया जायेगा। यह सुनकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ﷺ ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, सब दरवाज़ों से किसी को पुकारा जाए, इसकी ज़रूरत तो है नहीं (क्योंकि असल मक़्सद यानी जन्नत में दाख़िला तो एक दरवाज़े से दाख़िल होने में हासिल हो जाता है, लेकिन फिर भी पूछता हूं कि) क्या कोई ऐसा भी होगा जिसे (इ़ज़्ज़त देने के लिए) तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाये।

आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि हां! (ऐसे भी लोग होंगे) और मैं उम्मीद करता हूं कि तुम उन्हीं में से होगे। —तिर्मिज़ी शरीफ़

1. यानी वह शख़्स जो फ़र्ज़ों को अदा करने के साथ-साथ नमाज़ (फ़र्ज़, नफ़्ल और सुन्नत) का ख़ास ध्यान और एहतमाम रखता था, उसे नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, यह मतलब नहीं है कि सिर्फ़ नमाज़ पढ़ता था और बाक़ी फ़र्ज़ छोड़े हुए थे। इसी तरह 'जिहाद वाले' और 'सदक़े वाले' और 'रोज़ों वाले' का मतलब समझ लो।

साहिबे फ़त्हुलबारी लिखते हैं कि इस हदीस में चार दरवाज़ों का इल्म हुआ।

1) **बाबुस्सलात** (नमाज़ का दरवाज़ा),
2) **बाबुस्सद्क़ा** (सद्क़ा का दरवाज़ा),
3) **बाबुल जिहाद** (जिहाद का दरवाज़ा),
4) **बाबुर्रैयान** (रोजा का दरवाजा),

इसके बाद लिखते हैं कि एक बाबुल (हज्ज) यक़ीनी तौर पर होगा और एक दरवाज़ा उन लोगों के लिए होगा जो गुस्से को पी जाते हैं, जिसके बारे में मुस्नद अहमद में एक हदीस आयी है और एक दरवाज़ा (**बाबुल ऐमन**) तवक्कुल (अल्लाह पर पूरा भरोसा) करने वालों के लिए होगा, जो बग़ैर हिसाब और बग़ैर अ़ज़ाब उस दरवाज़े से दाख़िल होंगे। और एक **बाबुज़्ज़िक्र** (ज़िक्र यानी अल्लाह की याद का दरवाज़ा) होगा जिसकी तरफ़ तिर्मिज़ी (की एक हदीस) में इशारा है और यह भी हो सकता है कि बाबुज़्ज़िक्र न हो, बल्कि **बाबुल इल्म** हो। (ख़ुदा ही बेहतर जानता है)

—फ़त्हुलबारी

फ़िर लिखते हैं कि (यह भी) हो सकता है कि हज़रत अबूबक्र ﷺ की बड़ाई में जिन-जिन ख़ूबियों का ज़िक्र है, ये जन्नत के असल (शुरू के बड़े) फाटकों के अलावा अंदर के दरवाज़े हों, क्योंकि नेक अमल आठ से बहुत ज़्यादा है। हर (नेक अमल) का अगर एक दरवाज़ा हो तो बहुत दरवाज़े होने चाहिएं। इसलिए ज़्यादा सही अन्दाज़ा यही होता है कि नेक अ़मलों के दरवाज़े अंदरूनी दरवाज़े हों।

एक बार बसरा के अमीर (गवर्नर) हज़रत उत्बा बिन ग़ज़्वान ﷺ ने ख़ुत्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा तुम ऐसी दुनिया की तरफ़ कूच करने वाले हो, जहां से और कहीं जाना न होगा इसलिए तुम यहां से बेहतरीन अ़मल लेकर रवाना होना। फिर फ़रमाया कि हमको यह बताया गया है कि जन्नत के किवाड़ों में से दो किवाड़ के दर्मियान चालीस साल के सफ़र की दूरी है और यह यक़ीनी बात है कि एक दिन ऐसा आयेगा कि

दाख़िल होने वालों की भीड़ की वजह से इतना बड़ा दरवाज़ा (भी) तंग पड़ जाएगा।
—मुस्लिम

बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नत के किवाड़ों में से दो किवाड़ों के दर्मियान इतनी दूरी है, जितना शहर मक्का और हिज्र के दर्मियान है।
—अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

साहिबे मज्म्मउल बह्हार लिखते हैं कि हिज्र बहरैन की राजधानी है।

दोनों हदीसों से जन्नत के दरवाज़ों का फैलाव और चौड़ाई मालूम हुई। पहली हदीस में दोनों किवाड़ों के दर्मियान की दूरी चालीस साल की दूरी बतायी जाती है और दूसरी हदीस में मक्का और हिज्र की दूरी बतायी है। मौजूद लोगों की समझ को क़रीब लाने के लिए उन्हीं के मुहावरे और बोल-चाल में कभी इस तरह फ़रमाया और कभी उस तरह समझाया। इससे यह बात पक्की है कि दरवाज़ों का फैलाव बहुत ही ज़्यादा है। जैसा मकान है, वैसे ही दरवाज़े हैं।

हज़रत सह्ल बिन साद ؓ का ब्यान है कि रसूल अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि ज़रूर ही ऐसा होगा कि मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार या (फ़रमाया) सात लाख आदमी आपस में एक दूसरे को पकड़े हुये दाख़िल होंगे। उनकी (लाइन) का पहला शख़्स दाख़िल न होगा, जब तक कि उनका आख़िरी शख़्स न दाख़िल हो जाये (मतलब यह कि एक ही वक़्त में उनकी पूरी लाइन की लाइन दाख़िल होगी) फिर फ़रमाया कि उनके चेहरे इस तरह चमकते होंगे जैसे चौदहवीं का चांद होता है।

—बुख़ारी व मुस्लिम (तर्ग़ीब के हवाले से)

जन्नत के दाख़िल होने वाले लोगों की दो जमाअ़तें

सूरः वाक़िअः में तीन जमाअ़तों को ज़िक्र फ़रमाया है यानी यह बताया है कि क़ियामत के दिन तीन जमाअ़तों में लोग बंट जाएंगे।

1) अस्हाबुल यमीन या अस्हाबुल मैमनः (दाहिने हाथ वाले),

2) मुक़र्रबीन (ख़ुदा के ख़ास क़रीबी बन्दे यानी नबी और सच्चे वली, शहीद और तक़्वा वाले लोग), और

3) अस्हाबुश्शिमाल या अस्हाबुल मश्अमः (बायें हाथ वाले), जिनके बायें हाथ में आमाल नामे दिये जाएंगे।

पहले दो गिरोह तो जन्नती होंगे लेकिन उनके दर्जों में फ़र्क़ होगा। '**मुक़र्रबीन**' ख़ास बड़े दर्जों वाले होंगे और 'अस्हाबुल यमीन' यानी आम मोमिन उनसे कम दर्जे में होंगे और तीसरा गिरोह यानी 'अस्हाबुश्शिमाल' दोज़ख़ियों का गिरोह होगा।

पहले अल्लाह तआला ने 'मुक़र्रबीन' के बदले का ज़िक्र फ़रमाया है और यह बताया है कि उनमें का एक बड़ा गिरोह अपने लोगों में से होगा और एक छोटी-सी जमाअत पिछले लोगों में से होगी। ये 'अगले लोग' कौन हैं और 'पिछले लोगों' का मतलब क्या है? इसके बारे में साहिबे 'ब्यानुल क़ुरआन' लिखते हैं कि अगलों से मतलब पहले वाले लोग हैं यानी हज़रत आदम (عليه السلام) से लेकर हुज़ूर अक़दस ﷺ तक और पिछलों से मुराद हुज़ूर अक़दस ﷺ के उम्मती (यानी आपके ज़माने से लेकर क़ियामत तक आने वाले मुसलमान) मुराद हैं।

—दुर्र

फिर लिखते हैं :

शुरू के लोगों में भलाई में आने वालों की ज़्यादती और बाद के लोगों में आगे जाने वालों की कमी की वजह यह है कि ख़ास लोग हर ज़माने में कम होते हैं और शुरू के लोगों का ज़माना बेशक उम्मते मुहम्मदिया के ज़माने से बहुत लंबा है, पस जितने ख़ास लोग उस लम्बे ज़माने में हुए हैं, जिनमें लाख या दो लाख या कम व ज़्यादा नबी भी हैं। इसलिए होना भी यही चाहिए कि छोटी मुद्दत में उनसे कम ही होंगे।

मुफ़स्सिर (तफ़्सीर लिखने वाले) इब्ने कसीर ने अगलों और पिछलों के बारे में दूसरा क़ौल नक़ल फ़रमाया है।

अब क़रीबी लोगों का बदला मालूम कीजिए। ख़ुदा का इर्शाद है :

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۝ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۝ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۝ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۝ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۝ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ۝ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۝

वस्साबिक़ूनस्साबिक़ून। उलाइकल मुक़र्रबून। फ़ी जन्ननातिन्नईम। सुल्लतुम मिनल अव्वलीन। व क़लीलुम मिनल आख़िरीन। अ़ला सुरुरिम मौज़ूनतिम्मुत्तकिई न अ़लैहा मु त क़ाबिलीन यतूफ़ु। अ़लैहिम विल्दानुम्मुख़ल्लदून। बिअक्वाबिंव्व अबा री क़ व कअ्सिम मिम् मईनिल्ला युसद्दऊ न अन्हा व ला युन्ज़िफ़ून। व फ़ाकिहतिम मिम्मा य त ख़ैयरून। व लह्मि तैरिम्मिम्मा यश्हतहून। व हूरुन ईन। क अम्सालिल लुअ्लुइल मकनून। जज़ाअ्म बिमा कानू यअ्मलून। ला यस्मऊ न फ़ीहा लग्वौं वला तअ्सीमा। इल्ला क़ीलन सलामन सलामा।

'और सब्क़त ले जाने वाले, वे तो सब्क़त ले जाने वाले हैं। वे (ख़ुदा से ख़ास) क़ुर्ब रखने वाले हैं। ये लोग आराम के बाग़ों में होंगे। उनका एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा और छोटी-सी जमाअ़त उनमें पिछले लोगों में से होगी। वे लोग (सोने के तारों से) बने हुए तख़्तों पर तकिया लगाये आमने-सामने बैठे होंगे। उनके पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे। ये चीज़ें लेकर आया जाया करेंगे। आबख़ोरे और आफ़्ताबे और ऐसी शराब का जाम जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा। न इससे उनको सरदर्द होगा और न अक़्ल में फ़ुतूर आएगा और मेवे, जिनको वे पसन्द करेंगे और परिंदों का गोश्त जो उनको पसन्द हो और उनके लिए बड़ी आंखों वाली हूरें होंगी जैसे छिपाकर रखा हुआ मोती। यह उनके अ़मल के बदले में

मिलेगा। वहां न बक-बक सुनेंगे और न कोई और बेहूदा बात। बस सलाम ही सलाम की आवाज़ आयेगी।'

इसके बाद 'अस्हाबुल यमीन' का ज़िक्र फ़रमाते हुए इर्शाद है :

وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ○ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ○ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ○ وَّطَلْحٍ
مَّنْضُوْدٍ○ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ○ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ لَّا مَقْطُوْعَةٍ
وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ○ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً فَجَعَلْنٰهُنَّ○ اَبْكَارًا
عُرُبًا اَتْرَابًا لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ، ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ○

व अस्हाबुल यमीनि मा अस्हाबुल यमीन। फ़ी सिद्रिम्मख़्ज़ू दिंव्व तल्हिम मंज़ू दिंव्व ज़िल्लिम मम्दूदिंव्व माइम मस्कूबिंव्व फ़ाकिहतिन कसीरतिल ला मक़्तूअतिंव्व ला मम्नूअतिंव्व फ़ुरुशिम मर्फ़ूअः। इन्ना अन्शानाहुन्न न इन्शाअ्। फ़ जअ़लन हुन्न न अब्कारा। उरुबन अत्राबल्लि अस्हाबिल यमीन। सुल्लतुम मिनल अव्वलीन। व सुल्लतुम मिनल आख़िरीन।

'और जो दाहिने हाथ वाले हैं, वे दाहिने हाथ वाले कैसे हैं। वे उन बाग़ों में होंगे, जहां बेकांटे की बेरियां होंगी और तह-ब-तह केले होंगे और लम्बा-लम्बा साया होगा और चलता हुआ पानी होगा और ख़ूब ज़्यादा मेवे होंगे, जो ख़त्म न होंगे और न उनकी रोक होगी और ऊंचे-ऊंचे बिछौने होंगे। हमने इन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है कि वे कुंवारियां हैं। शौहरों के लिए प्यारी हैं और उनकी हमउम्र हैं। ये सब कुछ 'अस्हाबुल यमीन' के लिए है, उनका एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा और एक बड़ा गिरोह पिछले लोगों में से होगा।'

इसके बाद क़ुरआन शरीफ़ में **'अस्हाबुश्शिमाल'** (यानी दोज़ख़ वालों) का और उनकी सज़ा का ज़िक्र है।

फ़ायदा : मुक़र्रिबीन (क़रीबी लोगों) के बदले में आराम के उन सामानों के ज़्यादा ज़िक्र किया गया है जो शहर वालों को ज़्यादा पसन्द हैं

और 'अस्हाबुल यमीन' के बदले में आराम के उन सामानों का ज़्यादा ज़िक्र है, जो देहात वालों को ज़्यादा पसन्द है। पस इशारा इस तरफ़ हो गया कि उनमें इतना फ़र्क़ हो, जैसा शहर वालों और गांव वालों में होता है। —ब्यानुल क़ुरआन (रूहुलमआनी से)

यानी यह मतलब नहीं कि मुक़र्रिबीन के बदले में जिन नेमतों का ज़िक्र है, उनसे 'अस्हाबुल यमीन' महरूम रहेंगे और 'अस्हाबुल यमीन' के बदले में जिन चीज़ों का ज़िक्र है, वे 'मुक़र्रिबीन के लिए न होंगी, क्योंकि नेमतों में तो सभी शरीक होंगे और विल्दान और ग़िल्मान[1] और शराब का जाम, फल, मेवे वग़ैरह सभी को मिलेंगे। हां, मगर 'मुक़र्रिबीन' और 'अस्हाबुल यमीन' के दर्जे और रुत्बे में अलग-अलग तरीक़ों में फ़र्क़ होगा। जिसकी तरफ़ ब्यान के अन्दाज़ में इशारा फ़रमाया गया है।

दूसरा फ़ायदा:— आ़म जन्नती मोमिनों को 'अस्हाबुल यमीन' फ़रमाया है, क्योंकि उनके दाहिने हाथ में आ़मालनामा दिया जाएगा और चाहे यह मतलब 'मुक़र्रिबीन' के लिए भी हो, लेकिन आ़म मोमिनों को ख़ास तौर से इस नाम से ज़िक्र करने में इशारा है कि उनमें 'अस्हाबुल यमीन' होने की ख़ूबी 'ख़ास नज़दीकी' की नहीं पायी जाती।

—ब्यानुल क़ुरआन

जन्नत में इज़्ज़त के साथ दाख़िला और फ़रिश्तों की तरफ़ से सलाम और मुबारकबाद, साथ ही अमन व सलामती के साथ हमेशा-हमेशा के लिए ठहरने का सलाम।

सूरः हिज्र में फ़रमाया :

إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ○ اُدْخُلُوْهَا بِسَلَامٍ اٰمِنِيْنَ○

इन्नल मुत्तक़ी न फ़ी जन्नातिंव्व उयून। उद्ख़ुलूहा बिसलामिन आमिनीन।

---

1. जन्नती लड़के और सेवा करने वाले

'बिला शुब्हा ख़ुदा से डरने वाले बाग़ों और चश्मों में होंगे। उनसे कहा जाएगा कि तुम उनमें सलामती और अम्न व अमान के साथ दाख़िल हो जाओ।'

सूरः ज़ुमर में इर्शाद है :

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ

हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत अब्वाबुहा व क़ाल लहुम ख़ ज़ न तुहा सलामुन अ़लैकुम तिब्तुम फ़द्ख़ुलूहा ख़ालिदीन।

'यहां तक कि जब वह जन्नत में क़ियाम करने के लिए पूरी इज़्ज़त के साथ दाख़िल किया जाएगा। उनके स्वागत के लिए पहले से दरवाज़े खुले होंगे और जन्नत के हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते सलाम करेंगे और आराम की ज़िंदगी की मुबारकबादी देंगे और यह सुना देंगे कि आप लोग ऐसी जगह ठहर रहे हैं जहां अमन व आमान व सलामती ही सलामती है। यहां हमेशा और चैन के साथ रहेंगे। न डर होगा, न किसी तरह की घबराहट होगी। रंज व ग़म, दुखन, घुटन और थकन का नाम न होगा।

दाख़िले के बाद मुबारकबादी

सूरः रअ़द में इर्शाद है :

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ ○ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۙ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ○ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ○

वल्लज़ी न सबरुब्तिग़ा अ वज्हि रब्बिहिम व अक़ामुस्सला त

अन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम सिर्रौं व अ़लानियतौं व यद्रऊ न बिल ह स न तिस्सैयिअः। उलाइ क लहुम उक़्बद्दार। जन्नातु अ़द्निंयद् ख़ुलू न हा व मन स ल ह मिन आबाइहिम व अज़्वाजिहिम व ज़ुर्रीयातिहिम वल् मलाइकतु यद्ख़ुलू न अ़लैहिम मिन कुल्लि बाब। सलामुन अ़लैकुम बिमा सबर्तुम फ़निअ़् म उक़्बद्दार।

'और ऐसे लोग हैं (जिनका ऊपर से आयत में ज़िक्र है) कि जिन्होंने अपने रब की ख़ुशी हासिल करने के लिए सब्र किया और नमाज़ क़ायम की और यह हमने जो उनको दिया, उसमें से खुले और छिपे तरीक़े पर ख़र्च करते हैं और अच्छे सुलूक के ज़रिए बुरे सुलूक को दूर करते हैं। उनके लिए इस दुनिया में अच्छा अन्जाम है यानी हमेशा रहने की जन्नतें हैं, जिनमें वे दाख़िल होंगे और उनके मां-बाप और अज़्वाज (यानी बीवियां) और औलाद में से जो लायक़ होंगे, वे भी दाख़िल होंगे और हर दरवाज़े से उनके पास फ़रिश्ते (यों) कहने को आएंगे कि तुम पर सलाम हो इस वजह से कि तुमने दुनिया में सब्र किया, सो इस दुनिया में तुम्हारा अंजाम बहुत अच्छा है।'

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर (रह०) इस आयत की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं कि जन्नत वालों को जन्नत में दाख़िले की मुबारकबादी देने के लिए हर तरफ़ से फ़रिश्तों की जमाअ़तें सलाम करती हुई दाख़िल होंगी। उनको अल्लाह के क़रीब होने, इनाम पाने में और सुकून के घर (दारुस्सलाम) में ठहरने और नबियों और सिद्दीक़ों (सच्चों) के पड़ोस में रहने की जो बड़ाई हासिल होगी, उस पर मुबारकबादी देंगे।

जन्नत में दाख़िले पर जन्नतियों के शुक्रिए के लफ़्ज़

सूरः ज़ुमर में फ़रमाया :

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ۝

व क़ालुल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी स द क़ ना वअ़् द हू व औ र स नल अ़रज़ न त बव्वउ मिनल जन्नति हैसु नशाअ़्। फ़निअ़् म अजरुल आ़मिलीन।

'और जन्नती (जन्नत में दाख़िल होकर) कहेंगे कि सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जिसने हमसे अपना वादा सच्चा किया और हमको इस धरती का मालिक बनाया कि जन्नत में जहाँ चाहें ठहरें, सो अच्छा बदला है अ़मल करने वालों का।'

'जहाँ चाहें जन्नत में ठहरें' इसका मतलब यह है कि अल्लाह पाक ने हर जन्नती को बहुत बड़ी लंबी-चौड़ी जगह दी, जिसमें पूरा-पूरा अख़्तियार हासिल है कि जहां चाहे ठहरे। कोई रोकटोक नहीं है और कोई जगह ऐसी भी नहीं है जो ठहरने के क़ाबिल न हो और अपनी जगह से जब किसी दूसरे जन्नती से मिलने का इरादा करेंगे तो उसका भी अख़्तियार होगा।

सूरः आराफ़ में फ़रमाया :

وَنَزَعْنَا مَافِيْ صُدُوْرِهِمْ مِنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهَارُ ۚ وَقَالُوْا
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا اَنْ هَدٰنَا اللّٰهُ ۚ
لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ؕ وَنُوْدُوْا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

व नज़अ़्ना मा फ़ी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन तज्री मिन तह्तिहिमुल अन्हार। व क़ालुल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ो वमा कुन्ना लिनह्तदि य लौ ला अन हदानल्लाह। लक़द जाअत रुसुलु रब्बिना बिल हक़्क़। व नूदू अन तिल्कुमुल जन्नतु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम तअ़्मलून।

'और उनके दिलों में (जो एक दूसरे की तरफ़ से कुछ) ग़ुबार (द्वेष भाव) था, उसे हम निकाल देंगे। उनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे कहेंगे कि सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमको इस जगह तक पहुंचाया

और हमारी पहुंच न होती, अगर हम को अल्लाह तआ़ला न पहुंचाते। वाक़ई सच तो यह है कि हमारे रब के पैग़म्बर हक़ लेकर आए थे और उनको पुकार कर कहा जाएगा कि जन्नत तुमको तुम्हारे आ़माल के बदले दी गयी है।'

दाख़िले के बाद जन्नतियों का पहला नाश्ता

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन ज़मीन एक रोटी बन जाएगी जिसको जब्बार (व क़ह्हार) अपने ताक़त भरे हाथ से लेकर उल्टे-पलटेगा। जैसे तुम में से कोई शख़्स सफ़र में रोटी को उलटता-पलटता है, (उलट-पलट हमवार बनाकर) अल्लाह तआ़ला ज़मीन को जन्नत वालों की पहली मेहमानी क़रार देगा।

प्यारे नबी ﷺ ने यह फ़रमाया था कि एक यहूदी आ पहुंचा और कहने लगा, ऐ अबुल क़ासिम![1] ख़ुदा आप पर बरकत नाज़िल फ़रमाये। क्या आप को यह बताऊं कि क़ियामत के दिन जन्नतियों की पहली मेहमानी किस से होगी? आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि हां बता दे। उसने इसी तरह ब्यान किया, जिस तरह आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया था कि ज़मीन की एक रोटी बन जाएगी (जिसे जन्नत वाले सबसे पहले नाश्ते की जगह खाएंगे)। रिवायत करने वाले कहते हैं कि उस यहूदी की बात सुनकर आंहज़रत ﷺ हमारी तरफ़ देखकर इस तरह हँसे कि आपकी आख़िरी दाढ़ें ज़ाहिर हों गयीं (यह हँसना इस ख़ुशी में था कि अल्लाह तआ़ला ने जो इल्म पिछले नबियों को दिए थे मुझे भी दिए, जिनमें से कुछ चीज़ें नक़ल पर नक़ल होकर यहूदियों में मशहूर हैं)। इसके बाद उस यहूदी ने कहा, क्या आपको यह (भी) बताऊं कि जन्नतियों का सालन क्या होगा? (जिससे पहली मेहमानी की वह रोटी खाएंगे जो ज़मीन से बनी होगी)। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया (वह भी) बता दे। उस यहूदी ने कहा कि बैल होगा और मछली होगी जिसकी कलेजी के ज़्यादा हिस्से से सत्तर हज़ार आदमी खाएंगे।

---

1. अबुल क़ासिम आंहज़रत ﷺ को कहते थे। जमउल फ़वाइद (बुख़ारी व मुस्लिम)

जन्नत में खाने-पीने के लिए बेइंतिहा नेमतें होंगी। जब जन्नत में रहने लग जाएंगे, तो बराबर खाते-पीते रहेंगे। मगर सबसे पहले शुरू के मेहमान के तौर पर जो नाश्ता पेश किया जाएगा। वह ज़मीन की रोटी का होगा और उस नाश्ता के खिलाने में यह मस्लहत है कि ज़मीन में तरह-तरह के मज़े दे रखे हैं जो अलग-अलग इलाक़ों और मुल्कों में फलों, ग़ल्लों, तरकारियों और दूसरी चीज़ों में पाये जाते हैं और चूंकि किसी भी आदमी ने ज़मीन से पैदा होने वाली हर नेमत नहीं खायी है बल्कि कोई इस फल से महरूम है और किसी को वह फल नसीब नहीं हुआ है इसलिए ज़मीन की रोटी बनाकर जन्नत वालों को पहले उसके तमाम मज़े मिलाकर एक साथ चखा दिए जाएंगे, ताकि जन्नत की नेमतों को जब खाएं-पिएं तो हर आदमी का यक़ीन इस तरह का यक़ीन हो जाए कि दुनिया में जो कुछ भी मैंने या किसी दूसरे ने खाया-पिया है, वह सब जन्नत की हर नेमत के सामने कुछ भी नहीं।

फ़ायदा : यहूदी ने जो रोटी के साथ मछली और बैल का नाश्ता बताया, हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उसे कुछ नहीं फ़रमाया, जिससे मालूम हुआ कि उसने सही बात कही है। यह जो कहा कि मछली की कलेजी के बढ़े हिस्से से सत्तर हज़ार आदमी खाएंगे। इसके बारे में मुस्लिम की शरह लिखने वाले अ़ल्लामा नव्वी रहमतुल्लाहि अ़लैह लिखते हैं कि जिगर में एक टुकड़ा लटका हुआ होता है जो खाने में बेहतरीन हिस्सा है। कलेजी का ज़्यादा हिस्सा इसी को फ़रमाया है।

सवाल : ज़मीन की रोटी किस तरह खाई जा सकेगी। हम तो देखते हैं ज़मीन के ज़र्रे (कण) खाने के मिल जाते हैं तो खाया नहीं जाता और किरकिरापन ज़ाहिर हो जाता है?

जवाब : दुनिया में जितने भी ग़ल्ले, फल, मेवे, सब्ज़ियां, तरकारियां और खाने हैं, सब ज़मीन ही से निकलते हैं। जिस क़ुदरत वाले ने ज़मीन से ऐसी लज़्ज़तदार चीज़ें निकाल दीं, उसको क़ुदरत है कि

ख़ास ज़मीन ही को खाने की चीज़ बना दे और उसमें ऐसी बात भर दे, जिससे ज़ुबान भी मज़ा ले और हलक़ में भी आसानी से उतर जाए।

इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर० انه علی کل شیء قدیر ـ

जन्नतियों का जिस्म और ख़ूबसूरती

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत की है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि पहला गिरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा, उनकी शक्लें चौदहवी रात के चांद की तरह (चमकती-दमकती) होंगी ओर जो लोग उनके बाद (दूसरे नम्बर पर) दाख़िल होंगे, उनकी शक्लें बहुत ज़्यादा रौशन सितारे की तरह से (रौशन) होंगी। सब जन्नतियों के दिल एक ही दिल पर होंगे। (यानि उनके आपस में ऐसी मुहब्बत होगी जैसे जिस्म बहुत और दिल एक हो) उनमें आपस में इख़्तिलाफ़ होगा, न कपट होगा। हर एक के लिए (बड़ी आंखों वाली हूरों में से कम-से-कम) दो बीवियाँ होंगी। उनमें से हर बीवी की पिंडली का गूदा ख़ूबसूरती की वजह से (हड्डी और) गोश्त के बाहर से नज़र आएगा। ये लोग सुबह-शाम अल्लाह की तस्बीह ब्यान करेंगे। न बीमार होंगे, न नाक से रेंट आएगा और न थूकेंगे। उनके बर्तन सोने-चांदी के होंगे और उनकी कंघियां सोने की होंगी। उनकी अंगीठियों में ख़ुश्बू फैलने के लिए जो चीज़ जलेगी वह ऊद होगी और उनका पसीना मुश्क (की तरह ख़ुश्बूदार) होगा। —बुख़ारी शरीफ़

इस हदीस से जन्नतियों के हुस्न व जमाल और उनकी बीवियों की खुबसूरती का हाल मालूम हुआ। साथ ही उनकी सफ़ाई सुथराई का भी पता चला कि उनको न नाक-साफ़ करने की ज़रूरत होगी और न थूकने की ज़रूरत होगी।

दूसरी रिवायतों में यह भी है कि **'ला यबूलू न वला य त ग़व्व तू न'** (यानि जन्नती न पेशाब करेंगे, न पाख़ाने की ज़रूरत होगी)। पसीना जो

आएगा, वह गर्मी की वजह से न होगा, बल्कि खाना हज़्म हो जाने का ज़रिया होगा (जिसका ब्यान आगे आयेगा) और वह पसीना ख़ुश्बूदार और ख़ुशगवार होगा।

ऊपर की हदीस में है कि जन्नतियों की अंगीठियों में जलने वाली ऊद होगी। ज़ेहन में लाने के 'ऊद' को अगर कुल लकड़ी समझ लीजिए जिसके बुरादे से अगतबत्तियां बनती हैं। चूंकि अगर क़ीमती चीज़ है। इसलिए दूसरी लकड़ी की पतली-पतली सलाइयों पर उसका बुरादा लपेटकर अगर बत्ती बनायी जाती है। जन्नत में किसी चीज़ की कमी न होगी, इसलिए ख़ुश्बू के लिए ऊद होगा। यहां कि ऊद पर इसे न सोचें। ये अंगीठियां आग से जल रही होंगी या किसी दूसरी चीज़ से? इसके बारे में कोई तशरीह[1] नहीं देखी।

फ़ायदा : बुख़ारी शरीफ़ में है कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (عليه السلام) को पैदा फ़रमाया तो उनका क़द साठ हाथ का था और जन्नत में जो भी दाख़िल होगा, आदम (عليه السلام) की शक्ल पर साठ हाथ का होगा। —बुख़ारी शरीफ़ बाबख़ुलि क़ आदम

सवाल : इतने लंबे-लंबे आदमी भला अच्छे क्यों मालूम होंगे?

जवाब : जब सब ही एक क़द के होंगे तो किसी का क़द भी दर्मियानी क़द से बाहर मालूम न होगा और सब ही को पसंद आएगा।

दूसरा फ़ायदा :— हदीस में जो लफ़्ज़ 'बुकरतौ व अशीय्या' (सुबह व शाम) फ़रमाया, उसके मुतअल्लिक़ हदीस की शरह (टीका) लिखने वाले लिखते हैं कि इससे सच्ची सुबह व शाम मुराद नहीं हैं क्योंकि वहां न निकलना होगा, न डूबना होगा, बल्कि एक ही तरह का मंज़र होगा। रात-दिन का आना जाना न होगा। फ़त्हुलबारी में एक कमज़ोर रिवायत नक़ल की है कि अर्शे इलाही के नीचे एक परदा लटका हुआ होगा। उसका लपेट दिया जाना शाम का निशान होगा और उसका फैल जाना सुबह की

1. तफ़सील

निशानी होगी। यानि मुक़र्रर की हुई मुद्दत गुज़र जाने पर उस परदे की तस्बीह में लगे रहने के वक़्त होंगे। और अगरचे जन्नत में हर वक़्त बेअख़्तियार सांस की तरह तस्बीह जारी होगी, मगर अपने अख़्तियार से भी सुबह व शाम तस्बीह में लगे रहने को पसंद करेंगे। —हाशिया बुख़ारी

जन्नतियों के दाढ़ी न होगी और उनकी सुरमई आंखें होंगी

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि जन्नती 'अजरद और अमरद' होंगे। उनकी आंखें ऐसी ख़ूबसूरत होंगी कि (बग़ैर सुर्मा लगाये ही) सुर्मई मालूम होंगी, न उनकी जवानी ख़त्म होगी, न कपड़े पुराने होंगे। —तिर्मिज़ी

जन्नती 'अजरद व अमरद' होंगे। यानी उनके जिस्म पर बाल न होंगे और सब (मर्द व औरत) बेदाढ़ी होंगे। जिस्म पर बाल न होने के दो मतलब हो सकते हैं: एक तो यह कि सर के बालों के अलावा किसी भी जगह बाल न हों और दूसरा मतलब यह कि जिन जगहों के बालों को दूर करना पड़ता है (जैसे नाफ़ के नीचे के बाल और बग़लें, वहां तो बिल्कुल ही बाल न होंगे और सीने और पिंडलियों वग़ैरह पर जो बाल होंगे, बहुत हल्के होंगे, ख़ूब भरे हुए न होंगे, जिनसे खाल की खुबसूरती दब जाए। सर के बालों का अलग से ज़िक्र किसी रिवायत में नहीं पाया गया लेकिन बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में जो यह फ़रमाया कि उनकी कंघियां सोने की होंगी। इससे साफ़ ज़ाहिर हैं कि उनके सर पर बाल होंगे।

चेहरे पर दाढ़ी न होने की तमन्ना जन्नत में पूरी हो जाएगी। हमारे एक बुज़ुर्ग से किसी ने सवाल किया कि दाढ़ी न होने से क्या फ़ायदा होगा? फ़रमाया कि इसका जवाब उनसे मालूम करे जो दाढ़ी मुंडाते हैं। बहरहाल जन्नत में तो हर चीज़ ख़ूबसूरत होगी। दाढ़ी न होने पर भी मर्दों की खुबसूरती बढ़ी हुई होगी और अंदर से बाल निकलकर न आएंगे, जिनको मूंडना पड़े और उसकी वजह से खाल ख़राब हो।

जन्नतियों की तंदुरुस्ती और जवानी

हज़रत अबू सईद खुदरी ﵁ और हज़रत अबू हुरैरः ﵁ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि एक (खुदाई) मुनादी (जन्नतियों में) पुकार कर एलान कर देगा कि ऐ जन्नत वालो! तुम्हारे लिए यह बात तय है कि हमेशा तंदुरुस्त रहोगे, कभी बीमार न होगे और यह (भी) तय है कि हमेशा ज़िंदा रहोगे, कभी मौत न आएगी और (यह कि) हमेशा जवान रहोगे, कभी बूढ़े न होगे और (यह कि) हमेशा नेमतों में रहोगे, कभी मुहताज न होगे। —मुस्लिम शरीफ़

जन्नतियों की उम्रें

हज़रत अबू सईद ﵁ से रिवायत है कि रसूले पाक ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में जाने वाला जो शख़्स इस दुनिया से विदा होगा, छोटा हो या बड़ा (जन्नत में दाख़िले के वक़्त) सब तीस साल के कर दिए जाएंगे, इससे कभी आगे न बढ़ेंगे। —तिर्मिज़ी

तीस साल की उम्र दर्मियानी उम्र है। उसमें न बचकाना नादानी होती है, न जवानी दीवानी होती है, न बुढ़ापा आता है, न बुढ़ापे की निशानियां होती हैं। उस उम्र में पूरी जवानी और पूरी समझ दोनों होते हैं। होशहवास बजा और अंग सही-सालिम होते हैं। इसीलिए यह उम्र जन्नतियों के लिए रखी गयी हैं। छोटा हो या बड़ा, हर शख़्स तीस साल का कर दिया जाएगा यानी तीस साल की उम्र की जो ख़ूबियां व हालात होते हैं (जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ) तमाम जन्नत वाले उनके मालिक होंगे। हमेशा-हमेशा जन्नत में रहेंगे। मगर न बुढ़ापा आएगा; न जवानी में कमज़ोरी आएगी; न होश व हवास में ख़लल पैदा होगा; न दांत उखड़ेंगे; न रौशनी में फ़र्क़ आएगा। कुछ रिवायतों में जन्नतियों की उम्र 33 साल भी आयी हैं।

जन्नत के बाग़ और पेड़

सूरः नबा में फ़रमाया :

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا حَدَآئِقَ وَأَعْنَابًا وَّكَوَاعِبَ أَتْرَابًا وَّكَأْسًا دِهَاقًا ۝

इन्न न लिल मुत्तीक़ी न मफ़ाज़न हदाइ क़ व अअ़्नाबौं व कवा इ ब अत्राबौं व कअ्सन दिहाक़ा।

'बेशक परहेज़गारों के लिए बड़ी कामयाबी है, बाग हैं और अंगूर हैं और नयी हमउम्र औरतें हैं और लबालब भरे हुए शराब के जाम हैं।

और सूरः ज़ारियात में इरशद है—

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَّعُيُونٍ ۝ اٰخِذِينَ مَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِينَ ۝

इन्नल मुत्तीक़ी न फ़ी जन्नातिंव्व उयून आख़िज़ी न मा आता- हुम रब्बुहुम। इन्नहुम कानू क़ब ल ज़ालि क मुह्सिनीन०

'बेशक परहेज़गार लोग बाग़ों और चश्मों में होंगे। उनके रब ने उनको जो अ़ता फ़रमाया होगा, वे इसे ले रहे होंगे। बिला शुब्हा वे इससे पहले (दुनिया) में अच्छे काम करने वाले थे।'

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जन्नत में एक पेड़ है जिसके साए में बेहतरीन तेज़ रफ़्तार हल्के-फुल्के घोड़े पर सवार होकर गुज़रने वाला सौ वर्ष तक चलता रहेगा तो उसके साए को तय न कर सकेगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

इसके बाद फ़रमाया *'व ज़ालि क ज़िल्लुम मम्दूद,'* यानी सूरः वाक़िअः में *'वज़िल्लिम ममदूद'* (फैला हुआ साया) फ़रमाया है, वह यही (पेड़ का साया) है। —अत्तर्ग़ीब वत्तरहीब

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया कि जन्नत में कोई पेड़ ऐसा नहीं जिसका तना सोने का न हो।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह ﵁ का ब्यान है कि मैं हज़रत सलमान फ़ारसी ﵁ के पास गया। उन्होंने बात जारी रखते हुए एक बहुत छोटा-सा लकड़ी का टुकड़ा लिया जो उनकी उंगलियों के बीच में ठीक तरह दिखायी भी न देता था। उसको हाथ में लेकर फ़रमाया कि ऐ जरीर! अगर तुम जन्नत में इतनी-सी लकड़ी भी तलाश करोगे तो न पाओगे। मैंने अ़र्ज़ किया कि नख़्ल[1] और शज्र[2] कहां जाएंगी (जिनका क़ुरआन शरीफ़ व हदीस में ज़िक्र है?) फ़रमायाः नख़्ल व शज्र तो वहां होंगे, लेकिन खजूरें लगी होंगी

—बैहक़ी

सूरः रहमान के तीसरे रुकूअ़ में पहले आधे में दो बाग़ों का ज़िक्र है जो ख़ास मुक़र्रिबीन के लिए दूसरे बाग़ों का ज़िक्र है जो ईमान वालों के लिए होंगे और हर आदमी को दो-दो मिलेंगे, मगर मुक़र्रिबीन के बाग़ों से दर्जे में कम होंगे। चुनांचे इर्शाद हैः

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتَانِۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِۙ ذَوَاتَاۤ
اَفْنَانٍۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ فِیْهِمَا عَیْنَانِ تَجْرِیَانِۚ فَبِاَیِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ فِیْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ مُتَّكِئِیْنَ عَلٰی فُرُشٍ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍؕ
وَجَنَا الْجَنَّتَیْنِ دَانٍۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ فِیْهِنَّ قٰصِرٰتُ
الطَّرْفِۙ لَمْ یَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ كَاَنَّهُنَّ الْیَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِؕ

व लिमन ख़ा फ़ मक़ा म रब्बिही जन्नतान। फ़बि ऐइ आलाइ

1. खजूर का पेड़ 2. पेड़

रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। ज़वा ता अफ़्नान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिमा ऐनानि तज्रियान। फ़बि ऐइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिमा मिन कुल्लि फ़ाकिहतिन ज़ौजान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। मुत्तकिई न अ़ला फ़ुरुशिम बताइनुहा मिन इस्तब्रक़। व जनल जन्नतैनि दानिन फ़बि ऐइ अलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिन्न न क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम्यत्मिस हुन्न न इन्सुन क़ब्लहुम व ला जान्न। फ़बिऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। क अन्न न हुन्न ल याक़ू त वल मर्जान फ़बिऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान हल जज़ाउल एह-सानि इल्लल एहसानु फ़बिऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान।

'और जिसने अपने रब के सामने खड़े होने से ख़ौफ़ रखा; उसके लिए (यानी हर परहेज़गार के लिए) दो बाग़ होंगे। सो ऐ इन्स व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? वे दोनों बाग़ ज़्यादा शाख़ों वाले होंगे सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? इन बाग़ों में दो चश्मे होंगे जो बहते चले जाएंगे। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? इन दोनों बाग़ों में हर मेवे की दो-दो किस्में होंगी। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? वे लोग तकिया लगाये हुए ऐसे बिछौनों पर बैठे होंगे, जिन के अस्तर ख़ूब मोटे रेशम के होंगे और इन दोनों बाग़ों का फल नज़दीक होता। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? उनमें नीची निगाह वालियां होंगी। जिन पर इन लोगों से पहले न किसी इंसान ने तसर्रुफ़ (उपभोग) किया होगा; न किसी जिन्न ने। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? गोया ये याक़ूत और मरजान हैं। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? भला एहसान का बदला एहसान के सिवा क्या है? सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी

नेमतों से इंकारी हो जाओगे?'

यह जो फ़रमाया कि इन बाग़ों में हर मेवे की दो क़िस्में होंगी। इन के मुतअ़ल्लिक़ **मुआलिमुत्तंज़ील** में कुछ उलमा का क़ौल नक़ल किया है कि एक क़िस्म तर मेवों की (यानी फलों की) और एक क़िस्म सूखे मेवे की होगी।

इसके बाद आम मोमिनों के बाग़ों का ज़िक्र है। चुनांचे इर्शाद है :

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ مُدْهَآمَّتٰنِ ○
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِیْهِمَا عَیْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِیْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّ رُمَّانٌ ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ○ فِیْهِنَّ خَیْرٰتٌ حِسَانٌ ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ حُوْرٌ
مَّقْصُوْرٰتٌ فِی الْخِیَامِ ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ لَمْ یَطْمِثْهُنَّ
اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ مُتَّكِئِیْنَ عَلٰی
رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِیٍّ حِسَانٍ ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ تَبٰرَكَ
اسْمُ رَبِّكَ ذِی الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ○

व मिन दुनिहिमा जन्नतान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। मुद् हाम्मतान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिमा ऐनानि नज़्ज़ाख़तान फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिमा फ़ाकिहतुंव्व नख़्लुंव्व रुम्मान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिन्न न ख़ैरातुन हिसान। फबि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। हूरुम मक़्सूरातुन फ़िल ख़ियाम। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। लम यत्मिस्हुन्न न इन्सुन क़ब्लहुम व ला जान्न। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। मुत्तकिई न अ़ला रफ़्रफ़िन ख़ुज़्रिंव्व अ़ब्क़रीयिन हिसान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। तबारकस्मु रब्बि क ज़िल जलालि वल इकराम।

'और उन बाग़ों से कम दर्जे के दो बाग़ और होंगे। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? वे दोनों बाग़ गहरे हरे होंगे। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? इन दोनों बाग़ों में मेवे और खजूरें और अनार होंगे। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? इनमें अच्छे अख़्लाक़ वाली ख़ुबसूरत औरतें होंगी। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? वे हूरें होंगी जो ख़ेमों में हिफ़ाज़त से होंगी। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? इन लोगों से पहले इन पर न तो किसी इंसान ने तसर्रुफ़ किया होगा, न किसी जिन्न ने। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? वे लोग बेल-बूटे वाले अजीब ख़ुबसूरत हरे कपड़ों पर तकिए लगाए होंगे। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? बड़ा बरकत वाला नाम है तेरे रब का जो जलाल और इकराम वाला है।'

जन्नत के फल और मेवे

जन्नती मज़े और स्वाद लेने के लिए फल और मेवे खाएंगे। क़ुरआन शरीफ़ में इसका ज़िक्र आया है। सूरः साद में इर्शाद है :

مُتَّكِئِيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ○

मुत्तकिईं न फ़ीहा यद्ऊ न फ़ीहा बिफ़ाकिहतिन कसीरतिंव्व शराब।

'वे उन बाग़ों में तकिए लगाए होंगे (और) वहां बहुत मेवे और पीने की चीज़ें मंगायेंगे।'

सूरः यासीन में फ़रमाया :

لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ○

लहुम फ़ीहा फ़ाकिहतुंव्व लहुम मा यद्दऊन।

'उनके लिए वहां मेवे हैं और जो कुछ तलब करें, वह सब है।'

यानी हर क़िस्म के मेवे उनके लिए मौजूद होंगे और लज़्ज़त व ख़्वाहिश की चीज़ों में से जो कुछ भी तलब करेंगे सब हाज़िर कर दिया जाएगा।'

सूरः वाक़िअः में मेवे का ज़िक्र फ़रमाते हुए इर्शाद है:

وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَّلَا مَمْنُوعَةٍ ○

व फ़ाकिहतिन कसीरतिल्ला मक़्तूअतिंव्व ला मम्नूअः।

'और (अस्हाबुल यमीन) कसीर मेवों में होंगे जो न ख़त्म होंगे, न उनकी रोक-टोक होगी।'

सूरः दह्‌र में इर्शाद है :

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ۝

व दानियतन अ़लैहिम ज़िलालुहा व ज़ुल्लिलत क़ुतूफ़ुहा तज़्लीला।

'और वहां यह हालत होगी कि उन पर साए झुके होंगे और जन्नत के फल उनके अख़्तियार में दे दिए जाएंगे।'

हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ लिखते हैं कि जब कोई जन्नती फल लेना चाहेगा तो फल उसके क़रीब आ जाएगा और टहनी से इस तरह लटक आयेगा कि गोया वह सुनने वाला फ़रमांबरदार है। जन्नती खड़ा होगा तो फल उसके साथ ऊपर को उठ जाएंगे और अगर बैठे या लेटेगा तो उसके साथ चले आएंगे।

साहिबे मुआ़लिमुत्तंज़ील ***'व जनल जन्नतैनि दान'*** की तफ़सीर में लिखते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया कि जन्नत में फल का पेड़ अल्लाह के दोस्तों (यानी जन्नतियों) के क़रीब ख़ुद आ जायेगा,

चाहेंगे तो खड़े होकर फल तोड़ेंगे, चाहेंगे तो बैठ-ही-बैठे ले लेंगे।

हज़रत क़तादा ﷺ ने फ़रमाया कि जन्नतियों के हाथ न तो दूरी की वजह से फलों से महरूम होंगे, न कांटों की वजह से (क्योंकि पेड़ ख़ुद क़रीब आ जायेंगे)। और कांटेदार भी न होंगे। *'ला युरद्द ऐदीहिम अ़न्हा बुअ़्दुन व ला शौक।* क़ुरआन शरीफ़ में जन्नती खजूरों, अंगूरों, अनारों, केलों और बेरों का ज़िक्र तो नाम लेकर आया है और इनके अलावा बे-इंतिहा फलों की क़िस्में होंगी। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया कि दुनिया का कोई मीठा और खट्टा फल ऐसा नहीं जो जन्नत में न हो, यहां तक कि हंज़ल (यानी इन्दराइन का फल जो सख़्त कड़वा होता है) वह भी होगा, मगर वह वहां मीठा होगा।

—बग़्वी

सूरः मुहम्मद में इर्शाद है :

وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ط

व ल हुम फ़ीहा मिन कुल्लिस्स म राति व मग़्फ़ि र तुम मिर्रब्बिहिम।

यानी उनके लिए वहां हर क़िस्म के फल होंगे और उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश होगी।

सूरः बक़रः में इर्शाद फ़रमाया :

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ، كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا قَالُوْا هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ط وَلَهُمْ فِيْهَا اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّهُمْ فِيْهَا خَالِدُوْنَ ۝

व बश्शिरिल्लज़ी न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति अन्न न लहुम जन्नातिन तजरी मिन तह्तिहल अन्हार। कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन स म रति रिज़्क़न क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक्ना मिन क़ब्लु व उतू बिही मु तशाबिहा। व लहुम फ़ीहा अज़्वाजुम मुतह्हरतुंव्व हुम

फ़ीहा ख़ालिदून।

'और आप ख़ुशख़बरी सुना दें ऐसे लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल किए, इस बात की (ख़ुशख़बरी) कि इनके लिए बहिश्तें हैं। जिनके नीचे नहरें चलती होंगी। जब भी कोई फल इन बहिश्तों में से उनके खाने को मिलेगा तो हर बार कहेंगे कि यह (तो) वही है जो इससे पहले हमको मिल चुका है और इनके पास (शक्ल व सूरत में) मिलते-जुलते फल लाए जाएंगे और इनके लिए वहां पाकीज़ा बीवियां होंगी और वहां वे हमेशा रहेंगे।'

साहिबे ब्यानुल क़ुरआन लिखते हैं कि अकसर मज़े के लिए ऐसा होगा कि दोनों बार के फलों की शक्ल एक-जैसी होगी जिससे वे यों समझेंगे कि यह पहली ही क़िस्म का फल है, मगर खाने में मज़ा दूसरा होगा, जिससे लज़्ज़त और मस्ती कई गुना होगी।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर (रह०) ने इसकी तफ़सीर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास और दूसरे सहाबा ﷺ से यह क़ौल भी नक़्ल किया है कि जन्नती हज़रात फल की शक्ल देख कर कहेंगे कि यह फल तो हमने दुनिया में देखा है। लेकिन जब इसको खाएंगे तो मालूम होगा कि सिर्फ़ शक्ल व सूरत में मिलते-जुलते हैं और मज़ा कुछ और ही है।

मिश्कात शरीफ़ में **'सलातुल ख़ुसूफ़'** के बाब में बुख़ारी व मुस्लिम के हवाले से नक़्ल किया है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ के ज़माने से सूरज ग्रहण हो गया। आप ﷺ ने ग्रहण की नमाज़ पढ़ाई जो बहुत लंबी नमाज़ थी। जब आपने सलाम फेरा तो सूरज साफ़ हो चुका था। सलाम के बाद फ़रमाया कि बेशक सूरज और चांद अल्लाह की निशानियों में से हैं। किसी के मरने-जीने की वजह से उनको ग्रहण नहीं होता है, पस जब तुम चांद-सूरज का ग्रहण देखो तो अल्लाह का ज़िक्र करो। (नमाज़ पढ़ाते में) आपने अपनी उसी जगह (खड़े-खड़े) कुछ लेना चाहा। फिर हमने देखा कि आप पीछे हटे (यह क्या बात थी)। आंहज़रत ﷺ ने जवाब में फ़रमाया कि मैंने (यहीं खड़े-खड़े)

जन्नत देखी, इसलिए मैंने उसमें से एक ख़ोशा लेने का इरादा किया और अगर मैं एक ख़ोशा ले लेता तो जब तक दुनिया बाक़ी रहती तुम उसमें से खाते रहते। इस हदीस से अन्दाज़ा हो सकता है कि जन्नत के फल कितने बड़े-बड़े हैं।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ का ब्यान है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे सामने जन्नत पेश की गयी तो मैंने तुमको दिखाने के लिए अंगूर का एक खोशा लेना चाहा। पस (ख़ुदा की हिकमत) ऐसी हुई कि मेरे और ख़ोशे के दर्मियान आड़ लगा दी गई, इसलिए मैं न ले सका। एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! (जन्नत के) अंगूर के एक दाना का रस कितना होगा? फ़रमाया कि तेरी मां ने सबसे बड़ा डोल जो (कभी) चमड़ा काटकर बनाया हो (उसको ज़ेहन में लाकर ग़ौर कर ले) यानी एक दाना से बहुत बड़ा डोल भर सकता है। —तर्ग़ीब

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबि हुज़ैल ﷺ का ब्यान है कि हम हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ के साथ मुल्क शाम में या ओमान में थे। आपस में जन्नत का ज़िक्र होने लगा तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक जन्नत के अंगूरों में से एक अंगूर इतना बड़ा है जितनी दूर यहां से सुनूआ़ (शहर) है। —तर्ग़ीब

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि जन्नत की खजूरों की लम्बाई बारह हाथ है (और) इनमें गुठली नहीं है। —तर्ग़ीब

एक बार आंहज़रत ﷺ की ख़िदमत में एक सहाबी आये जो देहात के रहने वाले थे। उन्होंने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! (क़ुरआन शरीफ़ में) अल्लाह तआ़ला ने एक ऐसे पेड़ के बारे में, जो तकलीफ़ देने वाला है, यह ख़बर दी है कि वह जन्नत में होगा। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि वह कौन सा पेड़ है? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि बेरी का पेड़ (जिसका सूरः वाक़िअः में ज़िक्र है) चूंकि बेरी की पेड़ में कांटे होते हैं। इसलिए तकलीफ़ देता है और फल तोड़ने में मुसीबत होती है। यह सुनकर सैयदुल मुर्सलीन ﷺ ने फ़रमाया

क्या अल्लाह तआ़ला ने *'फ़ी सिद्‌रिमख़्जूद'* (बग़ैर कांटों की बेरियां) नहीं फ़रमाया? बिला शुब्हा इन बेरियों से ऐसे फल निकलते हैं जिनके फट जाने से बहत्तर रंग के खाने निकल पड़ते हैं, एक रंग दूसरे से मिलता नहीं।

—इब्ने अबिद्दुन्या

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर सूरः रअ़्द की आयत **'उकुलुहा दाइमुंव्व ज़िल्लुहा'** की तफ़सीर में लिखते हैं: **'ऐइ फ़ीहल फ़वाकिहु वल मुताइमु वल मशारिबु ला इन्क़िताअ़् वला फ़िना'** यानी जन्नत में मेवे और खाने-पीने की चीज़ें हमेशा रहेंगी; न ख़त्म होंगी, न फ़िना होंगी। फिर एक रिवायत तब्रानी के हवाले से नक़ल की है कि जब कोई जन्नती जन्नत से फल लेगा तो उसकी जगह दूसरा फल लग जाएगा।

जन्नत में खेती

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूल अकरम ﷺ की ख़िदमत में गांव के रहने वाले एक सहाबी बैठे हुए थे और आप यह बात ब्यान फ़रमा रहे थे कि जन्नतियों में से एक शख़्स अपने परवरदिगार से खेती करने की इजाज़त तलब करेगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि क्या तू उन (भरपूर) नेमतों में नहीं है जो ख़्वाहिश के मुताबिक़ तुझे मिली हुई हैं? वह अ़र्ज़ करेगा कि हाँ (है तो सब कुछ) मगर मेरा दिल चाहता है (चुनांचे उसको इजाज़त दे दी जाएगी)। वह ज़मीन में बीज डालेगा तो पलक झपकने के पहले ही सब्ज़ा उग जाएगा और बढ़ जाएगा और खेत तैयार हो जाएगा और कट भी जाएगा और पहाड़ों के बराबर अंबार लग जाएंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि ऐ आदम के बेटे। यह ले ले। तेरे लोभ का पेट कोई चीज़ नहीं भरती। हुज़ूर ﷺ का यह इर्शाद सुनकर गांव वाले सहाबी ﷺ ने अ़र्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम वह शख़्स क़ुरैशी या अंसारी होगा। इसलिए कि यही लोग खेती-पेशा हैं। हमारा पेशा तो खेती नहीं है। भला हम क्यों ऐसी दर्ख़्वास्त करने लगे? यह सुनकर रसूलुल्लाह ﷺ को हँसी आ गयी। —बुख़ारी शरीफ़

जन्नत की नहरें

सूरः मुहम्मद में अल्लाह तआ़ाला का इर्शाद है :

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ، فِيهَا أَنْهٰرٌ مِّنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ، وَأَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ، وَأَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ، وَأَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى، وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۝

म स लुल जन्नतिल्लती वुइदल मुत्तक़ून। फ़ीहा अन्हारुम मिम माइन ग़ैरि आसिन। व अन्हारुम मिल्लब निल्लम य त ग़ैयर तअ़्मुह। व अन्हारुम मिन ख़ म रिल्लज़्ज़तिल लिश्शारिबीन। व अन्हारुम मिन अ़ स लिम मुसफ़्फ़ा। व लहुम फ़ीहा मिन कुल्लिस्स म राति व मग़्फ़ि र तुम मिर्रब्बिहिम।

'जिस जन्नत का मुत्तक़ियों से वायदा किया जाता है; उसकी हालत यह है कि उसमें बहुत नहरें ऐसे पानी की हैं जिन में ज़रा भी तबदीली न होगी और बहुत-सी नहरें दूध की हैं जिसका स्वाद ज़रा न बदला होगा और बहुत-सी नहरें शराब की हैं जो पीने वालों के लिए बहुत लज़ीज़ होंगी और बहुत-सी नहरें शहद की हैं जो बिल्कुल साफ़ होगा और उनके लिए हर क़िस्म के फल होंगे और उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश होगी।

हज़रत उबादः बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं। हर दर्जों के दर्मियान इतना फ़ासला है जितना आसमान व ज़मीन के दर्मियान में है और फ़िर्दौस सबसे ऊपर है। उसी से जन्नत की चारों नहरें निकली हैं और उसके ऊपर अल्लाह का अ़र्श होगा। इसलिए जब तुम अल्लाह से (जन्नत का) सवाल करो तो जन्नतुलफ़िर्दौस मांगो। —तिर्मिज़ी शरीफ़

इस हदीस से मालूम हुआ कि चार नहरें जन्नतुलफ़िर्दौस से निकली हैं। फिर हर नहर से बहुत-सी नहरें निकलती चली गई हैं जिनका सूरः मुहम्मद की आयत में ज़िक्र हुआ। इन चार बड़ी नहरों को एक हदीस में

चार नदी बताया गया है। चुनांचे मिश्कात शरीफ़ से तिर्मिज़ी के हवाले से हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इर्शाद नक़ल किया है कि बेशक जन्नत में पानी का दरिया है, फिर उनसे और नहरें फूटी हैं।

क़ुरआन मजीद में जगह-जगह जन्नत और जन्नत वालों के ज़िक्र में **तज्री मिन तहि्तहल अन्हार और 'तज्री मिन तहि्तहिमुल अन्हार'** फ़रमाया है जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि जन्नत में बहुत ज़्यादा नहरें होंगी जो जन्नत वालों के बाग़ों और कोठों में बह रही होंगी।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत की नहरें मुश्क के पहाड़ों के नीचे से निकलती हैं।[1] यानी नहरों का मर्कज़ और निकलने की जगह मुश्क के पहाड़ों की जड़ है।

हज़रत सिमाक ﷺ (अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ के शार्गिद) फ़रमाते हैं कि मैंने मदीना में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से मुलाक़ात की और अर्ज़ किया कि जन्नत की ज़मीन कैसी है? उन्होंने फ़रमाया कि चांदी की ज़मीन है जो ख़ूब सफ़ेद है। गोया कि आईना है। मैंने सवाल किया कि उसकी रौशनी कैसी है? फ़रमाया, क्या तूने वह वक़्त नहीं देखा, जिस वक़्त सूरज निकलने (के क़रीब) होता है (उस वक़्त जो दर्मियानी रौशनी होती है)। बस वही रोशनी जन्नत में है। लेकिन उस रोशनी में न धूप का असर है, न ठंढक है। मैंने अर्ज़ किया : उसकी नहरों का क्या हाल है? क्या वह गढ़ों के अंदर चलती हैं? फ़रमाया नहीं, (गढ़ों में नहीं चलती हैं) बल्कि वे (हमवार) ज़मीन पर चलती हैं और बिना ढलान के अपनी जगह पर इस तरह जारी हैं कि (अपनी हद से) इधर उधर नहीं फैलती हैं। अल्लाह तआला ने इन नहरों से फ़रमाया कि (तैयार) हो जाओ। पस जारी हो गयीं। मैंने पूछा कि जन्नत में कपड़ों के जोड़े कैसे हैं? फ़रमाया जन्नत में एक पेड़ है जिसमें अनार की तरह के फल हैं। जब अल्लाह तआला का दोस्त (यानी जन्नती) उसमें से लिबास लेने का इरादा

1. तर्ग़ीब

करेगा तो उसमें से टहनी उसके पास आकर फट जाएगी, जिसमें से रंग-बिरंग के सत्तर जोड़े निकल आएंगे। फिर वह टहनी जुड़ जाएगी और अपनी जगह लौट आएगी। —तर्ग़ीब

नह्रे कौसर

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि (मे'राज की रात को) मैं जन्नत में गुज़र रहा था। एक ऐसी नहर सामने आयी जिसके दोनों किनारों पर मोतियों कि क़ुब्बे थे। फ़रिश्ता (जो मेरे साथ था), से मैंने पूछा, यह क्या है? उसने जवाब दिया कि यह कौसर है जो अल्लाह ने आप को इनायत फ़रमायी है। इसके बाद फ़रिश्ते ने उसकी मिट्टी में अपना हाथ मार कर मुश्क निकाला, फिर मेरे सामने 'सिद्रतुल मुंतहा'[1] बुलंद किया गया। पस मैंने उसके पास बहुत बड़ा नूर देखा।[2] हज़रत अनस ﷺ से यह भी रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस ﷺ से सवाल किया गया

1. 'सिदरः' कहते हैं बेरी के पेड़ को और 'मुंतहा' के मानी हैं इन्तिहा की जगह। हदीस में आया है कि यह एक पेड़ है बेरी का सातवें आसमान में। ऊपरी दुनिया से जो (हुक्म व रोज़ियां वग़ैरह) आती हैं, वे पहले सिदरतुल मुंतहा तक पहुंचते हैं, फिर वहां से फ़रिश्ते ज़मीन पर लाते हैं। इसी तरह जो आमाल यहां से चढ़ते हैं, वे भी सिद्रतुल मुंतहा तक पहुंचते हैं, फिर वहां से उठाये जाते हैं। —ब्यानुल क़ुरआन

   हदीसे मे'राज में है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि मैं सिद्रतुल मुंतहा की तरफ़ उठाया गया तो देखता हूं कि उसके फल (यानी बेर) हिज्र के मटकों के बराबर हैं और उसके पत्ते हाथी के कानों के बराबर हैं (मिश्कात पेज 527) साथ ही आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि सिद्रतुल मुंतहा की शाख़ के साए में सौ वर्ष सवार चल सकता है या यों फ़रमाया कि उसके साए में सौ सवार साया ले सकते हैं।
   —तिर्मिज़ी शरीफ़ बाब 'मा जा अ फ़ी सिफ़ति सिमारिल जन्न नः':

2. तिर्मिज़ी

फ़ायदा : नह्रे कौसर अल्लाह पाक की ख़ास दैन है जो जन्नत में है और सिर्फ़ आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद ﷺ को मिला है। और किसी नबी को नह्रे कौसर नहीं मिली। हां तिर्मिज़ी शरीफ़ की कुछ रिवायतों में है कि क़ियामत के मैदान में हर नबी के लिए हौज़ होगा जिससे अपनी-अपनी उम्मत को पिलाएंगे। उलमा-ए-किराम ने लिखा है कि क़ियामत के मैदान में हौज़ का होना आंहज़रत ﷺ के लिए कोई नयी बात नहीं

कि कौसर क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया कि वह एक नहर है जो अल्लाह तआ़ला ने मुझे इनायत फ़रमायी है— दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठी है।

—तिर्मिज़ी

जन्नत के चश्मे

सूरः मुर्सलात में इर्शाद है :

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ○ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ○

इन्नल मुत्तक़ी न फ़ी ज़िलालिंव्व उयूनिंव्व फ़वाकि ह मिम्मा यश्तहून।

'बेशक मुत्तक़ी लोग सायों में और चश्मों में और ख़्वाहिश के मुताबिक़ मेवों में होंगे।'

सूरः ग़ाशियः में फ़रमाया :

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً○ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ○

वुजूहुंय्यौ म इज़िन नाइमतुल्लि सअ़्यिहा राज़ियतुन फ़ी जन्नतिन आ़लियतिल्ला तस्मउ फ़ीहा लाग़ियः। फ़ीहा ऐनुन जारियः।

'बहुत से चेहरे उस दिन रौनक़ वाले होंगे। अपने आमाल की वजह से ख़ुश होंगे। ऊंची जन्नत में होंगे जिसमें कोई बकवास न सुनेंगे, उसमें बहते हुए चश्मे होंगे।'

है क्योंकि हर नबी के लिए हौज़ होने की रिवायत मौजूद है हां जन्नत में नहरे कौसर सिर्फ़ हुज़ूर ﷺ ही के लिए ख़ास है। साथ ही यह भी लिखा है कि आंहज़रत ﷺ के हौज़ के लिए जो कौसर कहा गया है, वह इसलिए है कि जन्नत की नहर कौसर से उसमें पानी आएगा।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर *'ऐनुन जारियः'* की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं, *'इन्नमा हाज़ा जिंसुन यानी फ़ीहा उयूनिन जारियात'*। मतलब यह हुआ कि जन्नत में बहुत ज़्यादा चश्मे जारी हैं। ऐन वाहिद (एक वचन) जो आया है, इससे जिंस मुराद है जो कम व ज़्यादा सबके लिए बोला जाता है। जन्नत के चश्मों का ज़िक्र जन्नत के बाग़ों के तज़्किरे में गुज़र चुका है और अभी 'पीने की चीज़ों के ब्यान' में भी आता है।

फ़ायदा : सूरः ग़ाशियः की आयत में फ़रमाया कि जन्नत में कोई बकवास न सुनेंगे। यह मज़मून दूसरी आयतों में भी आया है। सूरः नबा में है *'ला यस्मउ न फ़ीहा लग़्वौं व ला तअ्सीमा'* (कि वहां न कोई बेहूदा बात सुनेंगे, न झूठ) और सूरः वाकिअः में इर्शाद है *वला यस्मउ न फ़ीहा लग़्वौं वला तअ्सीमा'* (यानी वे हज़रात न वहां बक-बक सुनेंगे, न कोई बेहूदा बात)। हासिल सब का यह है कि जन्नतियों का दिल व दिमाग़ और जिस्म के तमाम हिस्से हर तरह के अमन में होंगे। नागवारी लाने वाली कोई भी चीज़ न नज़रों के सामने आएगी; न कानों में पड़ेगी; न वहां बक-बक, झक-झक का कुछ काम होगा; न लड़ाई-झगड़े का मौक़ा आएगा, आपस में न तू-तू मैं-मैं होगी; न कोई किसी पर जुम्ले कसेगा; न ताने करेगा।

जन्नत में पीने की चीज़ें

सूर दह्र में फ़रमाया है :

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝

इन्नल अब्रा र यशरबू न मिन कअ्सिन कान मिज़ाजुहा काफ़ूरा। ऐनैंयशरबु बिहा इबादुल्लाहि युफ़ज्जिरू नहा तफ़्जीरा।

'बेशक नेक लोग ऐसे जाम से शराब पीएंगे जिसमें काफ़ूर की मिलावट होगी। ऐसे चश्मे से, जिससे ख़ुदा के (ख़ास) क़रीबी बन्दे पीएंगे और जिसका वे (ख़ुदा के ख़ास बन्दे जहां चाहेंगे) बहाकर ले जाएंगे।'

तफ़सीर दुर्रे मंसूर में इब्ने शौज़ब से रिवायत है कि जन्नतियों के हाथ में सोने की छड़ियां होंगी और इन छड़ियों से जिस तरफ़ इशारा करेंगे, नहरें उसी तरफ़ को चलेंगी। —ब्यानुल क़ुरआन

तफ़सीर मुआलिमुत्तंज़ील में 'युफ़ज्जिरू नहा तफ़्जीरा' की तफ़सीर करते हुए लिखा है *'ऐय यक़ूदू न हा हैसु शाऊ मिम् मनाज़िलिहिम व क़ुसूरिहिम'* यानी जन्नती हज़रात अपनी मंज़िलों और मुहल्लों में जहां चाहेंगे, ले जाएंगे।

यह जो फ़रमाया है शराब के जाम में काफ़ूर की मिलावट होगी। उससे दुनिया की काफ़ूर न समझ लिया जाए। वह जन्नती काफ़ूर होगा, जो दिल व दिमाग़ को तफ़रीह करने और क़ुव्वत पहुंचाने के लिए और शराब में एक तरह की ख़ास हालत और लज़्ज़त लाने के लिए मिलाया जाएगा। फिर कुछ आयतों के बाद इर्शाद है :

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنجَبِيلًا ۝ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ۝

व युस्क़ौ न फ़ीहा कअ्सन का न मिज़ाजुहा ज़न्जबीला। ऐनन फ़ीहा तुसम्मा सलसबीला।

'और वहां उनको ऐसा जाम पिलाया जाएगा जिसमें सोंठ की मिलावट होगी यानी ऐसे चश्मे से उनको पिलाया जाएगा, जिसका नाम 'सलसबील' है।'

इस आयत से मालूम हुआ कि जन्नतियों की शराब में सोंठ की भी मिलावट होगी लेकिन इससे दुनिया की सोंठ न समझ ली जाए। यह वहां की सोंठ होगी जो शराब के मज़े को दोगुना कर देगी और इससे शौक़ व ख़ुशी की हालत पैदा होगी। यहां एक चश्मे का नाम 'सलसबील' फ़रमाया है। क़तादा (रह०) का क़ौल है कि उसको सलसबील कहने की वजह यह है कि जन्नतियों की मर्ज़ी के मुताबिक़ जिधर को वे चाहेंगे, जारी होगी।

हज़रत मुजाहिद (रह०) ने फ़रमाया कि ख़ूब तेज़ी के साथ बहने की वजह से उसका नाम यह तज्वीज़ हुआ। ज़ज्जाज का क़ौल है कि उसको सलसबील इसलिए कहा जाएगा कि उससे शराब निहायत ही आसानी और रवानी से सलामती के साथ हलक़ में उतर जाएगी। (मुआ़लिमुत्तन्ज़ील) मुफ़स्सिर इब्ने कसीर *'तुसम्मा सलसबीला'* की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं कि *'ऐ यंज़जंबीलु ऐनुन फ़िल जन्नति तुसम्मा सलसबीला' यानी ज़ंजबील जन्नत* में एक चश्मा है जिसे सलसबील कहा जाता है :

सूरः तत्फ़ीफ़ में इर्शाद है :

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ○ عَلَى الْأَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ، تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ
نَضْرَةَ النَّعِيْمِ، يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ، خِتَامُهٗ مِسْكٌ، وَفِيْ
ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ، وَ مِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ، عَيْنًا يَّشْرَبُ
بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ○

इन्नल अब्रा र लफ़ी नई म। अ़लल अराइकि यन्ज़ुरून। तअ़्रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम नज़्रतन्नईम। युस्क़ौ न मिर्रहीक़िम मख़्तूम। ख़िताममुहू मिस्क। व फ़ी ज़ालि क फ़ल् य त नाफ़सिल मुताना फ़िसून व मिज़ाजुहू मिन तस्नीम ऐनैंयशरबु बिहल मुक़र्रबून।

'बिला शुब्हा नेक लोग नेमतों में होंगे, मुसहरियों पर देखते होंगे। ऐ मुख़ातब! तू उनके चेहरों में नेमतों की बशाशत (ख़ुशी) पहचानेगा। उनको पीने के लिए ख़ालिस शराब सर बमुहर मिलेगी, जिस पर मुश्क की मुहर होगी। और लालच करने वाले को ऐसी चीज़ का लालच करना चाहिए और इस शराब की मिलावट तस्नीम से होगी यानी ऐसे चश्मे से जिससे मुक़र्रब बन्दे पीएंगे।'

'रहीक़िम मख़्तूम' यानी ख़ालिस शराब में तस्नीम की मिलावट होगी। तस्नीम जन्नतियों की सबसे ज़्यादा बेहतर और उम्दा शराब होगी। उसका चश्मा बहता होगा, उस चश्मे से मुक़र्रिबीन पीएंगे और *'अस्हाबुल यमीन'* की शराब में उस चश्मे से मिलावट की जाएगी। —मुआ़लिमुत्तंज़ील

जन्नत के परिंदे

जन्नतियों को खाने के लिए परिंदों का गोश्त भी मिलेगा, जैसा कि सूरः वाक़िअः में **'व लहि्म तैरिम्मिम्मा यश्तहून'** फ़रमाया है। हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में लंबी-लंबी गरदनों वाले ऊंटों के बराबर परिन्दे हैं जो जन्नत के पेड़ों में चरते-फिरते हैं। हज़रत अबू बक्र ﷺ ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! वह तो बड़ी ही अच्छी ज़िंदगी में हैं। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि उनके खाने वाले उनसे ज़्यादा बेहतरीन ज़िन्दगी में होंगे। तीन बार यों ही फ़रमाया (फिर अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ को बशारत देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि) मैं उम्मीद करता हूं कि तुम उन लोगों में से होगे जो इन परिंदों को खाएंगे।

—अहमद

हज़रत अबू उमामा ﷺ ने फ़रमाया कि (जब) किसी जन्नती को परिंद (खाने की) भूख होगी, तो (ख़ुद-ब-ख़ुद) परिंदे आकर उसके सामने गिर जाएगा जो पका हुआ होगा और उसके टुकड़े बने हुए होंगे। एक हदीस में है कि परिंदे जन्नती के दस्तरख़्वान पर ख़ुद-ब-ख़ुद गिर पड़ेगा जो बग़ैर आग और धुंए के (भुना और पका हुआ) होगी। जन्नती उसमें से इतना खाएगा कि उसका पेट भर जाएगा। बाद में वह परिंदा उड़ जाएगा।

—तर्ग़ीब अन अबिद्दुन्या

जन्नती पूरी इज़्ज़त के साथ खाएं-पीयेंगे, खाने-पीने में भरपूर लज़्ज़त महसूस करेंगे और उनके खाने-पीने का पेशाब-पाख़ाना न बनेगा।

सूरः साफ़्फ़ात में फ़रमाया :

أُولٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ فَوَاكِهُ وَهُم مُّكْرَمُونَ ○ فِي جَنّٰتِ النَّعِيمِ ○
عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِينَ ○

उलाइ क लहुम रिज़्क़ुम मअ़्लूम फ़वाकिहु व हुम मुक्रमून। फ़ी

जन्नातिन्न नईम अला सुरुरिम मु त क़ाबिलीन।

'उनके लिए रोज़ी मालूम है यानी मेवे और वे बड़ी इ़ज़्ज़त से आराम के बाग़ों में आमने-सामने तख़्तों पर होंगे।'

सूरः तूर में फ़रमाया :

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَّنَعِيمٍ ۝ فَاكِهِينَ بِمَا اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۝ وَوَقٰهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

इन्नल मुत्तक़ी न फ़ी जन्नातिंव्व नईम। फ़ाकिही न बिमा आताहुम रब्बुहुम व वक़ाहुम रब्बुहुम अ़ज़ाबल जहीम। कुलू वशरबू हनीअम बिमा कुन्तुम तअ़मलून।

'बिला शुब्हा मुत्तक़ी लोग बाग़ों में और ऐश के सामानों में होंगे। उनका परवरदिगार जो कुछ उनको इनायत फ़रमाएगा, इससे ख़ुश होंगे और उनका रब उनको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचाए रखेगा। (उनसे कह दिया जाएगा) कि मज़े के साथ खाओ-पीयो, उन (नेक) आ़माल के बदले जो तुम दुनिया में करते थे।'

हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नती जन्नत में खाएंगे, पीएंगे, और न थूकेंगे; न पेशाब-पाखाना करेंगे; न नाक साफ़ करने की ज़रूरत होगी। सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ किया, खाने का क्या होगा? (यानि जब पेशाब-पाख़ाना न होगा तो हज़म होकर फ़ुज़ला कैसे निकलेगा?) आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि डकार आएगी और मुश्क की तरह (ख़ुश्बूदार) पसीना आएगा। इस डकार और पसीने से पेट ख़ाली हो जाएगा, अल्लाह की तस्बीह और तारीफ़ इस तरह बेएख़्तयार जारी होगी, जैसे तुम को बेएख़्तयार सांस आती है।

—मुस्लिम शरीफ़

कुछ रिवायतों में तस्बीह के साथ तकबीर का भी ज़िक्र आया है।

—ज म उल फ़वाइद

यानी जिस तरह दुनिया में सांस लेने के लिए तुमको न कोई तकलीफ़ होती है; न सांस लेने का इरादा करना पड़ता है और न दूसरे कामों में लगा रहना सांस लेने से रोकता है। इसी तरह जन्नती लोग अल्लाह की तस्बीह और तह्मीद में हर वक़्त लगे होंगे। नेमतों और लज़्ज़तों में लगा रहना उनको अल्लाह की तस्बीह व तह्मीद से ग़ाफ़िल न करेगी, बेएख़्तयार तस्बीह और तह्मीद जारी होगी और तस्बीह व तह्मीद से न थकेंगे, न मन को बोझ होगा।

साहिबे फ़त्हुलबारी लिखते हैं कि जन्नतियों की ज़िंदगी का ज़रिया अल्लाह की तस्बीह को बना दिया गया है। जिस तरह दुनिया में सांस लेकर जीते हैं; इसी तरह वहां ख़ुदा की तस्बीह से ज़िंदा रहेंगे और वजह इसकी यह है कि जन्नती लोगों के दिल अल्लाह तआला की मारफ़त से रौशन होंगे और उसकी मुहब्बत से भरपूर होंगे। यह मुहब्बत महबूब की याद का ऐसा नशा पिलाएंगी कि बेएख़्तियार ज़िक्र में लगे रहेंगे।

फ़ायदा : बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है (जो पहले गुज़र चुकी है) कि **'युसब्बिहूनल्ला ह बुक्रतौंव्व अ़शीय्या'** यानी जन्नती सुबह व शाम अल्लाह की तस्बीह ब्यान करेंगे और यहां फ़रमाया कि सांस की तरह हर वक़्त तस्बीह जारी रहेगी। इसके बारे में हदीस के कुछ शरह लिखने वालों से यह नक़ल किया गया है कि सुबह-शाम के ज़िक्र करने से हर वक़्त ज़िक्र करना ही मुराद है। इसलिए दोनों का मतलब यही हुआ। लेकिन हदीस के ब्यान का ढंग बताता है कि अपने एख़्तियार से तो सुबह-शाम तस्बीह में लगे होंगे और बेएख़्तियार तस्बीह हर वक़्त जारी रहेगी और इस की ताईद व तस्दीक़ इससे होती है कि जहां सुबह व शाम का ज़िक्र है, वहां फ़ेल *(क्रिया) 'युसब्बिहुन'* इस्तेमान फ़रमाया है, जिसका फ़ाइल (कर्त्ता) जन्नती है और जहां बेएख़्तियार सांस की तरह तस्बीह का ज़िक्र है, वहां 'युल् हमून' फ़ेले मज्हूल (कर्मवाच्य) ज़िक्र किया गया है।

यों समझिए कि गो बेएख़्तियार भी तस्बीह जारी होगी, लेकिन ख़ुद अपने अख़्तियार से भी सुबह-शाम में लगे होंगे ताकि अपनी तर्बियत से अपनाई गई तस्बीह की लज़्ज़त से महरूम न रहें और अगरचे वहां इबादत और ज़िक्र व फ़रमांबरदारी के ज़िम्मदार न होंगे, मगर उनकी शराफ़त और सआदत (सौभाग्य) यह गवारा न होने देगी कि अपने महबूब और इनाम देने वाले और एहसान करने वाले की याद के लिए बाक़ायदा, जान-बूझकर वक़्त न निकालें।

जन्नतियों के बर्तन

सूरः ज़ुख़रुफ़ में फ़रमाया :

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ○ وَفِيْهَا مَاتَشْتَهِيْهِ
الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ○ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خَالِدُوْنَ○

युताफ़ु अ़लैहिम बिसिहाफ़िम मिन ज़ ह बिंव्व अक्वाब। व फ़ीहा मा तश्तहीहिल अन्फ़ुस व तलज़्ज़ुल अअ़्युन। व अन्तुम फ़ीहा ख़ालिदून।

'उनके पास सोने के प्याले और गिलास लाए जाएंगे (जिनमें खाने-पीने की चीज़ें होंगी और वहां वे चीज़ें होंगी दिलों को जिनकी ख़्वाहिश हो और जिनसे आंखों को लज़्ज़त हो और (उनसे कह दिया जाएगा) कि तुम यहां हमेशा रहोगे।'

सूरः दह्र में फ़रमाया :

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِنَ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَ○ قَوَارِيْرَا
مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا○

व युताफ़ु अ़लैहिम बिआनियतिम मिन फ़िज़्ज़तिंव्व अक्वाबिन कानत क़वारीरा। क़वारी र मिन फ़िज़्ज़तिन क़द्दरूहा तक़दीरा।

'और उनके पास (खाने-पीने की चीज़ें पहुंचाने के लिए) चांदी के बर्तन लाए जाएंगे और आबख़ोरे (भी लाए जाएंगे) जो शीशे के होंगे (और) वे शीशे-चांदी के होंगे जिनको भरने वालों ने मुनासिब अंदाज़ से भरा होगा।'

यानि इन आबख़ोरों में इस ढंग से पीने की चीज़ें भर कर पेश की जाएंगी कि उस वक़्त की ख़्वाहिश के बिल्कुल मुताबिक़ होंगी। न कुछ बचेगा, न कमी पड़ेगी।

—मुआलिमुत्तंज़ील

ऊपर की आयत से मालूम हुआ कि जन्नितयों के बर्तन सोने और चांदी के होंगे।

फ़ायदाः सूरः ज़ुख़्रुफ़ की आयत से मालूम हुआ कि जन्नत में जो भी कुछ होगा, उसका अंदर-बाहर नफ़ीस और हसीन होगा; दिलों को ख़ुशगवार और आंखों के लिए मज़ेदार होगा। कोई भी ऐसी चीज़ न होगी, जिसकी शक्ल आंखों को भली न लगे।

जन्नत की शराब से नशा न होगा और न सर-दर्द होगा

जन्नती हज़रात लज़्ज़त के लिए शराब पीएंगे, लेकिन यह शराब वहां की शराब होगी जो साफ़ सुथरी होगी और जिससे न अक़्लों में ख़राबी आएगी, न नशा होगा, न पेट में दर्द होगा, न गाली-गुफ़्तार की नौबत आएगी। सूरः साफ़्फ़ात में इर्शाद है :

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِلشّٰرِبِيْنَ، لَافِيْهَا غَوْلٌ وَلَاهُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ٥

युताफ़ु अ़लैहिम बिकअ्सिम मिम मईनम बैज़ा अ लज़्ज़तिल्लिश्शा रिबीन। ला फ़ीहा ग़ौलूंन व ला हुम अ़न्हा युन्ज़िफ़ून।

'उनके पास शराब का ऐसा जाम लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा होगा। वह शराब सफ़ेद होगी; पीने वालों के लिए लज़्ज़तदार होगी, न उसमें सरदर्द होगा और न उससे अक़्ल में ख़राबी आएगी।'

सूरः तूर में *'ला लग़्वुन फ़ीहा वला तअ्सीम'* फ़रमाया है। यानी इस शराब की वजह से न बक-बक करने और बेकार की बकवास करने की नौबत आएगी और न गुनाह के काम होंगे।

सूरः दह्र में फ़रमाया :

وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا۔

व सक़ाहुम रब्बुहुम शराबन तहूरा।

'और उनका रब ख़ूब पाकीज़ा शराब पिलायेगा।'

साहिबे मुआ़लिमुत्तंज़ील 'तहूरा' की तफ़सील करते हुए लिखते हैं कि

طاهر من القذار و الا قذء لهم تدنسه الايدى و الا رجل كخمر الدنيا

ताहिरुम मिनल अक़्ज़ारि वल् अक़्ज़इ लहुम तद्नसहुल्ऐदी वल अर्जुल क ख़म्रिद्दुन्या।

यानी वह शराब घिनौने और नापाक हिस्सों से पाक होगी और दुनिया की शराब जो हाथ वग़ैरह पड़ने से मैली हो जाती है, इस मैलेपन से वह शराब महफ़ूज़ होगी।

फिर अबूक़ुलाबा और इब्राहीम का क़ौल नक़ल करते हैं कि जन्नत की शराब को 'तहूर' इसलिए फ़रमाया कि उसका पेशाब न बनेगा बल्कि मुश्क की तरह ख़ुश्बूदार पसीना बन जाएगा और इसकी शक्ल यह होगी कि जन्नतियों के पास खाना लाया जाएगा। उसे खाकर फ़ारिग़ हो जाने के बाद शराबे तहूर लायी जाएगी, उसको पीकर उनके पेट पाक व साफ़ हो जाएंगे और उस वक़्त का खाया हुआ खाना उन की खालों से पसीना बन कर निकल जाएगा जो तेज़ ख़ुश्बूदार मुश्क से ज़्यादा उम्दा होगा जिससे उनके पेट ख़ाली हो जाएंगे और ख़्वाहिश फिर वापस आ जाएगी। मुक़ातिल कहते हैं कि शराबे तहूर जन्नत के दरवाज़ों के बाहर पानी का एक चश्मा है, जो शख़्स इसमें से पीएगा अल्लाह जल्ल ल शानुहू उसके दिल को कीना, कपट, खोट, गंदगी और जलन से पाक व साफ़ फ़रमा देंगे।

जन्नतियों की सवारियां

हज़रत बुरैदा ﷺ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जन्नत में घोड़े होंगे। आपने फ़रमाया, अगर अल्लाह तआ़ला ने तुझको जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया और तूने वहां सुर्ख़ याक़ूत के घोड़े पर सवार होने की ख़्वाहिश की तो ऐसा ही कर दिया जाएगा। वह घोड़ा तुझे लेकर जन्नत में उड़ेगा। जहां तू जाना चाहेगा, ले जाएगा फिर एक शख़्स ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत में ऊंट भी होंगे? आप ﷺ ने उस शख़्स को वह जवाब नहीं दिया जो पहले सवाल करने वाले को दिया था बल्कि यह फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआ़ला ने तुझको जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया तो तुझको हर वह चीज़ मिलेगी जिस को तेरा दिल चाहेगा और जिससे तेरी आंखों को लज़्ज़त हासिल होगी।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

देहात के रहने वाले एक सहाबी ﷺ ने हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मैं घोड़ों को बहुत पसंद करता हूं, क्या जन्नत में घोड़े होंगे। आप ने फ़रमाया : अगर तुझको जन्नत में दाख़िल किया गया तो तुझको याक़ूत का घोड़ा दिया जाएगा जिसके दो बाज़ू होंगे, फिर तुझको उस पर सवार किया जाएगा और जहां तू जाना चाहेगा, यह घोड़ा तुझको उड़ाकर ले जाएगा। —तिर्मिज़ी अबू ऐय्यूब की रिवायत

जन्नतियों की आपस में मुहब्बत

सूरः हिज्र में फ़रमाया :

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ○

व नज़अ़्ना मा फ़ी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन इख़्वानन अ़ला सुरुरिम मु त क़ाबिलीन।

'और उन के दिलों में जो दुनिया का कपट था, हम उसको निकाल

देंगे। सब भाइयों की तरह रहेंगे। तख़्तों पर आमने-सामने बैठा करेंगे।'

यानी दुनिया में अगर किसी वजह से आपस में कपट था, तो जन्नत में दाख़िले से पहले ही निकाल कर अलग कर दिया जाएगा ताकि जन्नत जैसी पाक जगह कपट और जन्नत से पाक व साफ़ रहे। बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि—

قُلُوْبُهُمْ عَلٰى قَلْبِ رَجُلٍ وَّاحِدٍ لَااِخْتِلَافَ بَيْنَهُمْ وَّلَاتَبَاغُضَ

क़ुलूबुहुम अ़ला क़ल्बि रजुलिन वाहिदिन ला इख़्तिला फ़ बै न हुम व ला तबाग़ुज़।

'यानी जन्नतियों के दिल एक ही शख़्स के दिल की तरह होंगे। आपस में न कोई इख़्तिलाफ़ होगा और न कपट होगा।'

दिल अलग-अलग होंगे मगर दिल की हालत एक-ही-जैसी होगी यानी सब एक दूसरे को चाहते होंगे और आपस में बे-मिसाल एका व मुहब्बत होगी। हज़रत अबू उमामा ﷺ ने फ़रमाया कि जब तक अल्लाह तआ़ला सीनों का कपट न निकाल देगा, कोई मोमिन जन्नत में दाख़िल न होगा। जिस तरह हमलावर दरिंदे को हटाकर दूर कर दिया जाता है, इसी तरह अल्लाह तआ़ला मोमिनों के दिलों से कपट को निकाल देंगे। —इब्ने कसीर

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मोमिन बंदे (पुलसिरात से पार होकर) दोज़ख़ से निजात पा जाएंगे तो जन्नत-दोज़ख़ के दर्मियान एक पुल पर उनको रोक दिया जाएगा और आपस में जो एक दूसरे पर दुनिया में ज़ुल्म किए थे, उनका क़िसास (बदला) दिलाया जायेगा यहाँ तक कि ज़ुल्म व ज़्यादती से पाक व साफ़ हो जाएंगे तो उनको जन्नत में दाख़िल होने की इजाज़त दे दी जाएगी। सो क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है इनमें से हर आदमी जन्नत वाली जगह को उससे ज़्यादा जानेगा जितना कि अपने दुनिया के घर के रास्ते को जानता था। —बुख़ारी शरीफ़

जबकि जन्नत में दाख़िल होने से पहले ही आपस में हक़ और ज़ुल्म व ज़्यादतियों का फ़ैसला हो जाएगा और दिलों में जो खोट और कपट था, वह बाहर निकाल दिया जाएगा तो दुश्मनी की कोई वजह बाक़ी न रहेगी और जबकि मामूली जन्नती भी इस ख़्याल में होगा कि मुझे वह कुछ मिला है जो किसी को भी न मिला तो जलन की कोई वजह न होगी।[1]

जन्नतियों की दिल्लगी

सूरः तूर में फ़रमाया :

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ○

य त ना ज़ ऊ न फ़ीहा कअ्सल्ला लग़्वुन फ़ीहा व ला तअ्सीम।

'वहां आपस में शराब के जाम की छीना-झपटी करेंगे। उस शराब में (नशा न होगा, इसलिए उसके पीने से) बक-बक न होगी और न कोई बेहूदा बात (अक़्ल व संजीदगी के ख़िलाफ़ निकलेगी)।'

यह छीना-झपटी हँसी-मज़ाक़ के तौर पर होगी क्योंकि वहाँ किसी के लिए कुछ भी किसी चीज़ की कमी न होगी। दोस्तों में छीन-झपट कर खाने से मज़ा दो गुना हो जाता है जिसे एक साथ मिलकर रहने वाले ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं।

जन्नतियों का कपड़ा-गहना

सूरः कहफ़ में इर्शाद फ़रमाया :

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ
عَمَلًا ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ
فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ

---

1. जैसा कि मुस्लिम की एक रिवायत में है कि जो जन्नत में आख़िर में पहुंचेगा, वह रुत्बे के एतबार से सबसे मामूली होगा।

مُتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ ط نِعْمَ الثَّوَابُ ط وَ حَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ط

इन्नल्लज़ी न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज़ीउ अज्र मन अह स न अ़ म ला। उला इ क लहुम जन्नातु अ़द्‌निन तजरी मिन तह्‌तिहिमुल अन्हारु युहल्लौ न फ़ीहा मिन असावि र मिन ज़ ह बिंव्व यल्बसू न सियाबन ख़ुज़्रम मिन सुन्दुसिंव्व इस्तबरक़। मुत्तकिई न फ़ीहा अ़लल अराइक। निअ़्मस्सवाब। व हसुनत मुर्त फ़ क़ा।

'बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किए तो ऐसे लोगों का बदला हम बर्बाद न करेंगे। जो अच्छे तरीक़े पर काम करें। ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग़ हैं, उनके नीचे नहरें जारी होंगी। उनको सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और ये लोग हरे रंग के कपड़े पहनेंगे जो सुन्दुस और इस्तब्रक़ के होंगे ओर वहां मुसहरियों पर तकिए लगाए बैठेंगे। क्या ही अच्छा बदला है और (जन्नत) क्या ही अच्छी आराम की जगह है।'

इस आयत में एक तो जन्नती बन्दों के कंगनों का ज़िक्र फ़रमाया कि उनको सोने के कंगन पहनाए जाएंगे। सूरः दह्‌र में फ़रमाया उनको चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे। दोनों आयतों को मिलाने से मालूम हुआ जन्नतियों के कंगन सोने के भी होंगे और चांदी के भी। दूसरे जन्नतियों के कपड़ों का ज़िक्र फ़रमाया कि सुन्दुस और इस्तब्रक़ के हरे कपड़े पहनेंगे। सुन्दुस बारीक रेशम को और इस्तब्रक़ मोटे रेशम को कहा जाता है यानी दोनों तरह के रेशम के कपड़े होंगे। ख़्वाहिश के मुताबिक़ बारीक और मोटे पेश कर दिए जाएंगे, जिस कपड़े को भी चाहेंगे पहन लेंगे।

मुफ़स्सिर बैज़ावी लिखते हैं कि दोनों क़िस्म के कपड़े का ज़िक्र फ़रमाया है ताकि मालूम हो जाए कि वहां नफ़्स की ख़्वाहिश और आँखों की लज़्ज़त के मुताबिक़ सब होगा। और यह जो फ़रमाया कि हरे रंग के कपड़े होंगे उसके बारे में मुफ़स्सिर बैज़ावी लिखते हैं 'हरे रंग को इसलिए चुना गया कि वह सब रंगों में बेहतर है और उसमें दूसरे रंगों के मुक़ाबले में ताज़गी

ज़्यादा मालूम होती है। और यह बात भी ज़िक्र के क़ाबिल है कि दूसरे रंगों का इंकार नहीं किया गया है। एक रंग का ज़िक्र है, बाक़ी रंगों के ज़िक्र से ख़ामोशी है। अगर बंदों की ख़्वाहिश होगी तो अल्लाह तआ़ला दूसरे रंगों के कपड़े भी इनायत फ़रमाएंगे।

सूरः हज में फ़रमाया :

إِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا وَّلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ.

इन्नल्ला ह युद्ख़िलुल्लज़ी न आ मनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन तजरी मिन तह्तिहल अन्हारु युहल्लौ न फ़ीहा मिन अ सावि र मिन ज़ ह बिंव्व लुअ्लुऔंव लिबासुहुम फ़ीहा हरीर।

'बेशक अल्लाह तआ़ला उन लोगों को बाग़ों में दाख़िल फ़रमायेगा जो ईमान लाये और नेक अ़मल किए। उन बाग़ों के नीचे नहरें जारी होंगी। उन लोगों को सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहाँ उन लोगों का लिबास रेशम का होगा।'

इस आयत से मालूम हुआ कि जन्नती सोने के कंगनों के अलावा मोतियों का ज़ेवर भी पहनेंगे।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मोमिन का ज़ेवर वहां तक पहुंचेगा जहां तक वुज़ू का पानी पहुंचता है।[1] मालूम हुआ कि हाथों पर ज़ेवर सिर्फ़ पहुंचे ही पर न होगा बल्कि जहां तक भी वुज़ू का पानी पहुंचता है, वहां तक होगा।

हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में जो कुछ है, उसमें से अगर इतनी-सी मिक़्दार (इस दुनिया में) ज़ाहिर हो जाएं जिसको एक नाख़ून उठा ले तो

1. मुस्लिम शरीफ़

इसकी वजह से आसमान व ज़मीन के दर्मियान जो कुछ है, रौनक़दार हो जाए और अगर जन्नतियों में से एक मर्द और (दुनिया की तरफ़) झांक ले जिसकी वजह से उसके कंगन ज़ाहिर हो जाएं तो सूरज की रोशनी को इस तरह बेनूर कर दे जैसे सूरज-सितारों की रोशनी को बेनूर कर देता है।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

सवाल : कंगन तो औरतों के हाथों में अच्छे लगते हैं, मर्दों पर भला क्या सजेंगे?

जवाब : किसी भी लिबास या ज़ेवर का सजना और सजाना हर जगह के रस्म पर तय होता है। दुनिया में अगरचे आमतौर से मर्द कंगन नहीं पहनते मगर जन्नत में ख़्वाहिश करके पहनेंगे और सभी को देखने में भले मालूम होंगे। घड़ी की चेन ही को ले लीजिए तरह-तरह की बनावट, चमक और सजावट वाली पहनी जाती है और मर्दों के हाथों में अच्छी लगती है बल्कि कुछ क़ौमों में तो ब्याह-शादी के मौक़े पर दूल्हा को कंगन पहनाते हैं और बिरादरी के सब लोग देख कर खुश होते हैं। चूंकि रिवाज है इसलिए सब की नज़र भी क़ुबूल करती है और सब के दिल में अच्छा समझते हैं और इस रिवाज पर इस क़दर अड़े हुए हैं कि शरीअ़त के मना करने का भी ख़्याल नहीं करते।

सवाल : पहुंचे से लेकर कोहनी तक ज़ेवर ही ज़ेवर होना भी तो अच्छा नहीं मालूम होता?

जवाब : यह भी दुनिया के रिवाज में बुरा मालूम होता है, वहां भी सबको पसंद आयेगा और ख़्वाहिश करके पहनेंगे। कुछ क़ौमों में यहां भी रिवाज है कि उनकी औरतें कुहनी तक चूड़ियां पहनती हैं जो उनकी पूरी क़ौम में पसंद की जाती है।

फ़ायदा: क़ुरआन मजीद में जन्नती के ज़ेवर के ज़िक्र में फ़रमाया है कि उनको ज़ेवर पहनाया जाएगा। *(युहल्लौ न फ़ीहा)* और लिबास के बारे में मुस्तक़्बिल (मुज़ारेअ़) का सेग़ा (यल्बसू न) लाया गया है

यानी वे खुद पहनेंगे। यह तरीक़ा इस बात के समझाने के लिए अपनाया गया है कि ज़ेवर तो उनको ख़ादिम लोग पहनाते हैं और लिबास जन्नती खुद पहनेंगे क्योंकि वह अपने हाथ से पहनना ठीक मालूम होता है। ख़ास तौर पर वह लिबास जो छिपाने की जगह को ढांकने के लिए हो।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में जो शख़्स दाख़िल होगा (हमेशा) नेमतों में रहेगा और (कभी) मुहताज न होगा। न उसके कपड़े पुराने होंगे और न जवानी फ़िना होगी।

—मुस्लिम

कपड़े न पुराने होंगे, न मैले होंगे, हां जब बदलने को जी चाहेगा तो बदल लेंगे लेकिन यह बदलना फटने या मैला होने की वजह से न होगा।

जन्नतियों के ताज

हज़रत अबू सईद खुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नतियों के सरों पर ताज होंगे जिनमें से मामूली मोती (की चमक) इतनी ज़्यादा होगी कि वह पूरब व पच्छिम के बीच (की ख़ाली जगह) को रौशन कर सकता है।[1] इन ताजों में से अगर मामूली मोती इस दुनिया में आ जाए तो पूरब से पच्छिम तक पूरी फ़िज़ा को रौशन कर दे।

जन्नतियों के बिछौने

सूरः रहमान में फ़रमाया :

مُتَّكِئِيْنَ عَلٰى فُرُشٍ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ○ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ○
فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ○

मुत्तकिई न अ़ला फ़ुरुशिम बताइनुहा मिन इस्तबरक़। व जनल

1. तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नतैनि दान। फ़ बि ऐई आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान।

'वे ऐसे फ़र्शों पर तकिया लगाये हुए होंगे जिनके अस्तर मोटे रेशम के होंगे और दोनों बाग़ों का फल नज़दीक होगा। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?'

इस्तब्रक़ मोटे रेशम को कहते हैं। इसके बारे में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि **उख़्बिर्तुम बिल बताइनि फ़ कैफ़ बिज़्ज़हाइर।** (यानी यह तो तुमको बिस्तरों के अस्तर यानी नीचे के कपड़े के बारे में ख़बर दी गयी है कि वह इस्तब्रक़ का होगा। पस इसी पर सोच लो कि उनके अबरे यानी ऊपर के कपड़े कैसे ख़ुबसूरत और ऊंचे होंगे।)

फिर सूरः रहमान के ख़त्म पर फ़रमाया :

مُتَّكِـِٔيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ۝ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ۝

मुत्तकिई न अ़ला रफ़रफ़िन ख़ुज़रिव्व अब्क़रीयिन हिसान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। तबारकस्मु रब्बि क ज़िल जलालि वल इकराम।

'वे लोग हरे रंग की चादरों पर (जो पलंग की तरह) बिस्तरों पर होंगी और अजीब ख़ूबसूरत बिछौनों पर तकिया लगायें होंगे। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। बरकत वाला है नाम तेरे रब का जो जलाल और इकराम वाला है।'

ऊपर की आयतों में बुलंद दर्जों वाले जन्नतियों के बिस्तरों का ज़िक्र था। इसलिए वहां फ़रमाया कि उनके बिस्तरों के अस्तर इस्तब्रक़ के होंगे और ऊपर के अब्रों का ज़िक्र छोड़ दिया ताकि अस्तर पर सोच करके समझ लें। यहां कम दर्जे वाले बिस्तरों का ज़िक्र है जिनमें अस्तर का ज़िक्र नहीं है। ऊपर ही के कपड़ों को बता दिया है।

सूरः ग़ाशियः में फ़रमाया :

فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ وَّأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ۝

फ़ीहा सुरुरुम मर्फ़ूअ़तुंव्व अक्वाबुम मौज़ूअ़तुंव्व नमारिक़ु मस्फ़ूफ़तुंव्व ज़राबिय्यु मब्सूसः।

'उसमें ऊंचे-ऊंचे तख़्त हैं और रखे हुए आबख़ोरे हैं और बराबर-बराबर लेगा हुए गद्दे हैं और सब तरफ़ क़ालीन फैले पड़े हैं।'

सूरः वाक़िअः में 'अस्हाबुल यमीन' की नेमतों के ज़िक्र में फ़रमाया है, *'व फ़ुरुशिम मर्फ़ूअः'* (ऊंचें-ऊंचे बिछौनों में होंगे)। इसकी तफ़सीर में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि इन बिछौनों की बुलंदी इतनी है जैसे आसमान व ज़मीन के बीच फासला है, जो पांच सौ वर्ष की दूरी है। —तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नतियों के तख़्त

सूरः वाक़िअः में इर्शाद है :

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝

वस्साबिक़ूनस्साबिक़ून। उलाइ कल मुक़र्रबून। फ़ी जन्नातिन्नईम। सुल ल तुम मिनल अव्वलीन। व क़लीलुम मिनल आख़िरीन। अ़ला सुरुरिम मौज़ूनतिम मुत्तकिई न अ़लैहा मु त क़ाबिलीन।

'और सबक़त (आगे बढ़ना) ले जाने वाले, वे (तो) सबक़त ले जाने वाले हैं। वे मुक़र्रबीन (ख़ास) हैं वे नेमत के बाग़ों मे होंगे। उनकी बड़ी जमाअ़त अगले लोगों में से और थोड़े लोग पिछले लोगों में से होंगे। (सोने

के तारों से) बुने हुए तख़्तों पर तकिए लगाए आमने-सामने बैठे होंगे।'

सूरः तूर में *'मुत्तकिईन अ़ला सुरुरिम मस्फ़ूफ़ः'* फ़रमाया है यानी सफ़ों के तरीक़े पर बराबर-बराबर बिछे हुए तख़्तों पर तकिए लगाये बैठे होंगे और ये सफ़ें आमने-सामने होंगी जैसा कि *'मुतक़ाबिलीन'* से ज़ाहिर है। सुरुरिन 'सरीर' (यानी तख़्त) की जमा (बहुवचन) है। 'मौज़ूनतिन' यानी मंसूजतिन यानी वे तख़्त बुने हुए होंगे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया कि उनकी बनावट सोने के तारों से होगी। जैसे दुनिया में कुर्सियां बांस वग़ैरह की खपचियों से या चारपाइयां बानों से बुनी हुई होती हैं। मुफ़स्सिर सुद्दी ने फ़रमाया, **'मर्मूलतुन बिज़्ज़ह बि वल्लुअ् लूअ्'** (यानि वे तख़्त सोने से और मोतियों से बने हुए होंगे)।

—इब्ने कसीर

सूरः हदीद में इर्शाद है :

اِنَّ اَصۡحٰبَ الۡجَنَّةِ فِیۡ شُغُلٍ فٰکِهُوۡنَ○ هُمۡ وَاَزۡوَاجُهُمۡ فِیۡ ظِلٰلٍ عَلَی الۡاَرَآئِكِ مُتَّکِـُٔوۡنَ○

इन्न न अस्हाबल जन्नाति फ़ी शुग़ुलिन फ़ाकिहून। हुम व अज़्वाजुहुम फ़ी ज़िलालिन अ़लल अराइकि मुत्तकिऊन।

'बिला शुब्हा जन्नती उस दिन अपने कामों में ख़ुशदिल होंगे। वे और उनकी बीवियाँ पर्दे वाले सजे-सजाए तख़्तों पर तकिए लगाए होंगे।' 'अराइकि' अरीकतुन' की जमा (बहुवचन) है। अरीका उस सजे-सजाए तख़्त को कहते हैं, जिस पर परदा लटका हुआ हो। साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी 'अराइक' की तफ़्सीर में लिखते हैं, यानी **'अस्सुरुरुल हिजाल'** (दुल्हन को बिठाने के लिए जो परदा डालकर ख़ास कोनों की सजावट करते हैं, इसमें जो तख़्त सजा करके बिछाया जाता है, वह अरीका है)। दोनों आयतों को मिलाने से मालूम हुआ कि जन्नतियों के बैठने के लिए तख़्त भी होंगे और अराइक भी होंगे। यहाँ यह बात ग़ौर के क़ाबिल है कि क़ुरआन शरीफ़ में 'सुरुरिम

मु त क़ाबिलीन' भी फ़रमाया है जिस में ख़ाली 'तख़्त' का ज़िक्र है। (यह सूरः आराफ़ और सूरः साफ़्फ़ात में है) और 'अ़ला सुरुरिम मौज़ूनतिन' भी फ़रमाया है जिसमें सुरूर की सिफ़त (गुण) 'मौज़ूनतिन' ब्यान हुई है। हो सकता है कि 'सुरुरिम मौज़ूनतिन' सिर्फ़ मुक़र्रबीन के लिए ख़ास हों और उनके अलावा दूसरे तख़्त आम जन्नत वालों के लिए हों और यह भी मुम्किन है कि सभी के लिए 'सुरुरिम मौज़ूनतिन' हों और एक जगह सिफ़त ज़िक्र कर देने पर बस कर लिया गया हो।

बहरहाल जैसे भी तख़्त हों अ़जीब व ग़रीब और पसंद और चाव के होंगे। उनकी खुबसूरती का अन्दाज़ा यहाँ नहीं लगाया जा सकता। यह जो फ़रमाया 'अ़ला सुरुरिम मुतक़ाबिलीन' के 'तख़्तों' पर आमने-सामने बैठेंगे', इसके बारे में मुफ़स्सिर इब्ने कसीर, हज़रत मुजाहिद (ताबई) से नक़ल फ़रमाते हैं कि *'ला यंज़ुरु बअ़्ज़ुहुम फ़ी क़फ़ा बअ़्ज़'* (यानी जन्नती आपस में एक दूसरे की पीठ न देखने पाएंगे) मतलब यह कि उठने-बैठने में और साथ देने और मज्लिस जमाने में किसी के पीछे बैठने का मौक़ा न होगा। वहां रहने-सहने का ढंग ऐसा होगा कि किसी को पीठ नज़र न आएगी। आपस में जब किसी को देखेंगे तो चेहरों ही पर नज़र पड़ेगी। मज्लिस में बैठेंगे तो दुनिया वालों की तरह (आगे-पीछे) न बैठेंगे। दुनिया में जगह की कमी है; वहां कमी न होगी और दूरी की बात सुन लेगा। साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी 'मुतक़ाबिलीन' की तफ़सीर में लिखते हैं, *'वस्फ़हूमुल्लाहु तआ़ला बिहुस्निल अ़शीरति व तहज़ीबिल अख़्लाक़ व सफ़ाइल मुअद्दतः* (यानी अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने जन्नतियों के अच्छे रहन-सहन, खुलूस, मुहब्बत और संवरे अख़्लाक़ का ज़िक्र फ़रमाया है) उनकी मुहब्बत और मेल-जोल की ख़ूबी इसको गवारा न करेगी कि कोई एक-दूसरे के पीछे बैठे।

विल्दान और ग़िल्मान

जन्नतियों की ख़िदमत के लिए ग़िल्मान व विल्दान होंगे जिनका ज़िक्र क़ुरआन शरीफ़ में कई जगह आया है :

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ۝

व यतूफ़ु अ़लैहिम ग़िल्मानुल्लहुम क अन्नहुम लुअ्‌ लुउम मक्नून।

'और उनके पास (मेवे वग़ैरह लाने के लिए) ऐसे लड़के आएं-जाएंगे जो ख़ास उन्हीं की ख़िदमत के लिए होंगे (और बेइंतिहा ख़ूबसूरती की वजह से ऐसे होंगे कि) गोया वह हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं।

सूरः दह्र में इर्शाद है :

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ۝ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا۝

व यतुफ़ू अ़लैहिम विल्दानुम मुख़ल्लदून। इज़ा रऐतहुम हसिबतहुम लुअ्‌लुअम मंसूरा।

'और उनके पास (ख़िदमत के लिए) ऐसे लड़के आएं-जाएंगे जो हमेशा एक ही हाल पर रहेंगे। ऐ मुख़ातब! जब तू उनको देखे तो यों समझे कि मोती हैं जो बिखेर दिए गये हैं।'

'विल्दान' 'वल्द' की जमा है और 'ग़िल्मान' 'ग़ुलाम' की जमा है। दोनों लगभग एक ही मानी रखते हैं। जन्नतियों के जोड़े के लिए अल्लाह तआ़ला ने 'हूर ईन' पैदा फ़रमायी हैं जो है तो मुअन्नस (स्त्री) मगर उनकी पैदाइश इन्सानों की पैदाइश की तरह नहीं है बल्कि अल्लाह ने सिर्फ़ अपनी क़ुदरत से उनको पैदा फ़रमाया है। इसी तरह जन्नतियों की ख़िदमत के लिए ग़िल्मान व विल्दान यानी ऐसे लड़के पैदा फ़रमाये हैं (या जन्नत में दाख़िले से पहले पैदा फ़रमायेंगे), जो हमेशा नौ-उम्र रहेंगे। यह भी बिल्कुल नयी मख़्लूक़ (जीव) है जिनकी पैदाइश इन्सान की तरह नहीं हुयी बल्कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी क़ुदरत से पैदा फ़रमाया है। साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी उसकी तफ़सीर करते हुए लिखते हैं, *'ला यमूतू न वला यहरमून वला य त ग़ैयरू न यब्क़ू न अ ब दन अ़ला शक्लिल विलदान (यानी वे लड़के न मरेंगे, न बूढ़े होंगे, न उनकी नौ-उम्री में तब्दीली आयेगी (बल्कि) हमेशा लड़कों की शक्ल पर रहेंगे।* इब्ने कसीर लिखते हैं, *'ला*

तज़ीदु अअ़्मारुहुम अ़न तिल्कस्सिन्न' (यानी उनकी उम्रें लड़कपन की उम्र से आगे न बढ़ेंगी)

सूरः दह्र की तफ़सीर में विल्दान की तश्रीह करते हुए साहिबे मज़्हरी लिखते हैं कि *'यन्शहुमुल्लाहु तआ़ला लिख़िदमतिल मुअ्मिनीन औ विल्दानुल क फ़ रति यज्अ़लुहुमुल्लाहु ख़ुद्दामा लहिलल जन्नतः'* (यानी उन विल्दान को अल्लाह तआ़ला मोमिनों की ख़िदमत के लिए पैदा फ़रमाएंगे या ये काफ़िरों की नाबालिग़ औलाद मोमिनों की ख़िदमत के लिए पैदा फ़रमाएंगे या ये काफ़िरों की नाबालिग़ औलाद होगी जिनको अल्लाह तआ़ला जन्नतियों का ख़िदमतगार बना देंगे)।

इससे मालूम होगा कि विल्दान के बारे में दो क़ौल हैं। एक यह कि नयी मख़्लूक़ होगी। दूसरे यह कि दुनिया में काफ़िरों के जो नाबालिग़ लड़के मर गये हैं, वे *'विल्दानुम मुख़ल्लदून'* होंगे जो जन्नतियों की ख़िदमत में लगा दिए गये हैं। लेकिन इस दूसरे क़ौल की खोज-पड़ताल करने वालों ने इसे माना नहीं है, चुनांचे ब्यानुल क़ुरआन के लिखने वाले लिखते हैं कि 'विल्दान' यानी 'ग़िल्मान' के बारे में तर्जीह देने के क़ाबिल क़ौल, जिसको ख़ाज़िन ने सही और हक़ को उस ख़्याल के तहत शामिल किया है; यह है कि वे एक मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं जैसे हूर और ग़िल्मान में मानी विलादत (पैदा होने) के नहीं और हिकमत उनके ख़ादिम बनाने में सिर्फ़ सुकून व ख़ुशी है बिना शहवत (जोश)। —तफ़सीर वाक़िअः (ब्यानुल क़ुरआन)

सूरः तूर में ग़िल्मान को 'लुअ् लुउम मक्नून' कहा है यानी वे लड़के हुस्न और चमक में और रंग की सफ़ाई-सुथराई में उस मोती की तरह होंगे जो सीपी में छिपा रहता है, जिस पर धूल-मिट्टी का गुज़र नहीं होता और सूरः दह्र में 'लुअ् लुउम मंसूरा' फ़रमाया है यानी वे लड़के बिखरे हुए मोतियों की तरह होंगे, क्योंकि ख़िदमत में लगे हुए हर तरफ़ चल फिर रहे होंगे। हज़रत हसन ﷺ और क़तादा ﷺ से रिवायत है कि कुछ सहाबा ﷺ ने प्यारे नबी ﷺ से अ़र्ज़ किया कि ख़ादिम (की ख़ूबसूरती) का यह हाल है तो मख़्दूम (जिसकी ख़िदमत की जाए) का क्या हाल होगा? इसके जवाब में हुज़ूर

अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया कि मख़्दूम को ख़ादिम पर उस जैसी बड़ाई होगी जैसी चौदहवीं के चाँद को तमाम सितारों पर होती है। —तफ़सीरे मज़हरी

जन्नत में पाकीज़ा बीवियां

सूरः आले इमरान में फ़रमाया :

لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خَالِدِيْنَ فِيْهَا
وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ○ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ○

लिल्लज़ीनत्तक़ौ इन द रब्बिहिम जन्नातुन तजरी मिन तह्तिहल अन्हारु ख़ालिदी न फ़ीहा व अज़्वाजुम मुतह्हरतुंव्व रिज़्वानुम मिनल्लाह। वल्लाहु बसीरुम बिल इबाद।

'ऐसे लोगों के लिए जो अल्लाह से डरते हैं, उनके रब के पास ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं। इनमें वे हमेशा रहेंगे और (इनके लिए वहाँ पाकीज़ा बीवियां हैं और अल्लाह की ख़ुशी है और अल्लाह तआला बंदों को देखते हैं।)

'पाकीज़ा बीवियां' यानी ऊपरी मैल-कुचैल और भीतरी बुराइयां (धोखा-फ़रेब) से और हर तकलीफ़ देने वाली आदत और बात से और हैज़ व निफ़ास वग़ैरह से बिल्कुल पाक व साफ़ होंगी। —इब्ने कसीर

हज़रत मुजाहिद (ताबई) ने पाक बीवियों की तफ़सीर करते हुए फ़रमाया कि वे हैज़ से और पाख़ाना-पेशाब से और बल्ग़म व थूक से और मनी से और बच्चा जनने से पाक होंगी (जब जनना न होगा तो उसके बाद निफ़ास का ख़ून भी न आयेगा)। हज़रत क़तादा (ताबई) ने फ़रमाया कि *'मुतह्हरतुम मिनल अज़ा वल मासिम'* (यानी वह तकलीफ़ देने वाली हर चीज़ से और नाफ़रमानी करने से पाक होंगी)। —इब्ने कसीर

ख़ुलासा यह है कि जन्नत की बीवियां ऊपरी और भीतरी ऐबों से पाक होंगी। उनको न थूक आएगा; न पाख़ाना की ज़रूरत होगी; न पेशाब

की; न मनी निकलेगी; न हैज़ आएगा; न निफ़ास होगी; न बदन और कपड़े पर मैल होगा। इस ज़ाहिरी सुथरेपन और पाकीज़गी के साथ उनकी आदतें और उनके अख़्लाक़ भी बहुत-ही अच्छे होंगे। दिल व जान से शौहरों पर न्यौछावर होंगी। उनमें नाफ़रमानी का नाम नहीं बदतमीज़ी करने का काम नहीं, धोखा-धड़ी, दग़ा, बेवफ़ाई से ख़ाली होंगी। दुनिया की औरतें, जिनका ईमान पर ख़ात्मा होगा, मोमिनों की बीवियां होंगी और उनके अलावा हूरे ईन में से बीवियां दी जाएंगी। दोनों क़िस्म की बीवियां हुस्न व जमाल और भीतरी-बाहरी अच्छाई, बेहतर अख़्लाक़ और प्रेम व मुहब्बत में और सफ़ाई-सुथराई में (जिसका ब्यान अभी हुआ) बहुत ही ऊंची होंगी।

जन्नती बीवियों की ख़ूबसूरती और दूसरी बातें

सूरः वाक़िअः में फ़रमाया :

إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ○ عُرُبًا أَتْرَابًا لِّأَصْحَابِ الْيَمِينِ ○

इन्ना अन्शअ्ना हुन्न न इन्शाअन फ़ ज अ़ल्ना हुन्न न अब्कारन उरुबन अत्राबल लि अस्हाबिल यमीन।

'हमने इन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है यानी हमने उनको ऐसा बनाया है कि वे कुंवारियाँ हैं, (शौहरों के लिए) प्यारी हैं; (उनकी) हम- उम्र हैं। (यह सब जो ऊपर ब्यान हुआ) अस्हाबुल यमीन के लिए है।'

दुनिया वाली मोमिन औरतें जिस हाल और जिस उम्र में भी दुनिया से इंतिक़ाल कर गयी हों बहरहाल जन्नत में जवान उम्र और कुंवारी बना दी जाएंगी और वहां के हुस्न व जमाल से सजा दी जाएंगी। हदीस शरीफ़ में है कि एक बड़ी बी आंहज़रत ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल। दुआ फ़रमा दीजिए अल्लाह जल्ल शानुहू मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे। आपने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ फ़्लां की मां! जन्नत में बुढ़िया दाख़िल न होगी। यह सुनकर वह रोती हुई रवाना हो गयीं। आंहज़रत ﷺ ने हाज़िर लोगों से फ़रमाया उससे कह दो कि मेरा मतलब यह

नहीं है कि तुम जन्नत में न जाओगी बल्कि बात यह है कि वह जन्नत में दाख़िल होते वक़्त बूढ़ी न होगी (क्योंकि उस वक़्त जवानी दे दी जाएगी)। बिला शुब्हा अल्लाह तआला फ़रमाते है कि **'इन्ना इन्शअ्‌ ना हुन्न न इन्शाअन फ़ जअलनाहुन्न न अब्कारा'**[1] आंहज़रत ﷺ ने दिल्लगी के तौर पर ऐसे लफ़्ज़ फ़रमाये जिससे वह दूसरा मतलब समझ गयीं। कभी-कभी आंहज़रत ﷺ मज़ाक़ भी फ़रमा लेते थे जिसका एक वाक़िआ यह भी है जो ऊपर ब्यान हुआ। मज़ाक में भी आप सही और सच बात फ़रमाते थे। **'अब्कारा'** बिक्र की जमा है, यानी कुंवारी जब भी उनके शौहर क़रीब होंगे, हम-बिस्तर होंगे तो हमेशा कुवांरी ही पाएंगे। —मिश्कात

साहिबे ब्यानुल क़ुरआन लिखते हैं कि क़रीब होने के बाद फिर कुंवारी हो जाएंगी[2]। 'उरुबन' हसीन व जमील और प्यारी औरतें। यह 'उरूब' की जमा है। 'अतराबन' हम उम्र हमजोली औरतें मुराद हैं इसका वाहिद (एक वचन) तुरुब है। जिस तरह मर्द सब तीस-तैंतीस वर्ष के होंगे, (जिसका मतलब ब्यान हो चुका है) इसी तरह उनकी बीवियां भी उन्हीं की उम्र की होंगी। क़द और जिस्म में और उम्र में बराबर होंगी, दानों तरफ़ से दिल मिले हुए होंगे। शक्ल व सूरत में एक तरह के होंगे। दुनिया में लोग अपने से कम उम्र वाली लड़की से शादी करना पसंद करते हैं क्योंकि कमसिन में हुस्न व जमाल और प्यार का अन्दाज़ ज़्यादा होता है लेकिन चूंकि जन्नती बीवियों में (चाहे वे दुनिया की मोमिन औरतें हों, चाहे वे हूरे ईन हों) हुस्न व जमाल और प्यार की हालत पूरी होंगी। इसलिए हमउम्री महबूब बनाने में रुकावट न डालेगी बल्कि ज़्यादा प्यार व मुहब्बत की वजह बन जाएगी। शौहर व बीवी बचकानापन से भी ख़ाली होंगी और बुढ़ापे से भी बचे रहेंगे। हमेशा दर्मियानी उम्र रहेगी जिसमें समझ-होश पूरा होता है। मुफ़स्सिर सुद्दी ने 'अतराबा' की तफ़सीर बताते हुए इर्शाद फ़रमाया कि वे आपस में अख़्लाक़ और प्यार व मुहब्बत के एतबार से

1. शमाइले तिर्मिज़ी
2. इसी तरह अबू सईद से दुर्र में भी रिवायत आती है

बराबर होंगी। बहनों की तरह मेल से रहेंगी। आपस में जलन, कपट नाम को न होगा। सौकनों वाला तनाव और लड़ाई व दुश्मनी न होगी।

—इब्ने कसीर

सूरः साद में फ़रमाया :

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ۝

व इन्दहुम क़ासिरातुत्तरफ़ि अतराबा।

'और उनके पास निगाह को रोक रखने वाली हमउम्र बीवियां होंगी। यानी उनकी नज़र सिर्फ़ शौहरों ही पर पड़ेगी और दिल बस शौहरों ही से लगा हुआ होगा। शौहरों के अलावा किसी ग़ैर की तरफ़ ज़रा नज़र उठाकर भी न देखेंगी।

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि सरवरे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि एक सुबह या एक शाम को अल्लाह के रास्ते में निकल जाना सारी दुरिया से और जो कुछ दुनिया में है, उस सबसे बेहतर है। अगर जन्नत की औरतों में से कोई औरत ज़मीन की तरफ़ को झांक ले तो आसमान व ज़मीन के दर्मियान जो कुछ है उसको रौशन कर दे और ख़ुश्बू से भर दे। फिर फ़रमाया कि हां, उसके सर का दुपट्टा सारी दुनिया से और दुनिया में जो कुछ है, उस सबसे बेहतर है। —बुख़ारी शरीफ़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक जन्नत की औरत की पिंडली की सफ़ेदी सत्तर जोड़ों के अन्दर से नज़र आएगी यहां तक कि पिंडली के अन्दर का गूदा तक नज़र आएगा और यह (बात) इसलिए (हक़) है कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाते हैं, *'क अन्ननहुन्नल याक़ूतु वल मर्जान'* (वे औरतें इतनी चमकीली और रंग की साफ़ होंगी कि गोया वे याक़ूत हैं या मर्जान हैं) फिर फ़रमाया कि याक़ूत तो ऐसा पत्थर है कि अगर तू उसमें लड़ीं दाख़िल कर दे और फिर उसको साफ़ तरीक़े पर देखना चाहे तो पत्थर के बाहर देख सकता है। —तिर्मिज़ी

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ

ने *'क अन्न न हुन्नल याक़ूतु वल मर्जान'* की तश्रीह फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि जन्नती मर्द (जो जन्नती औरत का शौहर होगा) उसके चेहरे पर नज़र डालेगा तो उसका गाल आईने से ज़्यादा साफ़ नज़र आएगा और जन्नती औरत पर जो मोती होंगी, उनमें यह मामूली मोती पूरब-पच्छिम के दर्मियान को रौशन कर सकता है और उस पर सत्तर जोड़े होंगे (जो इतने साफ़-सुथरे और चमकदार होंगे) कि उनके अन्दर को नज़र पार हो जाएगी और जन्नती मर्द उसके कपड़ों के बाहर से उसकी पिंडली का गूदा देख लेगा। —अहमद, इब्ने हब्बान, बैहक़ी

हूरे ईन

'हूर' जमा है 'हौराउ' की। यानी वह औरत जिसकी आंख की सफ़ेदी और स्याही ख़ूब गहरी और तेज़ हो। 'ईन' जमा है ऐनाउ की यानी वह औरत जिसकी आखें बड़ी-बड़ी और चौड़ी हों। क़ुरआन पाक ने अपनी क़ुदरत से जन्नती मर्दों की बीवी के लिए पैदा फ़रमाया है। ये औरतें दुनिया वाली मोमिन औरतों के अलावा होंगी। सूरः दुख़ान में फ़रमाया है **'वज़व्वज्नाहुम बिहुरिन ईन'** (और हूरे ईन के साथ हम उनका ब्याह कर देंगे)।

सूरः रहमान में फ़रमाया :

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ، فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ○ حُوْرٌ مَقْصُوْرَاتٌ فِى الْخِيَامِ○ فَبِاَىِّ اٰلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ○ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ○ فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ○

फ़ीहिन्न न ख़ैरातुन हिसान। फ़बिऐइ आलाइ रबिब्कुमा तुकज़्ज़िबान। हुरुम मक़्सूरातुन फ़िल ख़ियाम। फ़बिऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। लम यत्मिस्हुन्न न इन्सुन क़ब्लहुम व ला जान्न। फ़बिऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान।

'इन (बहिश्तों के मुहल्लों) में ख़ूबसूरत, अच्छे अख़्लाक़ वाली औरतें होंगी, सो ऐ इन्स व जिन्न! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को

झुठलाओगे? ये हूरें ख़ेमों में हिफ़ाज़त से होंगी। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? (वह जिनके लिए चुनी जाएंगी) उनसे पहले किसी इंसान या जिन्न ने उनको न छूआ होगा। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?

सूरः वाक़िअः में फ़रमाया :

وَحُوْرٌ عِيْنٌ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُوءِ الْمَكْنُوْنِ۝

व हुरुन ईनुन क अम्सालिल्लुअ्लुइल मक्नून।

'और उनके लिए हूरे ईन होंगी छिपे रखे हुए मोती की तरह।'

सूरः साफ़्फ़ात में फ़रमाया :

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرَاتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ۝

व इन्दहुम क़ासिरातुत्तर्फ़ि इनुन क अन्न न हुन्न न बैज़ुम मक्नून।

'और उनके पास नीचे निगाह रखने वाली बड़ी-बड़ी आंखों वाली औरतें होंगी (जिनकी रंगत इतनी साफ़ होगी कि) गोया अण्डे छिपे हुए।'

पहली आयत में छिपे मोती की तरफ़ फ़रमाया यानी वे औरतें सफ़ाई और सफ़ेदी में ताज़ा मोतियों की तरह चमकती होंगी और दूसरी आयत में छिपे हुए अंडे से तश्बीह (उपमा) दी गई हैं जो धूल-गर्द और दाग़ से बिल्कुल हिफ़ाज़त में रहता है। मुफ़स्सिर इब्ने कसीर (रह०) ने *'महसूनुन ला तम्सकुहुल् ऐदी'* (यानी वह अंडा जो हाथों में पहुंचने से पहले हिफ़ाज़त से होता है)

मुफ़स्सिर बैज़ावी लिखते हैं कि अंडे से तश्बीह जो दी गई है, वह तश्बीह सफ़ाई में भी है और ज़र्दी मिली हुई सफ़ेदी में भी है। जिस सफ़ेदी में किसी क़दर ज़रदी मिलाई गई हो वह बदन का बेहतरीन रंग माना गया है।

हूरे ईन की एक ख़ास दुआ और शौहरों से हमदर्दी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रहमत के नबी ﷺ ने फ़रमाया कि बेशुब्हा रमज़ान के लिए शुरू साल से ख़त्म साल तक जन्नत सजायी जाती है। पस रमज़ान का पहला दिन होता है तो अ़र्श के नीचे हूरे ईन पर जन्नत के पत्तों की हवा चलती है जिसका असर लेकर वे यों दुआ़ करती हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! अपने बन्दों से हमारे लिए ऐसे शौहर मुक़र्रर फ़रमा जिनसे हमारी आंखें ठंढी हों और हमसे उनकी आंखें ठंढी हों।

हज़रत मुआ़ज़ ﷺ का यह ब्यान है कि रसूल अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया में जो कोई औरत अपने शौहर को तकलीफ़ देती है तो हूरे ईन में से उसकी बीवी दुनिया की बीवी से कहती है कि तेरा बुरा हो। उसको तकलीफ़ न दे क्योंकि वे तेरे पास कुछ दिनों तक का मेहमान है। बहुत जल्द तुझ से जुदा होकर हमारे पास पहुंच जाएगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़

इन दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि जिस तरह जन्नत और उसकी दूसरी नेमतें इस वक़्त मौजूद व मख़्लूक़ हैं हूरे ईन भी मौजूद व मख़्लूक़ हैं। हाफ़िज़ मुंज़िरी (रह०) ने 'अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब' में उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) से एक लम्बी रिवायत नक़ल किया है जिसमें यह भी है कि हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! (जन्नत) में दुनिया वाली (मोमिना) औरतें अफ़्ज़ल होंगी या हूरे ईन? आंहज़रत ﷺ ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया वाली (मोमिन) औरतें हूरे ईन से इतनी अफ़ज़ल होंगी जैसे (लिहाफ़) का ऊपर का कपड़ा उसके अंदर वाले अस्तर से बेहतर होता है। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह किस वजह से? आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया, इसलिए कि दुनिया वाली औरतें नमाज़ पढ़ती हैं और रोज़े रखती हैं और अल्लाह (अ़ज़्ज़ व जल्ल) की इबादत करती हैं। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! कभी-कभी एक औरत दुनिया में (एक के बाद एक) दो या तीन या चार मर्दों से निकाह कर लेती हैं फिर उसको मौत आ जाती है। वह जन्नत में दाख़िल होगी और उसके शौहर भी उसके साथ होंगे तो (इस शक्ल में) उनमें से

उनका शौहर कौन होगा? आंहज़रत ﷺ ने जवाब दिया कि ऐ उम्मे सलमा (रज़ि०)! उसको अख़्तियार दे दिया जाएगा जिसके साथ चाहे रहे। इसलिए वह उसको अख़्तियार कर लेगी जो उनमें अख़्लाक़ के एतबार से सबसे अच्छा होता था और कहेगी। ऐ रब! दुनिया के अंदर यह उन सबसे ज़्यादा मेरे साथ अख़्लाक़ वाला था, उसी को मेरा जोड़ा बना दीजिए। यह फ़रमा कर आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ उम्मे सलमा! अच्छा अख़्लाक़ दुनिया व आख़िरत की भलाई ले उड़ी।

—मुंज़री

यह रिवायत सनद के एतबार से मज़बूत नहीं है। कुछ रिवायतों में यह भी मिलता है कि दुनिया में जिस औरत ने शौहर के बाद निकाह कर लिया वह जन्नत में आख़िरी शौहर को मिलेगी। जो भी शक्ल हो। बहरहाल यह हक़ है कि जन्नती मर्दों और औरतों में कोई भी ऐसा न होगा जो बग़ैर जोड़े के रह जाए। कुछ लोग अकसर पूछते फिरते हैं कि दो शौहरों वाली का क्या होगा? इस मसले पर ईमान तो टिका हुआ है नहीं जो बहस बनाया जाए। अल्लाह तआला जो तज्वीज़ फ़रमाएंगे। सबके हक़ में बेहतर ही होगा।

जन्नत में हूरों का तराना

हज़रत अली मुर्तज़ा ؓ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में हूरे ईन के जमा होने की एक जगह है जिसमें आवाज़ बुलंद करती हैं और यह कहती हैं कि हम हमेशा रहने वाली हैं। कभी हलाक न होंगी; हम हमेशा आराम व चैन में रहेंगी; कभी मुहताज न होंगी। हम (अपने शौहरों से हमेशा) खुश रहेंगी; कभी नाराज़ न होंगी। उसके क्या कहने जो हमारे लिए है और हम उसके लिए हैं (यह तराना ऐसे मन-भावन अंदाज़ में गाती हैं कि) ऐसी आवाज़ें मख़्लूक़ में से किसी ने नहीं सुनी हैं।

—तिर्मिज़ी

मर्दों के लिए बहुत-सी बीवियां

जन्नत में एक मर्द को कितनी बीवियां मिलेंगी। इसके बारे में बहुत सी रिवायतें आयी हैं। बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है, **'लि कुल्लिम रिइ मिन्हु ज़ौजतानि मिनल हुरिल ईन।'** (यानी हूरे ईन में से हर शख़्स को दो बीवियां होंगी)।

हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह०) ने फ़त्हुलबारी में इस पर तफ़सील से बहस की है और बहुत-सी रिवायतें जमा की हैं। मुस्नद अहमद की एक रिवायत नक़ल की है कि मामूली जन्नती के लिए दुनिया की बीवियों के अलावा बहत्तर बीवियां होंगी। अबू यअ़ला की एक रिवायत में है कि दो बीवियां बनी आदम में से होंगी और बहत्तर बीवियां वे होंगी जिन्हें अल्लाह तआ़ला (उस दुनिया में) पैदा फ़रमाएंगे।

इब्ने माजा (रह०) की एक रिवायत में है कि बहत्तर बीवियां हूरे ईन से और बहत्तर दुनिया की औरतों में से मिलेंगी। इनके अलावा और भी रिवायतें साहिबे फ़त्हुलबारी ने नक़ल की हैं। इस सिलसिले की रिवायत सनद के एतबार से मज़बूत भी है और कमज़ोर भी है। कुल मिलाकर यह ज़रूर मालूम होता है कि जन्नतियों को दूसरी नेमतों के साथ ज़्यादा बीवियों की नेमत से भी नवाज़ा जाएगा और ऐसा तो कोई भी न होगा जिसको कम-से-कम दो बीवियां न मिलें। बाक़ी रही तादाद में इख़्तिलाफ़ की बात, तो यह अ़मल की बड़ाइयों के एतबार से सोचा जा सकता है यानी यों कह सकते हैं कि अपने-अपने भले कामों के हिसाब से दर्जों में जो इख़्तिलाफ़ होगा। दर्जों के इस इख़्तिलाफ़ की वजह से बीवियों की तादाद भी मुख़्तलिफ़ होगी।

कुछ लोग यह भी सवाल किया करते हैं कि एक मर्द को बहुत-सी बीवियां मिलेंगी तो एक बीवी को कितने मर्द मिलेंगे? यह सवाल बहुत बेहूदा है। क्योंकि मर्द के लिए बहुत-सी बीवियां होना नेमत है और औरत के लिए बहुत-से शौहर होने शरीफ़ों, शर्मदारों और ग़ैरत वालों के नज़दीक बहुत ऐब की बात है। जबकि ऐसी बेइज़्ज़ती दुनिया में नहीं की जाती तो जन्नत में

कौन गवारा करेगा? जन्नती औरतों की ख़ूबी क़ुरआन शरीफ़ में **'क़ासिरातुत्तर्फ़'** ब्यान हुई है। वे नज़रें पस्त रखने वाली और अपने शौहर के अलावा दूसरे पर नज़र डालने से बचने वाली होंगी। यों कहिए कि वह तो एक ही शौहर पर राज़ी होंगी और दिल व जान से निछावर हो रही होंगी और यहां के लोग ख़्वाहमख़्वाह उनको ज़्यादा शौहर दिलाने की वकालत कर रहे हैं। जबकि एक शौहर से जी भरा हुआ है और दिल लगा हुआ है तो दूसरे की ज़रूरत ही क्या? अफ़सोस कि नादान एतराज़ करने वालों ने जन्नती औरतों को गंदी औरतों पर और यूरोप की नई तहज़ीब वाली हरजाई लौंडियों पर सोच लिया। चाहिए तो यह था कि जन्नती औरतों के ढंग पर अपने यहां की औरतों को परदे में बिठाकर **'क़सिरातुत्तर्फ़'** और **'मक़्सूरातुन फ़िलख़ियाम'** बनाते। मगर नादानों ने हूरों से पर्दे का सबक़ लेने के बजाए उल्टा यह किया कि जन्नती औरत के लिए बेइज़्ज़ती तज्वीज़ कर दी।

मर्दाना ताक़त

जन्नतियों की बीवियां, चूंकि बहुत-सी होंगी। इसलिए उनकी मर्दाना ताक़त भी बढ़ा दी जाएगी। हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷺ से रिवायत है कि किताब वालों (यानी यहूदियों) में से एक शख़्स रसूले ख़ुदा ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने सवाल किया कि ऐ अबुल क़ासिम! क्या आप फ़रमाते हैं कि जन्नत वाले खाएंगे और पिएंगे? आंहज़रत ﷺ ने फ़रमायाः हां, क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, एक जन्नती को खाने-पीने और (बीवियों से) हम-बिस्तर होने में सौ मर्दों की ताक़त दे दी जाएगी। यह सुनकर उस यहूदी ने सवाल किया कि जो खाता- पीता है, उसको (पेशाब-पाख़ाने की) ज़रूरत होती है। इसलिए जब जन्नती खाएं, पीएंगे तो पेशाब-पाख़ाना की ज़रूरत होती होगी। हालांकि जन्नत ऐसी जगह नहीं है जिसमें कोई चीज़ तकलीफ़ देने वाली हो। (फिर वहां पेशाब-पाख़ाना-जैसी घिनौनी चीज़ कैसे होगी) इसके जवाब में आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया (खाने-पीने के बाद) उनको पाख़ाना-पेशाब करने की ज़रूरत न होगी, बल्कि

भरे हुए पेट को ख़ाली करने की ज़रूरत पसीने से (पूरी) हो जाया करेगी (यानी) उनके खाने से मुश्क की तरह पसीना बहेगा जिससे पेट हल्का हो जाएगा। —अहमद, नसाई

इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नतियों को सौ मर्दों की ताक़त दे दी जाएगी। तिर्मिज़ी शरीफ़ में भी इस मज़मून की एक हदीस रिवायत की गयी है, जिसको इमाम तिर्मिज़ी ने सही हदीस फ़रमाया है और साथ ही हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷺ की हदीस का भी हवाला दिया है (जो अभी गुज़र चुकी है)। जन्नत चूंकि पाकीज़ा जगह है और वहां के मर्द व औरत सब पाकीज़ा होंगे। इसलिए हर तरह गंदगी और घिनौनी चीज़ से बचे होंगे। जिस तरह पेशाब-पाख़ाना की ज़रूरत न पड़ेगी, उसी तरह मनी भी न निकलेगी। जमउल फ़वाइद में मुहद्दिस तब्रानी ने मुअ्जमुल कबीर से नक़ल किया है कि जन्नती हम-बिस्तर भी होंगे (लेकिन) न तो ख़ास अंग में कमज़ोरी आएगी; न शहवत ख़त्म होगी और न मर्द की मनी निकलेगी; न औरत की।

इस दुनिया की लज़्ज़तों में कदूरतें[1] मिली हुई हैं। जन्नत की लज़्ज़त में चूंकि कदूरत न होगी, इसलिए बिस्तर और जिस्म को लथेड़ देने वाला माद्दा[2] निकलेगा नहीं और इंज़ाल के वक़्त जो लज़्ज़त यहां महसूस होती है, उससे कहीं ज़्यादा बढ़-चढ़कर बग़ैर इंज़ाल के जन्नत में लज़्ज़त महसूस होगी और चूंकि जन्नत में हर चीज़ नफ़्स की ख़्वाहिश के मुताबिक़ होगी, इसलिए जब तक जी चाहेगा मुबाशरत (हम-बिस्तरी करेंगे और जब जी चाहेगा छोड़ देंगे)।

फ़ायदा : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि मोमिन जब जन्नत में बच्चे की ख़्वाहिश करेगा तो उसका हमल और बच्चे के पैदाइश और उसकी (पूरी) उम्र जो (जन्नत वालों के लिए) मुक़र्रर है यानी 30 साल या 33 साल, यह सब कुछ ख़्वाहिश के मुताबिक़ एक घड़ी में हो जाएगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़

---

1. गंदगी, गदला पन 2. पदार्थ

कुछ विद्वानों ने फ़रमाया कि जन्नत में जिमाअ् होगा (मगर) औलाद न होगी। ताऊस, मुजाहिद और इब्राहीम नख़ूइ (रह०) से यही रिवायत है। इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने ऊपर की हदीस नक़ल करके फ़रमाया जन्नती औलाद की ख़्वाहिश न करेगा। हज़रत अबू रिज़ीन अक़ीली ﷺ से रसूले खुदा ﷺ ने इर्शाद रिवायत किया है कि जन्नत में जन्नतियों की औलाद न होगी।

—तिर्मिज़ी

मतलब यह है कि जन्नत हर ख़्वाहिश के पूरा होने की जगह है। अगर जन्नतियों में से किसी की ख़्वाहिश औलाद होने के लिए होगी तो ख़्वाहिश का क़ानून के मुताबिक़ पूरा हो जाना ज़रूरी होगा, लेकिन चूंकि जन्नत में बच्चों के पैदा होने का सिलसिला मुनासिब न होगा इसलिए जन्नत वालों के दिलों मे अल्लाह तआ़ला औलाद की ख़्वाहिश पैदा न फ़रमायेंगे। रही यह बात कि जन्नत में बच्चों का पैदा होना क्यों मुनासिब नहीं है, इसकी वजह वहीं मालूम हो सकेगी।

जन्नत का बाज़ार जिसमें दिदारे इलाही होगा और हुस्न व जमाल में बढ़ोतरी होगी

हज़रत सईद बिन मुसैयिब (रह०) ताबई का ब्यान है कि मैंने हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से मुलाक़ात की। उन्होंने कहा कि मैं अल्लाह से सवाल करता हूँ कि मुझे और तुझे जन्नत के बाज़ार में इकट्ठा कर दे। हज़रत सईद (रह०) ने पूछा, क्या जन्नत में बाज़ार (भी) होगा? हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने फ़रमाया कि हां रसूले ख़ुदा ﷺ ने मुझे बताया है कि बिला शुब्हा जन्नती जब जन्नत में दाख़िल होंगे। तो अपने-अपने आमाल के मुताबिक़ दर्जों और मंज़िलों में उतरेंगे। उसके बाद दुनिया के दिनों में से जुमा के दिन की मिक़्दार में उनको इजाज़त दी जाएगी कि अपने रब की ज़ियारत करें। पस वे अपने परवरदिगार की ज़ियारत करेंगे। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला अपने अ़र्श को ज़ाहिर फ़रमा देंगे और अपना दीदार

कराने के लिए जन्नत के एक बड़े बाग़ में ज़ाहिर होगी (जो लोग दीदारे इलाही के लिए जमा होंगे) उनके लिए नूर के, और मोतियों के, और याक़ूत के, और ज़बरजद के, और सोने के, और चांदी के मिंबर बिछाए जाएंगे (और रुत्बों के हिसाब से जन्नती उन पर बैठेंगे, नेमतों और नवाज़िशों की वजह से उनमें कोई घटिया और कम दर्जे का तो) न होगा (लेकिन) रुत्बे के एत्बार से जो सबसे कमतर होगी, मुश्क और ज़ाफ़रान के टीलों पर बैठेंगे और ये टीलों पर बैठने वाले कुर्सियों पर बैठने वालों को अपने से बेहतर ख़्याल न करेंगे (क्योंकि अगर ऐसा ख़्याल आ गया कि हम घटिया हैं तो रंज होगा और जन्नत में रंज का नाम नहीं)।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या हम अपने परवरदिगार को देखेंगे? फ़रमाया, हां सूरज को और चौदहवीं रात के चाँद को देखने में कोई शुब्हा रखते हो? हमने अ़र्ज़ किया, नहीं। फ़रमाया, इसी तरह तुम अपने परवरदिगार को देखने में कोई शक न करोगे और उस मज्लिस में कोई शख़्स ऐसा बाक़ी न होगा, जिससे आमने-सामने होकर अल्लाह तआ़ला की बात-चीत न हो। यहां तक कि हाज़िर लोगों में से कुछ को मुख़ातब करके अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ फ़्लां के बेटे फ़्लां! क्या तुझे याद है कि फ़्लां दिन तू ने ऐसा-ऐसा कहा था। इस तरह अल्लाह तआ़ला उसकी कुछ वादा-ख़िलाफ़ियां याद दिला देंगे जो उसने दुनिया में की थीं। वह शख़्स अ़र्ज़ करेगा कि ऐ परवरदिगार! क्या आपने मुझे बख़्श नहीं दिया? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे हां, मैंने तुझे बख़्श दिया और मेरी बख़्शिश की फैलाव की वजह से आज तू इस रुत्बे को पहुंचा है? सब लोग इसी हाल में होंगे कि एक बादल आएगा और उन पर छा जाएगा और ऐसी ख़ुश्बू बारसाएगा कि उस-जैसी ख़ुश्बू उन्होंने कभी न पायी होगी। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होगा कि उठो और उस चीज़ की तरफ़ चलो जो मैंने इ़ज़्जत को बढ़ाने के लिए तैयार की है और जो तुमको पसंद आये उसको ले लो। फिर हम एक बाज़ार में आएंगे, जिसको फ़रिश्तों ने घेर रखा होगा। उस बाज़ार में वे चीज़ें होंगी कि उन-जैसी चीज़ों को न आंखों

ने देखा, न कानों ने सुना, न दिलों पर उनका गुज़र हुआ। बस जिस चीज़ को हमारा जी चाहेगा, हमारे लिए उठा लिया जाएगा (और यह सब कुछ बग़ैर मोल- तोल और बग़ैर क़ीमत के होगा) क्योंकि वहां न बेचा जाएगा, न ख़रीदा जाएगा।

बात आगे जारी रखते हुए इर्शाद फ़रमाया कि इस बाज़ार में जन्नती एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे। ऊंचे रुत्बे का (एक आदमी) किसी कम रुत्बे वाले से मुलाक़ात करेगा हालांकि अपने-अपने एहसास के मुताबिक़ उनमें कोई कमतर न होगी, तो उस शख़्स को बुलंद मर्तबे वाले का लिबास बहुत पसंद आ जाएगा लेकिन अभी उसकी बात ख़त्म न होने पायेगी कि उसका लिबास उस बुलंद मर्तबा वाले के लिबास से अच्छा मालूम होने लगेगा और यह इस वजह से कि जन्नत में यह मौक़ा नहीं रखा गया है कि कोई शख़्स (ज़रा भी) रंजीदा हो। इसके बाद हम अपने-अपने मकानों को रवाना हो जाएंगे। वहां पहुंचने पर हमारी बीवियां हमारा स्वागत करेंगी और **'मरहबा व अहलन'**[1] के बाद कहेंगी कि तुम उस हुस्न व जमाल को लेकर वापस हुए हो जो कि उस वक़्त न था, जबकि तुम हमसे जुदा हुए थे। हम जवाब में कहेंगे कि आज हमने अपने परवरदिगार के साथ हमनशीनी[2] की इज़्ज़त हासिल की है और हम इसी शान के साथ आने के लायक़ हैं।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि सरवरे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में एक बाज़ार है जिसमें जन्नती हर जुमा को जाया करेंगे वहां उत्तरी हवा चलेगी जो जन्नतियों के चेहरों और कपड़ों को ख़ुश्बू से भर देगी और उनके हुस्न व जमाल में बढ़ोतरी हो जाएगी। पस वे ख़ूब ज़्यादा हसीन व जमील होकर अपने घर वालों के पास वापस जाएंगे। घर के लोग कहेंगे कि क़सम है ख़ुदा की, हमसे जुदा होने के बाद तुम्हारा हुस्न व जमाल बढ़ गया। इसके बाद वे कहेंगे कि ख़ुदा की क़सम! हमारे बाद तुम्हारे हुस्न व जमाल में (भी) बढ़ोतरी हो गयी है। —तिर्मिज़ी शरीफ़

1. मुबारक हो, मुबारक हो 2. साथ बैठना

जन्नत की सबसे बड़ी नेमत दीदारे इलाही

हज़रत सुहैब ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएगा तो (उनसे) अल्लाह तआ़ला सवाल फ़रमाएंगे। क्या तुम और कुछ चाहते हो जो मैं तुमको दूं? वे अ़र्ज़ करेंगे कि (हमको और क्या चाहिए, जो आप ने दिया है बहुत कुछ है) क्या आपने हमारे चेहरे रौशन नहीं कर दिए? और क्या आप ने हमको जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमा दिया? और क्या हमको दोज़ख़ से निजात नहीं दे दी? हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने फ़रमाया कि उनके इस जवाब के बाद पर्दा उठाया जाएगा, इसलिए वह अल्लाह तआ़ला का दीदार करेंगे। जो कुछ उनको दिया जा चुका होगा। उस सबसे बढ़कर उनके नज़दीक अपने परवरदिगार की तरफ़ देखना प्यारा होगा। इसके बाद आंहज़रत ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़रमायी :

للذين احسنوا الحسنیٰ وزیادہ

'लिल्लज़ी न अहसनुल हुस्ना व ज़ियादः' —मुस्लिम शरीफ़

हज़रत अबू रिज़ीन अक़ीली ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या क़ियामत के दिन हम में से हर शख़्स अपने रब को इस तौर पर देखेगा कि (इतनी भारी भीड़ में एक साथ सबके देखने की वजह से) किसी के देखने में फ़र्क़ न आये? आप ने फ़रमाया, हां, (हर शख़्स) ख़ूब अच्छी तरह से देखेगा। मैंने अ़र्ज़ किया कि दुनिया की मख़्लूक़ में इसकी कोई मिसाल है? आप ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ अबू रिज़ीन! क्या चौदहवीं के चांद को तुम में से हर शख़्स (पूरी भीड़ में) बे रोक-टोक नहीं देखता है? मैंने कहा, हां देखता है। फ़रमाया, चांद अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ में से एक मख़्लूक़ है, (जिसको एक साथ सब देख लेते हैं और किसी के देखने में कोई रुकावट नहीं होती) और अल्लाह (तो) बहुत ही बुज़ुर्गतर और बड़ा है (उसको एक ही वक़्त में सब क्यों न देख सकेंगे)। —अबूदाऊद

हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया

कि इस बीच में कि जन्नती अपनी नेमतों में होंगे, अचानक ऊपर से एक नूर रौशन होगा। चुनांचे सरों को ऊपर उठाएंगे। अचानक क्या देखते हैं कि उन के ऊपर परवरदिगार आ़लम (जल्ल ल मज्दुहू) हैं। इन हज़रात के देखने पर रब तबारक व तआ़ला फ़रमाएंगे कि **'अस्सलामु अलैकुम या अहलल जन्नः'** (ऐ जन्नतियो! तुम पर सलाम हो!) बात आगे बढ़ाते हुए फ़रमाया कि (क़ुरआन में) जो अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने **'सलामुन क़ौलम मिर्रब्बिरहीम'** फ़रमाया है। इसमें इसी का ज़िक्र है। इसके बाद फ़रमाया कि (सलाम के बाद) अल्लाह तआ़ला शानुहू जन्नतियों को और जन्नती अपने परवरदिगार को देखते रहेंगे यहां तक कि अल्लाह तआ़ला परदे में हो जाएंगे और उसका नूर बाक़ी रह जाएगा।

आंहज़रत ﷺ ने यह फ़रमाया कि जन्नती जब तक अपने रब को देखते रहेंगे, दूसरी किसी भी नेमत की तरफ़ ध्यान न देंगे। —इब्ने माजा

हज़रत इब्ने उमर ؓ से रिवायत है कि रूसले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया है कि जन्नत में रुत्बे के एतबार से मामूली शख़्स वह होगा जो अपने बाग़ों और तख़्त और बीवियों और ख़िदमतगुज़ारों और (दूसरी) नेमतों को एक साल की दूरी में फैला हुआ देखेगा (यानी ये चीज़ें इतनी दूरी में फैली हुई होंगी कि दुनिया में कोई आदमी चीज़ों को देखने के लिए निकले तो हज़ार वर्ष तक चलता रहे) और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे बड़े रुत्बे का जन्नती वह होगा जो सुबह-शाम दीदार इलाही का शर्फ़ हासिल करेगा। इसके बाद आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़रमाई **'वुजूहुंय्यौ म इज़िन नाज़िरः इला रब्बिहा नाज़िरः'** (बहुत से चेहरे उस दिन (तर-व-ताज़ा) खुश होंगे, अपने रब की तरफ़ देखते हुए। —तिर्मिज़ी शरीफ़

यह सूरः क़ियामः की आयत है। इसकी तिलावत से दीदारे इलाही को क़ुरआन शरीफ़ से साबित करना मक़सूद है। एक हदीस में है कि मामूली दर्जे का जन्नती अपने मुल्क को दो हज़ार साल की दूरी में फैला हुआ देखेगा और उसके आख़िरी हिस्से को (बेतकल्लुफ़ बिल्कुल) उसी तरह देखता होगा जिस तरह उसके क़रीब वाले हिस्से को देखता होगा। —अत्तग़ीब वत्तर्हीब

हदीस शरीफ़ में छोटे और ऊंचे जन्नती के मर्तबे का ज़िक्र है, उसके दर्मियान में और ख़ुदा जाने कितने दर्जे होंगे और मर्तबों के एतबार से कितनी नेमतों से मालामाल होंगे। दीदारे इलाही तो सब ही जन्नतियों को नसीब होगा, लेकिन सबसे ज़्यादा एज़ाज़ व इकराम जिसका होगा उसको यह सआदत नसीब होगी कि सुबह-शाम दीदारे इलाही से नवाज़ा जाएगा। (जअ़ल्नीयल्लाहु मिन्हुम)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला को दुनिया में नहीं देख सकते, जन्नत में मोमिन लोग देखेंगे और काफ़िर व मुनाफ़िक़ इस नेमत से महरूम होंगे। जिससे बढ़कर कोई नेमत नहीं। यहां यह जान लेना ज़रूरी है कि अल्लाह तआ़ला जिस्म और जेहत (दिशा) से पाक है। अल्लाह को जन्नती देखेंगे। यह हक़ है। जिस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है लेकिन कैफ़ियत (स्थिति) मालूम नहीं।

गुनाहगार मुसलमानों का दोज़ख़ से निकल कर जन्नत में दाख़िल होना

भारी तादाद में वे मुसलमान भी दोज़ख़ में चले जाएंगे जो बड़े-बड़े गुनाह करते थे। यह तो ज़रूरी नहीं है कि बड़े गुनाहों का हर करने वाला दोज़ख़ में ज़रूर ही जाए क्योंकि अल्लाह तआ़ला बहुतों को बख़्श देंगे और दोज़ख़ में डालने से बचाए रखेंगे और यह भी ज़रूरी नहीं है कि सब ही बख़्श दिए जाएं क्योंकि रिवायत से साबित होता है कि बहुत से गुनाहगार मुसलमान दोज़ख़ में जाएंगे और फिर सज़ा भुगतकर दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे। जन्नत से कभी कोई न निकलेगा; न निकाला जाएगा और दोज़ख़ से गुनाहगार मुसलमानों को निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। और दोज़ख़ में सिर्फ़ मुश्रिक व काफ़िर ही रह जाएंगे जो हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ○

वल्लज़ी न क फ़ रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ क अस्हाबुन्नार। हुम फ़ीहा ख़ालिदून।

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि दोज़ख़ की पीठ पर पुलसिरात रख दी जाएगी और रसूलों में से अपनी उम्मत को लेकर सबसे पहले मैं उसके ऊपर से गुज़रूंगा। उस दिन रसूलों के सिवा कोई न बोलता होगा और उनका बोलना उस दिन यह होगा कि 'अल्लाहुम्म म सल्लिम-सल्लिम' (ऐ अल्लाह! सलामत रख, सलामत रख) और दोज़ख़ में सादान[1] के कांटों की तरह बड़ी-बड़ी संडासियां होंगी जिनकी बड़ाई का अल्लाह ही को इल्म है (इन संडासियों के सर ज़ंबूर की तरह मुड़े हुए होंगे और दोज़ख़ से निकल-निकल कर) लोगों को उनके (बद) आमाल की वजह से उचक रही होंगी। पस उनके उचकने की वजह से कोई तो (पुलसिरात से दोज़ख़ में गिर कर) हलाक हो जाएगा। (ये काफ़िर होंगे) और कोई कट कर दोज़ख़ में गिर जाएगा फिर बाद में निजात पाएगा (ये गुनाहगार मुसलमान होंगे)। यहां तक कि जब अल्लाह तआला अपने बंदों के दर्मियान फ़ैसला फ़रमा कर फ़ारिग़ हो जाएगा और **'ला इला ह इल्लल्लाह'** की गवाही देने वालों को दोज़ख़ से निकालने का इरादा फ़रमाएगा, तो फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि जो शख़्स अल्लाह की इबादत करता था उसको निकाल लो। चुनांचे ऐसे लोगों को फ़रिश्ते निकाल लेंगे और उनको सज्दों के निशानों से पहचानेंगे (क्योंकि) अल्लाह तआला ने दोज़ख़ की आग पर यह हराम फ़रमा दिया है कि सज्दे के निशान को जलाए (जो माथे पर होते हैं)।

चुनांचे ये लोग दोज़ख़ से निकाल लिए जाएंगे, जो जल-भुन चुके होंगे। दोज़ख़ से निकाल कर उन पर आबे-हयात (जीव-अमृत) डाल दिया जाएगा जिसकी वजह से वे इस तरह उग जाएंगे जैसे बहते हुए पानी के घास-तिन्के पर (जल्द-से-जल्द) बीज उग जाता है।[2] मतलब यह है कि

1. सादान अरब मे एक पेड़ का नाम है
2. मिश्कात शरीफ़

अचानक उनकी हालत बदल जाए और एक दम भले-चंगे ख़ूबसूरत हो जाएंगे।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में दाख़िल हो जाएंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जिसके दिल में राई के दाने के बरादर (भी) ईमान हो, उसको दोज़ख़ से निकाल लो। चुनांचे निकाल लिए जाएंगे जो जलकर कोयला हो चुके होंगे, इसलिए उनको फिर नहरुल हयात[1] में डाल दिया जाएगा। —अल-हदीस बुख़ारी व मुस्लिम

एक हदीस में है कि वे हज़रात मोती की तरह नरुहल हयात से निकल कर जन्नत में दाख़िल होंगे। —बुख़ारी व मुस्लिम

हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि गुनाह करने की सज़ा में बहुत-से लोगों को (दोज़ख़ की आग) के झुलसने का असर पहुंचेगा। फिर अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमा देंगे। पस उनको 'जहन्नमी' कहा जाएगा।

इन हज़रात को जहन्नमी कहना इनकी बुराई करने के लिए न होगा बल्कि अल्लाह तआला की रहमत और मेहरबानी याद दिलाने के लिए होगा ताकि दोज़ख़ की तकलीफ़ को याद करके जन्नत के लुत्फ़ में बढ़ोतरी होती रहे।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि दोज़ख़ में दाख़िल होने वालों में से दो शख़्स बहुत चीख़ व पुकार शुरू कर देंगे। अल्लाह तआला हुक्म देंगे कि इनको निकाल लो। फिर उनसे

---

1. नहरुल हयात यानी ज़िंदगी की नहर। पहली रिवायत से मालूम हुआ कि उन पर 'आबे हयात' डाला जाएगा और इस रिवायत से मालूम हुआ कि वे 'नहरुल हयात' में डाल दिए जायेंगे। लेकिन यह इख़्तिलाफ़ हक़ीक़ी नहीं है। दोनों बातें एक ही हैं, जब नहर में पूरा ग़ोता दे दिया जाएगा तो उनका नहर में डाला जाना भी सही हुआ और उन पर पानी का पड़ना भी सही हुआ।

फ़रमायेंगे कि तुम दोनों इतना क्यों चीख़ रहे हो? वे अ़र्ज़ करेंगे कि हमने इसलिए किया कि आप हम पर रहम फ़रमाएं। अल्लाह जल्ल ल शानुहू का इर्शाद होगा कि बेशक मेरी रहमत तुम्हारे लिए यह है कि दोज़ख़ में जिस जगह थे वहीं (वापस) जाकर अपनी जानों को डाल दो। चुनांचे उनमें से एक अपनी जान को दोज़ख़ में डाल देगा, जिस पर अल्लाह तआ़ला दोज़ख़ को ठंढा और सलामती वाला बना देगा और दूसरा शख़्स रह जाएगा जो अपने को दोज़ख़ में न डालेगा। उससे अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे कि तुझे इस चीज़ से किसने रोका कि तू अपने को दोज़ख़ में न डाले? वह अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब! मैं उम्मीद करता हूं कि जब मुझे आप ने दोज़ख़ से निकाल दिया तो अब उसमें वापस न करेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे-जा! तेरी उम्मीद पूरी कर दी गई। इसके बाद दोनों शख़्स अल्लाह की रहमत से जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे। —तिर्मिज़ी

जन्नत में सबसे आख़िर में जाने वाला

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ का ब्यान है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं उस शख़्स को अच्छी तरह जानता हूं जो सबसे आख़िर में दोज़ख़ से निकलेगा और जन्नत में जाने वालों में सबसे आख़िरी होगा। यह शख़्स पेट के बल घिसटता हुआ दोज़ख़ से निकलेगा। पस हक़ तआ़ला फ़रमाएगा कि जा जन्नत में दाख़िल हो जा। वह जन्नत के पास आएगा तो उस को ऐसा मालूम होगा कि भरी हुई है (कहीं जगह नहीं)। अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब! मैंने इसे भरी हुई पाया (जगह तो नहीं फिर अंदर कैसे जाऊं?) हक़ तआ़ला फ़रमाएगा कि जा जन्नत में दाख़िल हो जा। (तुझे) दुनिया के बराबर जगह दी गई और उसी क़दर दस गुना ज़मीन और दी! यह सुनकर वह अ़र्ज़ करेगा। क्या आप मुझ से मज़ाक़ फ़रमाते हैं, हालांकि आप (सबके) बादशाह हैं। (हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ का ब्यान है कि) मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा (कि यह फ़रमाकर) हँसे, यहां तक कि आप की आख़िरी दाढ़ें भी ज़ाहिर हो गयीं (कि बेचारा इतनी भारी देन को, जिसका उसने कभी सपना भी

नहीं देखा था, मज़ाक़ समझा) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम ﷺ के माहौल में यह बात कही जाया करती थी कि यह शख़्स सबसे कम दर्जे का जन्नती होगा, जो सबसे आख़िर में दाख़िल होगा और दुनिया और दुनिया जैसी दस गुना जगह पा ली। —बुख़ारी शरीफ़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से आख़िरी जन्नती के दाख़िले का वाक़िआ इससे ज़्यादा तफ़सील के साथ भी रिवायत किया गया है। फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे आख़िरी शख़्स जो जन्नत में जाएगा। वह वह होगा जो दोज़ख़ से निकलने की हिम्मत करके (कभी) पांव चलेगा और कभी गिर पड़ेगा और कभी उसको आग की लपट झुलसेगी। पस जब (गिरता-पड़ता) दोज़ख़ से निकल कर आगे बढ़ जाएगा तो उसकी तरफ़ देखकर कहेगा कि बरकत वाला है (वह सबसे बड़ा ख़ुदा) जिसने मुझे तुझ से निजात बख़्शी। सच तो यह है कि अल्लाह तआला ने मुझे वह नेमत दी है जो पहलों-पिछलों में से किसी को भी न दी। इसके बाद एक पेड़ के क़रीब कर दीजिए ताकि उसका साया हासिल करूँ और पानी पीयूं (जो इसके नीचे बह रहा है)। हक़ तआला फ़रमाएगा- अजब नहीं, अगर मैं तुझे यह नेमत दे दूं तो इसके बाद तो और कोई दरख़्वास्त करने लगे? वह अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब! नहीं ऐसा न करूंगा और अहद करेगा कि इसके बाद और कुछ न मांगूंगा। और अल्लाह उसको मजबूर समझेगा (कि इस वक़्त इसकी नीयत यही है, मगर निबाह न सकेगा) क्योंकि उसको वह चीज़ नज़र आएगी, जिसके बिना सब्र ही न कर सकेगा, चुनांचे पानी पीएगा। इसके बाद उनकी नज़र के सामने दूसरा पेड़ बुलंद कर दिया जाएगा जो पहले पेड़ से बहुत अच्छा होगा। पस (उस पर नज़र पड़ेगी तो) अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब! मुझे उसके नज़दीक पहुंचा दे, ताकि उसके नीचे बहने वाला पानी पीयूं और उसके साए में बैठूं (और उसके अलावा आप से कुछ न मांगूंगा)। इर्शाद होगा कि ऐ इब्ने आदम! क्या तुने मुझ से अ़हद नहीं किया था कि और कुछ न मागूंगा अजब नहीं, अगर मैं तुझे उसके क़रीब कर दूं तो फिर और कुछ मांगने लगे? पस वह अ़हद करेगा कि इसके सिवा और कुछ न मांगूंगा। अल्लाह तआला उसको मजबूर समझेगा क्योंकि इसके बाद उस चीज़ पर

नज़र पड़ेगी जिसके बग़ैर सब्र ही न कर सकेगा, पस उस पेड़ के पास अल्लाह तआला पहुंचा देगा और वह उसका साया लेगा और पानी पीएगा। इसके बाद जन्नत के दरवाज़े के क़रीब एक पेड़ उसके सामने कर दिया जाएगा जो पहले दोनों पेड़ों से ज़्यादा ख़ूबसूरत होगा। पस वह अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब! मुझे उस पेड़ के क़रीब पहुंचा दीजिए ताकि उसका साया ले लूं और पानी पी लूं। इसके सिवा आप से कुछ न मांगूंगा। इर्शाद होगा कि ऐ इब्ने आदम! क्या तूने मुझसे पक्का वायदा न किया था कि और कुछ न मांगूंगा। अ़र्ज़ करेगा कि बेशक! ऐ रब अ़हद किया था (मगर इस बार और सवाल पूरा कर दीजिए) इसके सिवा आपसे कुछ न मांगूंगा और हक़ तआला उसे मजबूर समझेगा क्योंकि उसे वह चीज़ नज़र आयेगी जिसके बग़ैर सब्र कर ही न सकेगा। चुनांचे उस पेड़ के क़रीब कर दिया जाएगा, जब उसके क़रीब हो जायेगा तो जन्नतियों की आवाज़ें सुनाई देंगी। (फिर ललचाएगा) और कहेगा कि ऐ रब! मुझे इसके अदंर पहुंचा दीजिए। इर्शाद होगा कि ऐ इब्ने आदम! आख़िर तेरा सवाल करना किसी तरह ख़त्म भी होगा? क्या तू इससे राज़ी होगा कि तुझे दुनिया के बराबर और दे दूं और उसके साथ उतना ही और दे दूं। वह अ़र्ज़ करेगा- आप मुझसे मज़ाक़ फ़रमा रहे हैं हालांकि आप रब्बुल आ़लमीन हैं? इस वाक़िए को ब्यान करते हुए हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ हँसे और (हाज़िर लोगों से) फ़रमाया कि तुम मुझ से मालूम नहीं करते कि मैं किस लिए हँसा? हाज़िर लोगों ने अ़र्ज़ किया फ़रमाइए आप क्यों हँसे? फ़रमाया कि इसी तरह अल्लाह के रसूल ﷺ (इस हदीस को ब्यान करके) हँसे थे। सहाबा किराम ﷺ ने पूछा! ऐ अल्लाह के रसूल! आप क्यों हँसे? फ़रमाया कि अल्लाह के हँसने पर मुझे हँसी आ गई जबकि बन्दे ने कहा क्या आप मुझ से मज़ाक़ फ़रमाते हैं हालांकि आप पूरी दुनिया के रब हैं। हक़ तआला फ़रमाएंगे कि तुझ से मज़ाक़ नहीं करता (बल्कि वाक़ई तुझे इतना ही दिया) जो भी चाहूं उस पर क़ुदरत रखता हूं। —मुस्लिम शरीफ

यह वक़िआ क़रीब-क़रीब इसी तरह हज़रत अबू हुरैरः ﷺ और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है। हज़रत अबू हुरैरः ﷺ की रिवायत के

आख़िर में है कि (वह शख़्स बार-बार अपने अहद तोड़कर आख़िरकार जन्नत में दाख़िल हो जाएगा तो) अल्लाह तआला फ़रमाएंगे जो तेरी आरज़ू हो, ले ले (वह आरज़ूएं ज़ाहिर करता जाएगा और मुराद पाता जाएगा) यहां तक कि उसकी आरज़ूएं ख़त्म हो जाएंगी। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएंगे कि (और) तमन्ना कर ले। (देख) फ़्लां नेमत रह गयी है (उस) की आरज़ू कर ले (और) फ़्लां चीज़ (बाक़ी है उस) की तमन्ना कर ले। उस तरह से अल्लाह तआला उसकी आरज़ूएं याद दिलाते जाएंगे (और हर आरज़ू पूरी करते रहेंगे) यहां तक कि (जब) आरज़ूएं ख़त्म हो जाएंगी (तो) अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जो कुछ तूने तमन्नाएं की हैं, वह सब तुझको दिया और इतना ही और दिया। —मिश्कात (बुख़ारी और मुस्लिम से)

हज़रत अबू सईद ﷺ की रिवायत में है कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू उससे फ़रमाएंगे कि तूने जो-जो तमन्नाएं की हैं, वह सब तुझे दिया और उसका दस गुना और दिया। इसके बाद अपने (जन्नती) घर में दाख़िल होगा और हूरे ईन में से उसकी दो बीवियां उसके पास आएंगी और कहेंगी **'अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्या क लना व अह्याना लक'** सब तारीफ़ अल्लाह के लिए हैं जिसने हमारे लिए तुझको जन्नत दी। हमेशा की ज़िंदगी बख़्श दी और जिसने हमको तेरे लिए ज़िंदगी दी। वह शख़्स कहेगा कि जो कुछ मिला है किसी को भी नहीं मिला। —मिश्कात (मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा सबसे आख़िरी शख़्स जो जन्नत में जाएगा, उससे परवरदिगार फ़रमाएंगे कि खड़ा हो, जन्नत में दाख़िल हो जा। यह सुनकर वह शख़्स गुस्से की तरह मुंह बनाकर कहेगा कि (जन्नत में जगह है कहां कि दाख़िल हो जाऊँ?) मेरे लिए आपने कुछ बाक़ी रखा भी है? अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे कि हां (तेरे लिए बहुत कुछ है) जितने फैलाव और दूरी पर सूरज निकलता या छिपता है, उतना ले ले।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे कम दर्जे का जन्नती वह होगा जिसके लिए अस्सी हज़ार

ख़ादिम और बहत्तर बीवियां होंगी और इसके लिए मोतियों और ज़बरजद व याक़ूत से बनाया हुआ एक क़ुब्बा होगा जिस की लंबाई- चौड़ाई इतनी होगी जितनी जाबिया की जगह से सन्आ तक की दूरी है। (इन दोनों जगहों में मीलों का फ़ासला है।)
—तिर्मिज़ी

हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूल अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा मैं उस शख़्स को जानता हूं जो सबसे आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा और सबसे आख़िर में दोज़ख़ से निकलेगा। उस शख़्स को क़ियामत के दिन लाया जाएगा और कहा जाएगा कि उसके सामने उसके छोटे गुनाह पेश करो और बड़े गनाहों को छिपाए रखो, चुनांचे उसके छोटे गुनाह उस पर पेश किए जाएंगे और कहा जाएगा कि तूने फ़्लां दिन फ़्लां-फ़्लां अ़मल किया था। वह इक़रार करेगा, इंकार न कर सकेगा और (दिल-ही-दिल में) डरता रहेगा कि कहीं मेरे बड़े गुनाह न पेश कर दिए जाएं। पस उससे कहा जाएगा कि (जा) तेरे लिए हर गुनाह के बदले एक नेकी है (यह बख़्शिश और नवाज़िश देखकर) वह कह उठेगा कि ऐ रब! मैंने और बहुत से गुनाह किए हैं जिनको यहां (फ़िहरिस्त में) नहीं देख रहा हूं (उनके बदले में भी एक-एक नेकी मिलना चाहिए)। रावी ब्यान करते हैं कि मैंने रसूले ख़ुदा ﷺ को देखा कि इस बात को ब्यान फ़रमाते हुए आपको हँसी आ गयी जिससे आपकी मुबारक दाढ़ें ज़ाहिर हो गयीं। —मुस्लिम शरीफ़

ऊपर की रिवायतों से छोटे दर्जे के जन्नती की इ़ज़्ज़त और शान मालूम हुई। जब छोटे जन्नती की यह इ़ज़्ज़त है और उसके लिए नेमत व दौलत की यह नवाज़िश है तो छोटे से बड़े तक कि दर्मियान के दर्जे वालों को और ख़ुद सबसे बड़े जन्नती को क्या मिलेगा, इसका अंदाज़ा इसी से कर लिया जाए। छोटे जन्नती को जो कुछ मिलेगा उसका ज़िक्र रिवायतों में कहीं इस तरह है कि एक हज़ार साल की दूरी में अपनी नेमतों को देखेगा और किसी रिवायत में है कि दो हज़ार साल की दूरी में उसकी नेमतें फैली हुई होंगी और किसी रिवायत में है कि छोटे जन्नती को जो जगह मिलेगी, पूरी दुनिया और दुनिया जैसी दस गुनी जगहों के बराबर होगी और किसी

रिवायत में दूसरे तरीक़े पर छोटे जन्नती की नेमतों का ज़िक्र फ़रमाया है। यह सब सामने के लोगों को समझाने के लिए है। यह फ़र्क़ हक़ीक़तों का फ़र्क़ नहीं है। हाज़िर लोगों में से उनकी अपनी क़ाबलियत के मुताबिक़ जिन लफ़्ज़ों में मुनासिब समझा, इर्शाद फ़रमा दिया और यह भी कहा जा सकता है कि 'छोटे' से 'छोटा' मुराद नहीं है, बल्कि चूंकि छोटे दर्जे में भी बहुत से दर्जे होंगे, इसलिए रुत्बे के मुताबिक़ फैली जगह और बड़ी नेमतों का ज़िक्र फ़रमा दिया।

यहां यह बात ज़िक्र के क़ाबिल है कि दुनिया वाले दुनिया में जो कुछ देखते और समझते हैं, उसी के मुताबिक़ समझाने ही से कुछ ग़ैब की चीज़ों का अन्दाज़ा लगा सकते हैं। इसलिए उन्हीं की बात-चीत के अंदाज़ जिसे हर शख़्स अपनी आंख से देख लेगा और ख़्याल व गुमान और अंदाज़ से बढ़कर और सुनकर जो कुछ समझता था, उससे कहीं ज़्यादा पाएगा।

खुदा का इंकार करने वाले जन्नत के फैलाव के बारे में शक करते हैं और पूछते हैं कि इतनी बड़ी जन्नत कहां होगी? हम कहते हैं कि वह तो अब भी मौजूद है और अल्लाह पाक की मख़्लूक़ है। हमारे बाप हज़रत आदम (عليه السلام) उस में रह कर आए हैं। कम इल्म और कम नज़र लोगों के इल्म और पकड़ के दायरे से अगर बाहर है ते क्या अजब है। अभी तो इल्म व अक़्ल का दावा करने वाले तो पूरी ज़मीन की मख़्लूक़ का पता नहीं चला सके और सैयारों (ग्रहों) तक नहीं पहुंच सके। अगर ऐसी मख़्लूक़ का इल्म नहीं जो ज़मीनी व आसमानी निज़ाम से बाहर है तो ताज्जुब की कोई बात नहीं है। कुछ सौ साल पहले तक तो इंसान को अमरीका तक का पता नहीं था। जब कायनात के पैदा करने वाले ने ज़ाहिर कर दिया तो इसांन यहां अपनी दुनिया बसाने लगा। वह क़ादिर (अल्लाह) 'कुन' (हो जा) से सब कुछ बना सकता है, उसके बारे में यह राय रखना कि सिर्फ़ आसमान व ज़मीन के अंदर ही पैदा फ़रमा सकता है, यह बड़ी नादानी की बात है। दुनिया के इल्म के दावेदारों पर कुंए के मेंढक की मिसाल पूरी होती है, जिस तरह मेंढक अपने इल्म के मुताबिक़ सिर्फ़ कुंए ही को सबसे बड़ी जगह

समझता है और बड़े-बड़े समुद्रों को नहीं जानता। इसी तरह कायनात की खोज लगाने वाले इन चीज़ों के इंकारी हैं जो उनके इल्म से बाहर हैं। जन्नत के इंकारी अपनी बदबख़्ती की वजह से जन्नत से महरूम होंगे और दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। **'ला यस्लाहा इल्लल अश्क़ल्लज़ी कज़्ज़ ब व त वल्ला'** (बेशक जन्नत बहुत बड़ी जगह है, ज़मीन और आसमान और उनके अंदर की तमाम कायनात उसके फैलाव और नेमतों के सामने कुछ भी नहीं है, वहां के फैलाव का क्या ठिकाना है?

क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया :

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا (الدهر)

व इज़ा र ऐ त सम्म म र ऐ त नईमौंव्व मुल्कन कबीरा।

'और (ऐ मुख़ातिब!) जब तू वहां देखेगा तो बड़ी नेमत और बड़ा मुल्क देखेगा।'

इस मुल्क की लम्बाई-चौड़ाई कितनी होगी। छोटे जन्नती की जगह का ख़्याल करके इसका अंदाज़ा लगा लो।

जन्नत में हमेशा रहेंगे

क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है :

إِنَّ الَّذِيْنَ آمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ أُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ○ جَزَآءُ هُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خَالِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ، ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ○

इन्नल्लज़ी न आम नू व अ़मिलुस्सालिहाति उलाइ क हुम ख़ैरुल बरीयः। जज़ाउहुम इन द रब्बिहिम जन्नातु अद्निन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु ख़ालिदी न फ़ीहा अ ब दा। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम

व रज़ू अ़न्ह। ज़ालि क लिमन ख़शि य रब्बः।

'बिला शुब्हा जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और भले काम अंजाम दिए, ये लोग बेहतरीन मख़्लूक़ हैं। उनका बदला उनके रब के पास हमेशा रहने की जन्नतें हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। इनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और वे अल्लाह से राज़ी रहेंगे। (यह जन्नत व रज़ामंदी उसके लिए हैं जो अपने रब से डरता है।)

यह जो फ़रमाया कि वे अपने रब से राज़ी होंगे, उसका मतलब यह है कि अपने परवरदिगार की दी हुई नेमतों में मग्न होंगे। हर ख़्वाहिश पूरी होगी। अल्लाह जल्ल ल शानुहू की देन पर दिल की गहराई से ख़ुश और शुक्रगुज़ार होंगे, किसी चीज़ की कमी न होगी।

सूरः दुख़ान में इर्शाद फ़रमाया :

يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ لَايَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ○ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ○

यद्ऊ न फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकिहतिन आ मि नी न ला यज़ूक़ू न फ़ीहल मौ त इल्लल मौततल ऊला व वक़ाहुम अ़ज़ाबल जहीम। फ़ज़्लम मिर्रब्बि क ज़ालि क हुवल फ़ौज़ुल अ़ज़ीम।

'उसमें अमन-चैन से हर क़िस्म के मेवे मंगाते होंगे (और) वहां मौत का मज़ा न चखेंगे। वह पहली मौत जो दुनिया में आ चुकी (उसके बाद मौत न होगी) और अल्लाह उनको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमाएगा कि (जब) अल्लाह तआ़ला जन्नतियों को जन्नत में और दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमा चुकेगा (और दोज़ख़ में ऐसा कोई शख़्स न रहेगा, जिसे सज़ा भुगतने के बाद जन्नत में जाना हो) तो एक ऐलान करने वाला ज़ोर से पुकार कर ऐलान कर देगा कि ऐ जन्नत वालो! मौत नहीं और ऐ दोज़ख़ वालो! मौत नहीं! हर एक को उसी में रहना है जिसमें अब है।

—तर्ग़ीब (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जन्नती सोएंगे? आंहज़रत ﷺ ने जवाब दिया कि नींद मौत का भाई है और जन्नतियों को मौत न आयेगी (इसलिए नींद भी न आयेगी)। —मिश्कात

रोग या कमज़ोरी या थकन और मेहनत करने की वजह से नींद आती है। चूंकि जन्नत में न मेहनत है, न मर्ज़ है, न थकन है, न कमज़ोरी। इसलिए नींद आने की ज़रूरत न होगी, न नींद का तक़ाज़ा होगा। दुनिया में भी नींद असली मक़सद नहीं है चूंकि थकन के बाद सो जाने से तबीयत हल्की हो जाती है और इंसान मुस्तैद हो जाता है इसलिए नींद को पसंद करता है। अगर नींद न आये तो दवा खा कर नींद लाने की कोशिश की जाती है, लेकिन जहां थकन ही न होगी, वहां सोना पसंद न होगा क्योंकि अगर सो जाएं तो जितनी देर सोएंगे, ख़्वाहमख़्वाह उतनी देर नेमतों से महरूम रहेंगे।

जन्नत में वह सब कुछ होगा जिसकी चाह होगी

सूरः ज़ुख़रुफ़ में फ़रमाया :

وَفِيهَا مَاتَشْتَهِيهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۝ وَاَنْتُمْ فِيهَا خٰلِدُوْنَ ۝

व फ़ीहा मा तश्तहीहिल अन्फ़ुसु व त लज़्ज़ुल अअ़्युन। व अन्तुम फ़ीहा ख़ालीदून।

'और वहां वह है नफ़्सों को जिसकी ख़्वाहिश होगी और जिससे आंखों को लज़्ज़त होगी और उनसे कह दिया जाएगा, तुम उसमें हमेशा रहने वाले हो।'

जब सब कुछ नफ़्स की ख़्वाहिश के मुताबिक़ होगा तो किसी तरह की रूह या जिस्म की तकलीफ़ का नाम भी न होगा। दुनिया में कोई शख़्स जितना भी बड़ा हो जाए, बहरहाल उसको तबीयत के ख़िलाफ़ बातें पेश आती हैं। कोई कैसा भी दौलतमंद हो और कितना ही बड़ा बादशाह हो हर

ख़्वाहिश पूरी नहीं होती। न यह दुनिया इस क़ाबिल है कि इसमें हर ख़्वाहिश पूरी हो जाए। पाख़ाना जाने को किस की ख़्वाहिश होती है मगर मजबूर होकर हर शख़्स को जाना पड़ता है।

यह जन्नत ही में नवाज़िश होगी कि नफ़्स की ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ कुछ भी न होगा। **'व लकुम फ़ीहा मा तश्तही अन्फ़ुसुकुम व लकुम फ़ीहा मा तद्दऊन'** का एलान कर दिया जाएगा।

जन्नती न जन्नत से निकाले जाएंगे न ख़ुद वहां से कहीं जाना पसंद करेंगे

सूरः हिज्र में इर्शाद है :

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ○

ला यमस्सुहुम फ़ीहा नसबूंव मा हुम मिन्हा बिमुख़्रजीन।

'न उनको ज़रा कोई तकलीफ़ पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे।'

सूरः कहफ़ के आख़िर में फ़रमाया :

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا○
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا○

इन्नल्लज़ी न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति कानत लहुम जन्नातुल फ़िर्दौसि नुज़ुला। ख़ालिदी न फ़ीहा ला यब्ग़ू न अ़न्हा हि व ला०

'बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उनकी मेहमानी के लिए फ़िर्दौस (बहिश्त) के बाग़ होंगे, जिनमें वे हमेशा रहेंगे। वहां से कहीं जाना न चाहेंगे।'

चूंकि कोई तकलीफ़ ही न होगी और हर ख़्वाहिश पूरी की जाएगी इसलिए वहां से कहीं जाने को जी न चाहेगा और न कहीं जाने की ज़रूरत होगी। सब कुछ वहीं मौजूद होगा। करोड़ों और अरबों मील जन्नत का फैलाव होगा। आपस में मिलना-जुलना होगा, और बेतकल्लुफ़ी होगी। नाते-

रिश्तेदार, दोस्त-अहबाब सब वहीं मौजूद होंगे। कायनात का पैदा करने वाला राज़ी होगा। फिर इस शक्ल में वहां से बाहर जाने का इरादा करना बेकार है।

अल्लाह की तरफ़ से रज़ामंदी का ऐलान

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक अल्लाह जन्नत वालों से फ़रमाएंगे कि ऐ जन्नत वालो! वे अ़र्ज़ करेंगे कि लब्बैक रब्बना व सअ़्दैक वल ख़ैरु फ़ी यदैक (ऐ रब! हम हाज़िर हैं और हुक्म पूरा करने के लिए मौजूद हैं और भलाई आप ही के क़ब्ज़े में है) इसके बाद अल्लाह जल्ल ल शानुहू उनसे मालूम करेंगे, क्या तुम राज़ी हो? वे अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ परवरदिगार! जब कि आप ने हमको वह-वह नेमतें दी हैं जो अपनी मख़्लूक़ में से और किसी को नहीं दीं तो इसके बावजूद हम राज़ी क्यों नहीं होते? अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे क्या तुमको इससे (भी) अफ़ज़ल नेमत दे दूं? वे अ़र्ज़ करेंगे कि (या अल्लाह!) इससे अफ़ज़ल और क्या होगा? इसके जवाब में अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे कि ख़ूब समझ लो। मैं हमेशा के लिए तुम पर रज़ामंदी नाज़िल करता हूं। पस कभी भी तुमसे नाराज़ न हूंगा[1]।

जन्नत में जो कुछ होगा, उससे बढ़कर यह होगा कि अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी होंगे और हमेशा के लिए अपनी रज़ामंदी का ऐलान फ़रमा देंगे। एक शरीफ़ ग़ुलाम के लिए सबसे बड़ी नेमत यह है कि आक़ा उसका राज़ी हो। अगर सब कुछ मौजूद हो और आक़ा नाराज़ हो या उसकी नाराज़गी का डर हो, तो नेमतों के इस्तेमाल से कुढ़न होती है और तबीयत में परेशानी रहती है। अल्लाह जल्ल ल शानुहू अपनी रज़ामंदी का ऐलान फ़रमा कर जन्नतियों को हमेशा के लिए मुत्मइन फ़रमा देंगे कि हम तुमसे हमेशा के लिए राज़ी हैं। इस ऐलान पर जो ख़ुशी होगी, इस दुनिया में उसकी मिसाल नहीं दी जा सकती है। **'व रिज़्वानुम मिनल्लाहि अकबर।'** क़ुरआन शरीफ़ में जगह-जगह **'रज़ियल्लाहु अ़न्हुम व रज़ू**

1. तिर्मिज़ी की रिवायत में हज और ज़कात का भी ज़िक्र है।

अन्ह' का ऐलान फ़रमाया है, जिसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला जन्नतियों से राज़ी होंगे। और जन्नती अल्लाह तआला से राज़ी होंगे यानी वहां किसी भी चीज़ की कोई कमी न होगी। दिलों पर किसी बात का ज़रा भी मैल न आएगा जो कुछ भी मिला होगा उससे नफ़्स राज़ी होगा। अल्लाह तआला की दैन और इनाम व इकराम पर दिल व जान से खुश होंगे। जअ़ल्लाहु मिन्हुम।

जन्नत के दर्जे

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले खुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स ईमान लाया और नमाज़ क़ायम की और रोज़े रखे, तो उसके लिए यह ज़रूरी है कि अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे, अल्लाह के रास्ते में हिजरत करे या उसी ज़मीन में क़ियाम किए रहे जहां पैदा हुआ है। सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या हम इसकी खुशख़बरी लोगों को सुना दें? आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह ने अपने रास्ते में जिहाद करने वालों के लिए तैयार फ़रमाए हैं। हर दो दर्जे के दर्मियान इतना फ़ासला है, जितना कि आसमान व ज़मीन के दर्मियान है। पस जब तुम अल्लाह से सवाल करो तो फ़िर्दौस का सवाल करो, क्योंकि वह जन्नत का सबसे बेहतर और बुलंद दर्जा है और उसके ऊपर रहमान का अ़र्श है और इससे जन्नत की (चारों) नहरें फूटती हैं। —बुख़ारी शरीफ़

साहिबे फ़त्हुलबारी लिखते हैं कि इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नत में सौ दर्जे अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों के लिए हैं। (लेकिन) इसमें इसका इंकार नहीं है कि ग़ैर-मुजाहिदों के लिए इस सौ दर्जों के अलावा दूसरे दर्जे हों जो मुजाहिदों के दर्जों से कम हों।[1] इस हदीस को बुख़ारी ने **'किताबुत्तौहीद'** में भी ज़िक्र किया है। वहां साहिबे फ़त्हुलबारी लिखते हैं कि मिअ़तु द र जः (यानी सौ दर्जे) जो फ़रमाया है,

1. फ़त्हुलबारी किताबुलजिहाद

उसके कहने का ढंग यह नहीं है कि जन्नत के दर्जे सौ ही हैं, क्योंकि सौ दर्जों के ज़िक्र से भी ज़्यादा का इंकार नहीं होता है और इसकी ताईद इस हदीस से होती है, जिसकी रिवायत अबूदाऊद और तिर्मिज़ी और इब्ने हब्बान ने की है कि—

يقال لصاحب القرآن اقرأ وارتق ورتل كما كنت ترتل فى الدنيا
فان منزلتك عند اخر اية تقرأها (قال الترمذى حديث حسن صحيح)

युकालु लिसाहिबिल क़ुरआनि इक़्रअ् वर्तक़ि व रत्तिल कमा कुन त तुरत्तिल फ़िद्दुन्या फ़ इन्न न मंज़िलत क इन द आख़िरि आयः तक़्रउहा (कालत्तिर्मिज़ी हदीस हसनुन सहीहुन)

'क़ुरआन वाले से (क़ियामत के दिन) कहा जाएगा कि पढ़ता जा और इस तरह तर्तील के साथ तिलावत करता जा क्योंकि तेरी मंज़िल वहीं है जहां तू आख़िरी आयत पढ़कर ख़त्म करे।'

इस हदीस से मालूम हुआ कि साहिबे क़ुरआन (यानी क़ुरआन की तिलावत से लगाव रखने वाला) जितनी आयतें पढ़ता जाएगा, उतना ही चढ़ता जाएगा और क़ुरआन शरीफ़ की आयतें 6200 तो सबके यहां हैं (और वक़्फ़ व वस्ल के मौक़ों में इख़्तिलाफ़ होने की वजह से) इस तादाद पर जो ज़्यादती है, उसमें इख़्तिलाफ़ हो गया है। वह बहरहाल यह तो मालूम हुआ कि जन्नत के दर्जे क़ुरआन की आयतों के बराबर ज़रूर हैं।

जन्नत के बालाख़ाने

सूरः फ़ुर्क़ान में इर्शाद है :

أُولٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا○
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا○

उलाइ क युज्ज़ौनल ग़ुर्फ़ त बिमा स ब रू व युलक़्क़ौ न फ़ीहा तहीय्यतौं व सलामा। ख़ालिदी न फ़ीहा हसुनत मुस्तक़रौं व मुक़ामा।

'ऐसे लोगों को (जिनका शुरू रुकूअ़ से ज़िक्र चला आ रहा है) बालाख़ाने (कोठे) मिलेंगे। उनके जमे रहने की वजह से और (फ़रिश्तों की तरफ़ से) बक़ा की दुआ़ और सलाम मिलेगा और इसमें वे हमेशा रहेंगे। वह क्या ही अच्छा ठिकाना है और ठहरने की जगह है।'

सूरः ज़ुमर में फ़रमाया :

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ

ला कि निल्लज़ी न त्तक़ौ रब्बहुम लहुम ग़ु र फ़ुम मिन फ़ौक़िहा ग़ु र फ़ुम मुब्नीयतुन तज्री मिन तह्तिहल अन्हार।

'लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं, उनके लिए कोठे हैं, जिनके ऊपर और कोठे हैं जो बने-बनाये तैयार हैं; उनके नीचे नहरें जारी हैं।'

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जन्नती अपने ऊपर कोठे वालों को इस तरह देखेंगे जैसे तुम उस रौशन सितारे को देखते हो जो (सुबह की पौ फटने के बाद) आसमान की पूर्वी या पच्छिमी किनारे पर बाक़ी रह जाता है और यह मंज़ीलों का फ़र्क़ उनके आपसी मर्तबों के फ़र्क़ की वजह से होगा (कि बुलंद मर्तबे वाले हज़रात ऐसे ऊंचे कोठों में होंगे कि आम जन्नती को बहुत दूर ही पर नज़र आने वाले सितारे की तरह नज़र आएंगे) सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! ये तो नबियों ही की जगहें होंगी जहां उनके अलावा कोई न पहुंच सकेगा। प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया कि हां! क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है (नबियों के अलावा) बहुत से लोग (भी उन कोठों में) होंगे जो अल्लाह पर ईमान लाये और रसूलों की तस्दीक़ की[1]। लेकिन इससे यह न समझा जाए कि नबियों को बरतरी न होगी क्योंकि कोठों में भी दर्जों का फ़र्क होगा इसलिए कि कोठों पर भी कोठे होंगे जैसा का सूरः ज़ुमर की आयत में गुज़रा।

1. बुख़ारी व मुस्लिम

सूरः फ़ुर्क़ान में पहले नेक लोगों ओर अल्लाह से डरने वालों की ख़ूबियां ब्यान फ़रमायी हैं। आख़िर में इन हज़रात के बारे में बालाख़ानों की ख़ुशख़बरी दी है और सूरः ज़ुमर में भी मुत्तक़ियों के लिए कोठों का ज़िक्र फ़रमाया है। मालूम हुआ कि बालाख़ाने बड़े मर्तबे वाले हज़रात को नसीब होंगे।

हज़रत अबू मालिक अश्अ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूले अक़दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया है कि बिला शुब्हा जन्नत में बालाख़ाने हैं (जो ऐसे चिकने हैं कि) उनका ज़ाहिरी हिस्सा अंदर से और अंदरूनी हिस्सा बाहर से नज़र आता है। (ये बालाख़ाने) अल्लाह तआ़ला ने उसके लिए बनाये हैं जो नर्मी से बात करें और मेहमानों और ज़रूरतमंदों को खाना खिलाएं और अकसर रोज़े रखा करें और रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ें जबकि लोग सो रहे हों।

—बैहक़ी फ़ी शोबिल ईमान

जन्नत के ख़ेमे और क़ुब्बे

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में मोमिनों का ऐसा ख़ेमा होगा कि एक ही मोती से बना हुआ होगा। (मोती बहुत बड़ा होगा) जो अंदर से ख़ोल की तरह होगा। इस ख़ेमे की लंबाई (और एक रिवायत में है कि इस की चौड़ाई) साठ मील की होगी। इसके हर कोने में मोमिनों के मुतअ़ल्लिक़ लोग (बीवियां, नौकर-चाकर) होंगे (और कोनों के दर्मियानी फ़ासले की वजह से) इस कोने के लोग दूसरे कोनों के लोगों को नज़र न आएंगे। उनके पास मोमिन आया-जाया करेंगे। (इसके बाद फ़रमाया कि मोमिन के लिए) दो बाग़ ऐसे होंगे कि उनके बर्तन और जो कुछ उनमें है, वह सब सोने का है। —बुख़ारी व मुस्लिम

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मामूली जन्नती वह होगा जिसके अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर बीवियां होंगी और उसके लिए एक क़ुब्बा नस्ब किया जाएगा, जो मोतियों से और ज़बुर्जद और याक़ूत से बना होगा और जितना फ़ासला जाबिया से सुन्आ़ तक है' उतनी ही दूरी में उसकी लंबाई-चौड़ाई होगी।—तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नत का मौसम

सूरः दह्र में इर्शाद है :

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا○ مُّتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَائِكِ○
لَايَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَازَمْهَرِيْرًا○

व जज़ाहुम बिमा स ब रू जन्नतौं व हरीरा मुत्तकिई न फ़ीहा अ़लल अराइक। ला यरौ न फ़ीहा शम्सैं व ला ज़म्हरीरा।

'और उनका रब सब्र व (जमाव) के बदले में उन्हें बाग़ और रेशमी लिबास अ़ता फ़रमाएगा और वहां मुसहरियों पर तकिया लगाये होंगे। वहां न गर्मी महसूस करेंगे, न सर्दी।'

साहिबे तफ़्सीर मज़्हरी इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं :

لَاحرفيها ولابرد ليدوم فِيْها هَوَاءُ معتدل○

ला हर्र फ़ीहा व ला बर्द लियदू म फ़ीहा हवाउ मुअ़्तदिल।

यानी 'जन्नत में सर्दी-गर्मी न होगी ताकि फ़िज़ा (वातावरण) समान रहे। फिर लिखते हैं :

ان الجنّة مضيئة بنفسها ومشرقة بنور رَبها لايحتاج الٰى شمس
ولا الى قمر

इन्नल जन्न त मुज़ीअतुन बिनफ़्सिहा व मुश्रिक़तुन बिनूरि रब्बिहा ला यहताजु इला शम्स व ला इला क़मर०

'बेशक जन्नत ख़ुद रौशन है और अपने रब के नूर से मुनव्वर है। रौशनी के लिए वहां चांद-सूरज की ज़रूरत नहीं।'

इसके बाद बैहक़ी के हवाले से शुऐब बिन जैहान का ब्यान नक़ल

1. जाबिया शाम देश में एक जगह है और सन्आ़ यमन में एक जगह है। दोनों में सैंकड़ों मीलों का फ़ासला है।

किया है कि मैं और अबुल आ़लिया रह० (फ़ज्र की नमाज़ के बाद) सूरज उगने से पहले आबादी से बाहर गये, उस वक़्त का मंज़र देखकर हज़रत अबू आ़लिया रह० ने फ़रमाया कि 'यन्सबु इलल जन्नति हाकज़ा' यानी इस वक़्त जो फ़िज़ा में मस्ती, एतदाल और रौशनी है, जन्नत के बारे में इसी तरह की फ़िज़ा ब्यान की जाती है। यह बात कहकर हज़रत अबू आ़लिया रह० ने 'व ज़िल्लिम मम्दूद' की तिलावत की।

साहिबे मज़्हरी लिखते हैं कि हज़रत अबुल आ़लिया रह० ने जो जन्नत के फ़िज़ा को सुबह का नूर कहा है तो यह असल रौशनी से मिलाना नहीं हुआ क्योंकि सुबह की रौशनी कमज़ोर होती है जिसमें अंधेरी मिली हुई होती है बल्कि हज़रत अबुल आ़लिया रह० के इर्शाद का मतलब यह है कि 'जिस तरह सुबह की रौशनी हर तरफ़, जहां तक नज़र जाये वहां तक फैली हुई होती है (ख़ास तौर से जबकि आबादी से बाहर निकल कर देखा जाये) इसी तरह जन्नत का नूर बराबर हर तरफ़ फैला होगा।'

लेकिन सही यह है कि यह तश्बीह (उपमा, बराबरी) सुबह के वक़्त से है, सुबह की रौशनी से नहीं है। और हज़रत अबुल आ़लिया रह० के इर्शाद का मतलब यह है कि जिस तरह सुबह के वक़्त में (निकलने से पहले-पहले) एक सुहावनापन और मस्ती होती है और अच्छी दर्मियानी हवा के झोंके आते हैं और हर तरफ़ रौशनीदार साया ही साया नज़र आता है, मगर रौशनी ऐसी नहीं होती जो आंखों को चुंधिया दे। इसी तरह हर वक़्त जन्नत में गहरा साया रहेगा और फ़िज़ा दर्मियानी रहेगी और एक अजीब तरह का सुहावनापन और मस्ती महसूस होती रहेगी। रौशनी में गर्मी और जलन न होगी और वह रौशनी जितनी भी तेज़ हो उसकी वजह से साया ख़त्म न होगा और न आंखों को तकलीफ़ होगी।

सूरः रअ़्द में इर्शाद है :

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۝ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۝ اُكُلُهَا
دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۝

म स लुल जन्नतिल्लती वुइदल मुत्तक़ून। तजरी मिन तह्तिहल अन्हार। उकुलुहा दाइमुंव्व ज़िल्लुहा।

'जिस जन्नत का मुत्तकियों से वादा किया गया है, उसका हाल यह है कि उसकी (इमारतों व पेड़ों) के नीचे नहरें जारी होंगी। उसका फल और साया हमेशा रहेगा।'

इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि जन्नत में हमेशा साया रहेगा। सूरः निसा में जन्नत के साए को 'ज़िल्लन ज़लीला' फ़रमाया। चुनांचे इर्शाद है :

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا

वल्लज़ी न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुद् ख़िलुहुम जन्नातिन तजरी मिन तह्तिहल अन्हार। ख़ालिदीना फ़ीहा अ ब दा। लहुम फ़ीहा अज़्वाजुम मुतह्ह र तुंव्व नुद् ख़िलहुम ज़िल्लन ज़लीला।

'और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, बहुत जल्द हम उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। उनमें हमेशा रहेंगे। वहां उनके लिए पाक़ीज़ा बीवियां होंगी और हम उनको गंजान साए में दाख़िल करेंगे।'

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर 'ज़िल्लन ज़लीला' की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं कि 'एय ज़िल्लन अ़मीक़न कसीरन अज़ीज़न तैयिबन अनीक़ा' यानी ऐसा साया जो बहुत गंजान, अच्छा और रौनक़दार होगा।

जन्नत में आराम ही आराम है, थकन और दुख का कुछ काम नहीं

सूरः फ़ातिर में इर्शाद है :

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ۨ الَّذِىْٓ اَحَلَّنَا دَارَالْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ

व क़ालुल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्ह ब अ़न्नल हज़न। इन्न न रब्बना लग़फ़ूरुन शकुर। अल्लज़ीन अहल्लना दारल मुक़ामति मिन फ़ज़्लिः। ला यमस्सुना फ़ीहा न स बुंव्व ला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूब।

'और जन्नती कहेंगे कि सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए ख़ास हैं जिसने हमसे ग़म को दूर फ़रमाया। बिला शुब्हा हमारा रब बड़ा बख़्शने वाला (और) बड़ा क़द्रदां है जिसने हमको अपने फ़ज़्ल से रहने की जगह उतारा जहां हमको न कोई तकलीफ़ पहुंचेगी और न ज़रा थकान महसूस हो सकेगी।'

मुआ़लिमुत्तंज़ील में लिखा है कि जन्नत में दाख़िल होकर जन्नती यह बात कहेंगे जिसका अभी ऊपर ज़िक्र हुआ।

'अल्लाह ने हमसे रंज व ग़म दूर फ़रमा दिया यानी दुनिया में जो रंज व ग़म आने की वजहें थीं, वे सब ख़त्म हो गयीं। यहां कभी किसी वजह से कोई रंजीदा करने वाली बात और चिंता व परेशानी में डालने वाली चीज़ें पेश न आएंगी। दुख-तकलीफ़ के ख़तरे और उनके मौक़े सब ख़त्म हो चुके। अब न रोज़ी कमाने की चिंता है, न रोज़ी की खोज है, न मौत का डर है, न बुढ़ापे का खौफ़ है, न हर्ज है, न मर्ज़ है, न क़ब्र का मरहला सामने है, न हश्र के मैदान का हौल है, न बुरे ख़ात्मे का ख़तरा है, न नेमतों के ख़त्म होने का तरद्दुद है, न दुनिया संवारने के लिए कुछ करना है, न अंजाम बनाने के लिए इबादत में लगने का हुक्म है। बस हर तरह से आराम ही आराम और अमन व इत्मीनान है। दुनिया व आख़िरत से मुतअ़ल्लिक़ जो डर और चिंता और नागवारी और परेशानी की वजहें, मौक़े और मंज़िलें थीं, इन सबसे गुज़र कर 'दारुल मुक़ामः' में आ गये, जहां न कोई मुसीबत है, न परेशानी है, न मेहनत है, न मशक़्क़त है, न थकन है, न दुखन है। सच तो यह है कि यही जगह इस क़ाबिल है जिसे 'दारुल मुक़ामः' (रहने की जगह) कहना मुनासिब है, जहां से न कभी कोई निकलेगा, न निकलने को कभी दिल चाहेगा। हर एक इज़्ज़तदार है, भरपूर लज़्ज़तें हैं, बेइंतिहा नेमत हैं, जो किसी भी ख़राबी से पाक है।

जन्नतियों की मज्लिसें

सूरः साफ़्फ़ात में इर्शाद है :

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَ لُوْنَ○ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنَّهٗ كَانَ لِىْ قَرِيْنٌ يَقُوْلُ ءَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ○ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ○

फ़ अक़्ब ल बअ़्ज़ुहुम अ़ला बअ़्ज़िंय त साअलून। क़ा ल क़ाइलुम मिनहुम इन्नहू का न ली क़रीनुंयक़ूलु अ इन्न क ल मिनल मुसद्दिक़ीन। अ इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबा व इज़ामन अ इन्ना ल मदीनून।

'पस (जब वे एक मज्लिस में बैठेंगे तो) एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बात-चीत करेंगे। उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि (दुनिया में) मेरा एक मुलाक़ाती था जो मुझसे (तअ़ज्जुब के साथ यों) कहता था कि क्या तू भी क़ियामत के मानने वालों में से है? क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएंगे तो क्या अपने कामों के बदले पाएंगे?'

قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ○ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِىْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ○

क़ा ल हल अन्तुम मुत्तलिऊन। फ़त्त ल अ़ फ़ र आ हु फ़ी सवाइल जहीम।

'(फिर) वह जन्नती अपने साथ बैठने वालों से कहेगा क्या तुम उसे (दोज़ख़) में झांक कर देखना चाहते हो? फिर (ख़ुद ही) झांकेगा और अपने मुलाक़ाती को दोज़ख़ में देख लेगा।'

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया है कि जन्नत में रौशनदान की तरह झरोखे होंगे जिनमें जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को देखेंगे और जन्नती शख़्स अपने मुलाक़ाती को दोज़ख़ में देखकर कहेगा कि--

قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ○ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّىْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ○

का ल तल्लाहि इन कित त। लतुर्दी न व लौ ला निअ्मतु रब्बी लकुन्तु मिनल मुहज़रीन।

'खुदा की क़सम! तू तो मुझ को तबाह ही करने को था और अगर मेरे रब का फ़ज़्ल न होता तो मैं (भी तेरी तरह) दोज़ख़ में हाज़िर कर दिए जाने वालों में होता।

सूरः तूर में जन्नतियों की एक बात-चीत इस तरह नक़ल फ़रमायी है :

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَ لُوْنَ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِىْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ○ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ○ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ○

व अक़्ब ल बअ्ज़ुहुम अ़ला बअ्ज़िं य त साअ लू न। क़ालू इन्ना कुन्ना क़ब्लु फ़ी अह्लिना मुश्फ़िक़ीन। फ़ मन्नल्लाहु अ़लैना व वक़ाना अ़ज़ाबस्समूम। इन्ना कुन्ना मिन क़ब्लु नद्ऊहु इन्नहु हु वल बर्रुर्रहीम।

'और वह एक दूसरे की तरफ़ मतुवज्जह होकर बात-चीत करेंगे। कहेंगे कि हम इससे पहले (दुनिया के) घर-बार में रहते हुए (अंजामकार से) बहुत डरा करते थे सो अल्लाह पाक ने हम पर एहसान फ़रमाया और हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लिया इससे पहले हम उससे दुआएं मांगा करते थे। सच में वह बड़ा मुह्सिन (एहसान करने वाला) और मेहरबान है।'

तहीय्यतुहुम फ़ीहा सलाम

सूरः यूनुस में फ़रमाया :

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِىْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ○ دَعْوٰهُمْ فِيْهَا سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ○ وَاٰخِرُ دَعْوٰهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

इन्नल्लज़ी न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति यह्दीहिम रब्बुहुम बिईमानिहिम तज्री मिन तह्तिहिमुल अन्हारु फ़ी जन्नातिन्नईम। दअ़्वाहुमु फ़ीहा सुब्हा न कल्लाहुम्म म व तहीय्यतुहुम फ़ीहा सलाम। व आख़िरु दअ़्वाहुम अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन।

'बिला शुब्हा जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल किए उनके ईमान की वजह से उनका रब उन्हें उनके मक़सद को (यानी जन्नत में) पहुंचा देगा। उनके नीचे नहरें जारी होंगी, आराम के बाग़ों में। (और वे जन्नत में) दाख़िल होंगे तो यकायक जन्नत की अजीब-अजीब चीज़ों को देख कर वहां (बेएख़्तियार) यों कहेंगे कि सुब्हानल्लाह! क्या नेमतें हैं और कैसी उम्दा जगह है और फिर एक दूसरे को वहां (देखेंगे) तो उनका आपसी सलाम 'अस्सलामु अ़लैकुम' होगा और जब इत्मीनान से वहां जा बैठेंगे और पुरानी मुसीबतों और परेशानियों का उस वक़्त के साफ़-सुथरे हमेशा वाले आराम से मुक़ाबला करेंगे तो (उनकी उस वक़्त की) आख़िरी बात यह होगी कि 'अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन' (यानी सब तरीफ़ें अल्लाह ही के लिए खास हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है)'

तर्जुमे से इस आयत की जो तफ़सीर मालूम हो रही है। यह साहिबे ब्यानुल क़ुरआन की तफ़सीर है और साहिबे मुआ़लिमुत्तंज़ील इसकी तफ़सीर में लिखते हैं कि जन्नती जब खाने की ख़्वाहिश करेंगे तो *'सुब्हान कल्लाहुम्मा'* कह देंगे। इस कलिमे को सुनकर उनके ख़ादिम दस्तरख़्वानों पर खाने लगा देंगे। जब खाकर फ़ारिग़ हो जाएंगे तो वे *'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन'* कहेंगे और तहीय्यतुहुम फ़ीहा सलाम की तफ़्सीर करते हुए लिखा है कि जन्नती हज़रात मुलाक़ात के वक़्त एक दूसरे को सलाम करेंगे और यह भी नक़ल किया है कि फ़रिश्ते जन्नतियों को सलाम करेंगे और यह भी नक़ल किया है कि फ़रिश्ते उनके पास अल्लाह का सलाम लेकर आएंगे और तीनों तरह 'तहीय्यतुहुम फ़ीहा सलाम' की तफ़सीर हो सकती है।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर इब्ने जुरैज से नक़ल फ़रमाते हैं कि जन्नतियों के पास जब कोई परिंदा गुज़रेगा तो *'सुब्हानकल्लाहुम्म म'* कहेंगे, इस पर

फ़रिश्ते उनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ (परिंदे को) लेकर आएंगे और सलाम करेंगे, जिसका वह जवाब देंगे, *'तहीय्यतुम फ़ीहा सलाम'* में इसी का ज़िक्र है। जब खाकर उठेंगे तो *'अलहम्दु लिल्लाह'* कहेंगे, जिसका *'आख़िरु दअ्वाहुम अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन'* में ज़िक्र है। इसके बाद इब्ने कसीर लिखते हैं कि सुफ़ियान सौरी (रह०) ने फ़रमाया है कि जन्नती जब किसी चीज़ को मंगाने का इरादा करेंगे तो *'सुब्हान कल्लाहुम्म म'* कह देंगे (पस वह हाज़िर हो जाएगी) इससे मालूम हुआ कि इब्ने जुरैज ने आयत की तफ़्सीर फ़रमाते हुए जो परिंदे का ज़िक्र किया है, मिसाल के तौर पर है। वरना हर नेमत की ख़्वाहिश के ज़ाहिर करने के लिए जन्नती लोग 'सुब्हान कल्ला हुम्म म' कहेंगे। यह जो फ़रमाया कि परिंदे को फ़रिश्ता लेकर हाज़िर होगा। मालूम होता है कि यह कभी-कभी की बात है क्योंकि रिवायतों में पहले गुज़र चुका है कि परिंदा ख़ुद जन्नतियों के सामने आ गिरेगा।

जन्नत की नेमतें जो दुनिया में नहीं समझी जा सकतीं

जन्नत के बारे में जो कुछ सुनकर और पढ़ कर समझ में आता है। जब जन्नत में जाएंगे तो इससे बहुत बुलंद और बाला पाएंगे। एक तो इस वजह से कि जन्नत के जिन नेमतों का ज़िक्र क़ुरआन व हदीस में मौजूद है, वहां इनके अलावा बहुत ज़्यादा नेमतें हैं। दूसरे इस वजह से कि किसी चीज़ के देखने और इस्तेमाल करने से जो पूरी जानकारी होती है, वह सिर्फ़ सुनने से नहीं होती। इसलिए इस दुनिया में रहते हुए जन्नत की नेमतों को सच्ची हक़ीक़त को समझा नहीं जा सकता है।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैंने अपने नेक बंदों के लिए वे-वे चीज़ें तैयार की हैं जिनको न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न किसी इंसान के दिल पर उनका गुज़र हुआ। फिर आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि (क़ुरआन) से इस बात की तस्दीक़ करना चाहो तो यह आयत पढ़ लो *'फ़ ला तअ्लमु नफ़्सुम मा उख़्फ़ि या लहुम मिन क़ुर्रति*

अअ्युन।' —बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने ऊपर वाला मज़्मून इर्शाद फ़रमा कर आख़िर में फ़रमाया कि *'बल ह मा अत ल अ कुमुल्लाहु अ़लैहि'* यानि अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआनी आयतों के ज़रिए या नबी करीम ﷺ की ज़ुबानी जिन जन्नत की नेमतों का ज़िक्र फ़रमा दिया है इनके अलावा जो नेमतें हैं, बहुत ज़्यादा हैं।

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में एक घोड़े की जगह सारी दुनिया से और दुनिया में जो कुछ है, सबसे बेहतर है।[1] साथ ही यह भी इर्शाद फ़रमाया कि जितनी जगह आधी कमान रखी जाती है, जन्नत में उतनी-सी जगह उन सब चीज़ों से बेहतर है जिन पर सूरज उगता या डूबता है।[2]

जब सवारी से सवार उतरने लगता है तो जगह पर क़ब्ज़ा करने के लिए पहले अपना कोड़ा ज़मीन पर गिरा देता है और पैदल चलने वाला जब बैठने लगता है तो पहले अपनी कमान डाल देता है फिर बैठता है। आंहज़रत ﷺ ने जन्नत की बड़ाई और क़ीमत समझाने के लिए इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत की इतनी-सी जगह जिसमें एक कोड़ा या आधी कमान रखी जा सके, सारी दुनिया की लंबी-चौड़ी और फैली जगह से अफ़ज़ल है। कहां यह कि पूरी दुनिया जिसके फैलाव के सामने हज़ारों दुनियाएं भी छोटी और कम हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ؓ ने फ़रमाया कि दुनिया की चीज़ों में से कोई चीज़ भी जन्नत में नहीं है, सिर्फ़ नाम मिलते-जुलते हैं।

मतलब यह है कि जन्नत की नेमतों के तज़्किरे में जो सोना-चांदी, मोती, रेशम, पेड़, मेवे, तख़्त, गद्दे, कपड़े वग़ैरह आये हैं, ये चीज़ें वहां की चीज़ें होंगी और इसी के एतबार से उनकी ख़ूबी और बेहतरी होगी। दुनिया की कोई भी चीज़ जन्नत की किसी भी चीज़ के पासंग के बराबर नहीं है।

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम 2. बैहक़ी

जन्नत की ख़ुश्बू

जन्नत ख़ुशुबू से भरपूर है और उसकी ख़ुश्बू की हालत इस दुनिया में समझ में नहीं आ सकती है। वहां की ख़ुश्बू बेमिसाल है। उम्दा, बढ़िया और ख़ूब तेज़ है।

एक हदीस मे इर्शाद है कि जन्नत की ख़ुश्बू सौ साल की दूरी से सूंघी जाती है। दूसरी हदीस में है कि पांच सौ बरस की दूरी से महसूस होती है। दूसरी रिवायतों में इससे कम व बेश दूरी का भी ज़िक्र आया है।

हदीस के आ़लिमों ने लिखा है कि दूरी कम व बेश लोगों के रुत्बों व मंज़िलों के फ़र्क़ के एतबार से है।

सुब्हानल्लज़ी बियदि ही म ल कूतु कुल्लि शैइ।

क्या कोई जन्नत के लिए तैयारी करने वाला है?

जन्नत के हालात आपने पढ़ लिए। वहां की नेमतों की तफ़सीलात मालूम कर लीं। वहां रहने को दिल भी चाहता होगा। जन्नत में दख़िले के लिए बार-बार अल्लाह तआ़ला से आप ने दुआ़ भी की होगी और बिला शुब्हा हर मुसलमान के दिल में जन्नत का शौक़ और वहां ठहरने की जगह मिलने की तड़प होना ज़रूरी है। लेकिन तड़प और तलब और ज़ौक़ व शौक़ के साथ भले कामों की पूंजी का एहतमाम करना भी ज़रूरी है। जन्नत-जैसी चीज़ के तलब रखने वाला भले कामों से ख़ाली नहीं हो सकता। बेवक़ूफ़ हैं वे लोग जो जन्नत की तमन्ना करते हैं मगर गुनाहों में लत-पत हैं और भले कामों की पूंजी से ग़ाफ़िल है। क़ुरआन मजीद के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला ने जन्नत के बदले मोमिनों से उनकी जानों और मालों को ख़रीद फ़रमा लिया, इसलिए मोमिन बन्दों पर लाज़िम है कि शरीअत के तक़ाज़ों पर जान व माल लगाकर जन्नत के हक़दार बनें।

इन्नल्लाहश्तरा मिनल मुअ् मि नी न अन्फ़ुसहुम व अम्वा ल हुम बि अन्न न लहुमुल जन्नः।

नमाज़ के लिए अज़ान देने वाला पुकारे तो सोते रह जाएं या कारोबार पर नमाज़ को क़ुर्बान कर डालें। ज़कात का हुक्म लागू हो तो जान चुराने लगें। रमज़ान आये तो रोज़े खा जाएं। हज फ़र्ज़ हो तो माल की मुहब्बत में बे-हज किए मर जाएं। कारोबार में हराम व हलाल का ज़रा ख़्याल न करें, तेरा-मेरा रुपया मार लेने को कमाल जानें। क़ुरआन व हदीस पढ़ने-पढ़ाने को ऐब का काम समझें। बूढ़ों-कमज़ोरों पर ज़ुल्म करें, तंगदस्तों से बेगार लें, रिश्वतों के लेन-देन को फ़र्ज़ समझें, यतीमों का माल खा जाएं और मीरास शरीअ़त के मुताबिक़ तक़सीम न करें, नफ़्लों की अदाएगी से घबराएं और अल्लाह के ज़िक्र से बचें और फिर जन्नत के बुलंद दर्जों की तमन्ना करें, यह बहुत बड़ी नादानी है। जन्नत के बुलंद मर्तबों के लिए नफ़्स को क़ाबू में करना पड़ता है। शरीअ़त के हुक्मों पर अ़मल करने में जो नफ़्स को नागवारी होती है। उसे सहना पड़ता है। हदीस शरीफ़ में इर्शाद है कि

حُفَّتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ وَحُفَّتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ

हुफ़्फ़तिन्नारु बिश्शहवाति व हुफ़्फ़तिल जन्नतु बिल मकारिः।

'दोज़ख़ को ख़्वाहिशों से घेर दिया गया है और जन्नत को नागवारियों से घेर दिया गया है।'

मतलब यह है कि इबादतों में मेहनत करने और बराबर अल्लाह का फ़रमांबरदार रहने और हराम ख़्वाहिशों से परहेज़ करने में जो नफ़्स को नागवारी होती है, इसी नागवारी के पीछे जन्नत है। नागवारी को बर्दाश्त करना जन्नत में पहुंचने का ज़रिया है और इसके ख़िलाफ़ जो शख़्स नफ़्स की ख़्वाहिशों का पाबंद बन गया और हराम व हलाल के सवाल से बे-नियाज़ हो गया तो शहवतें और ख़्वाहिशें उसे दोज़ख़ में पहुंचा देंगी।

एक हदीस में इर्शाद है :

اَلْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَاجِزُ مَنْ اَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنّٰى عَلَى اللهِ (ترمذی)

अल कैयसु मन दा न नफ़्सहू व अ़मि ल लिमा बअ़्दल मौति वल आजिज़ु मन अत् ब अ़ नफ़्सहू हु व हा व तमन्ना अ़लल्लाह:।

—तिर्मिज़ी

'होशियार वह है जो अपने नफ़्स पर क़ाबू करे और मौत के बाद के लिए अ़मल करे और बेवक़ूफ़ वह है जो अपने नफ़्स को ख़्वाहिशों को पीछे लगाये रहे और बेअ़मल अल्लाह से उम्मीद रखे।'

जिसे दोज़ख़ से बचने और जन्नत में पहुंचने की फ़िक्र हो दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह नहीं देगा और जान व माल को जन्नत के मुक़ाबले में प्यारा न जानेगा, जितनी नेकियां करेगा, कम समझेगा। और बदलों व दर्जों के बढ़ाने के लिए फ़र्ज़ों व नफ़्लों का एहतमाम करेगा। हक़ीक़त में आख़िरत की फ़िक्र रही ही नहीं, जन्नत जैसी बेमिसाल और अनमोल चीज़ का यक़ीन होते हुए ताअ़त व इबादत में कोताही करना बड़ी नासमझी है। फ़रमाया रसूले ख़ुदा ﷺ ने कि—

مَارَأَيْتُ مِثْلَ النَّارِ نَامَ هَارِبُهَا وَلَامِثْلَ الْجَنَّةِ نَامَ طَالِبُهَا (ترمذی شریف)

मा रऐतु मिस्लन्नारि ना म हारिबुहा व ला मिस्लुल जन्नति ना म तालिबुहा। *—तिर्मिज़ी शरीफ़*

'दोज़ख़ जैसी चीज़ मैं ने नहीं देखी, जिसके (अ़ज़ाब व मुसीबत से) भागकर बचने वाला सो रहे, और (इसी तरह) जन्नत जैसी मज़े की चीज़ मैंने नहीं देखी जिस का तलबगार सोता रहे।'

मतलब यह है कि दोज़ख़ की मुसीबतों व तकलीफ़ों का यक़ीन करने पर दोज़ख़ ही के काम करता चला जाए और जन्नत की नेमतों का चाव रखने वाला ग़फ़लत की नींद सोया करे और नेक कामों की फ़िक्र न करे यह बड़े तअ़ज्जुब की बात है। यों दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो सुस्ती की वजह से तकलीफ़ें उठाते हैं और अपनी चाव की चीज़ों को हासिल कर लेने से महरूम हैं लेकिन दोज़ख़ से बचने का इरादा रखने वाला ग़फ़लत में पड़ा रहे

और जन्नत का तलब करने वाला सुस्ती में उम्र गुज़ार दे, यह बहुत ज़्यादा तअ़ज्जुब की चीज़ है।

दुनिया की ज़िंदगी एक सफ़र है जिसकी आख़िरी मंज़िल मोमिन बन्दों के लिए जन्नत है। मगर जन्नत के लिए मेहनत की ज़रूरत है क्योंकि जो चीज़ें जितनी उम्दा और बेहतरीन होती हैं, उनकी उतनी ही क़ीमत होती है। हदीस शरीफ़ में इर्शाद है :

مَنْ خَافَ اَدْلَجَ وَمَنْ اَدْلَجَ بَلَغَ الْمَنْزِلَ اَلَا اِنَّ سِلْعَةَ اللّٰهِ غَالِيَةٌ اَلَا اِنَّ سِلْعَةَ اللّٰهِ الْجَنَّةُ (ترمذی)

मन ख़ा फ़ अद् ल ज व मन ब ल ग़ल मंज़ि ल अला इन्न न सिल्अ़तल्लाहि ग़ालियतुन अला इन्न न सिल् अ़तल्लाहिल जन्नः।

—तिर्मिज़ी

'जिस शख़्स को (सफ़र की दूरी और कठिनाई से) ख़तरा होता है तो काफ़ी पहले से चल देता है और आराम व राहत को क़ुर्बान करके ठीक वक़्त पर, बल्कि वक़्त से पहले मंज़िल को जा लेते हैं। आख़िरत के मुसाफ़िर को इस से सबक़ लेना चाहिए और नफ़्स की फ़रमांबरदारी के बजाए शरीअ़त के हुक्मों को ख़ूब अच्छी तरह पाबंदी करके आख़िरत के सफ़र को ज़्यादा-से-ज़्यादा कामयाब बनाना चाहिए ताकि मंहगा सौदा (यानी जन्नत) हाथ से जाने न पाए। दुनिया के साज़ व सामान मकान व दुकान पर कितनी रक़में लगती हैं और कैसी-कैसी जवानियां फ़िना होती हैं और कैसे-कैसे तंदुरुस्त इंसान बर्बाद होते हैं। एक औरत से निकाह करने के लिए खड़ा किए जाते हैं और कितनी दौलतें लुटायी जाती हैं। जब इस बेक़ीमत दुनिया के लिए धन व दौलत, सेहत व जवानी बरबाद हो रही है और बड़ी-बड़ी कोशिशें की जा रही हैं, हालांकि वह फ़ानी है और उसे छोड़ कर चल देना है तो जन्नत जैसे 'दारुल मुक़ामः' के लिए और वहां की नेमतों और मज़े के पाने के लिए तो बहुत ज़्यादा जानी व माली क़ुर्बानी और हिम्मत व मेहनत की ज़रूरत है।

बह्रे ग़फ़लत यह तेरी हस्ती नहीं
देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं
रहगुज़र दुनिया है, यह बस्ती नहीं
जाए ऐश व इश्रत व मस्ती नहीं

—मजज़ूब

(यह तेरी ज़िंदगी ग़फ़लत के लिए नहीं है। समझ ले, जन्नत इतनी सस्ती नहीं है कि तु ग़फ़लत करे। यह दुनिया एक रास्ता है, इसे आबादी न समझो, यह आराम, सुख और मस्ती की जगह नहीं है।)

واخر دعونا عن الحمد لله رب العالمين

व आख़िरु दअ्वाना अ़निल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन

अब हम किताब को ख़त्म करते हैं और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करते हैं कि जिसकी मेहरबानी और दैन से यह किताब पूरी हुई। अल्लाह तआ़ला से दुआ है कि हमें और हमारे मां-बाप और हमारे पीर व उस्ताद और तमाम मुस्लिम मर्दों और औरतों को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे और इस किताब को क़ुबूल फ़रमाए। **(आमीन)**

وَمَا ذٰلِكَ عَلَيْهِ بِعَزِيْزٍ○ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○
وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

व मा ज़ालि क अ़लैहि बिअज़ीज़ सुब्हान रब्बि क रब्बिल इ़ज़्ज़ति अ़म्मा यसिफ़ूनव सलामुन अ़लल मुर्सलीन वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन